महाकविदण्डीविरचितम्

विश्रुतचरितम्

डॉ. विश्वनाथ शर्मा

महाकविदण्डीविरचितम्

विश्रुतचरितम्

(संस्कृत–हिन्दी व्याख्या सहित

सम्पादक एंव व्याख्याकार

डॉ.विश्वनाथ शर्मा

चौखम्बा ओरियन्टालिया
फोन : 23851617, 23858790

हंसा प्रकाशन,जयपुर

विश्रुतचरितम्

प्रकाशक	:	**हंसा प्रकाशन** 57 नाटाणी भवन,मिश्रराजाजी का रास्ता चांदपोल बाजार,जयपुर–302001
संस्करण	:	2012
मूल्य	:	50.00

सर्वाधिकार	:	प्रकाशकाधीन

टाईप सेटिंग	:	विशाल कम्प्यूटर, जयपुर
मुद्रक	:	शीतल आफसेट,जयपुर

प्रो. (डॉ.) प्रभाकर शास्त्री
सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

संस्कृत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर-302004

किञ्चिन्निवेदनम्

महाकवि आचार्य दण्डी संस्कृत गद्य साहित्य के प्रमुख एवं उल्लेखनीय उज्ज्वलतम रत्न हैं। इनकी अमरकृति 'दशकुमारचरितम्' संस्कृत जगत् में तो विख्यात है ही, अन्यान्य भारतीय एवं पाश्चात्य भाषाओं में भी अनूदित होकर लोकप्रिय हुई है। इसका आठवाँ उच्छ्वास 'विश्रुतचरित' भारतीय अनेक विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में रहा है तथा अभी भी निर्धारित है। टीकाकार डॉ. विश्वनाथ शर्मा ने उसका सुन्दर व छात्रोपयोगी संस्करण तैयार किया है, जो प्रकाशित हो रहा है।

यद्यपि डॉ. शर्मा ने अपने प्राक्कथन में संस्कृत गद्य साहित्य के विभिन्न बिन्दुओं पर पर्याप्त एवं सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत कर दिया है, फिर भी संस्कृत गद्य के सम्बन्ध में शास्त्रीय दृष्टि से बहुत कुछ मननीय है।

'पद्य' से भिन्न, वर्ण और मात्राओं के क्रम और संख्या के बन्धन से रहित, आवश्यकता एवं वक्ता की इच्छा के अनुरूप आवश्यक पदों के सन्निवेश को सामान्य भाषा में 'गद्य' कहा जाता है। आचार्य विश्वनाथ ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ–'साहित्य दर्पण' में गद्य का लक्षण प्रस्तुत किया है–'वृत्त-गन्धोज्झितं गद्यम्' आचार्य दण्डी ने इसको 'अपादः पदसन्तानो गद्यम्' के रूप में उपस्थित किया है। वस्तुतः मनोगत विचार प्रकाशन की जिस शैली को प्रतिदिन के व्यवहार में लाया जाता है, वही 'गद्य' है। इसे 'लौकिक गद्य' कहना अधिक समीचीन होगा। ऐसे भी साहित्यशास्त्रियों में अनलंकृत लौकिक दैनन्दिन व्यवहार में आने वाले गद्य का कोई विशेष विवेचन नहीं किया, परन्तु आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यिक गद्य के चार भेद प्रस्तुत किये हैं, जो **(1) मुक्तक, (2) वृत्तगन्धि, (3) उत्कलिका एवं (4) चूर्णक** के रूप में परिभाषित है। इनमें समासों से रहित गद्य रचना को 'मुक्तक', छन्दों की गन्ध अर्थात् पुट से युक्त, परन्तु छन्द नहीं, को 'वृत्तिगन्धि', दीर्घसमासों से युक्त गद्य को 'उत्कलिका' एवं अल्प समास युक्त गद्य को 'चूर्णक' कहा गया है। आचार्य दण्डी इनमें से प्रथम 'मुक्तक' भेद को नहीं स्वीकारते हैं। अस्तु! 'दशकुमारचरितम्' के अष्टम उच्छ्वास–'विश्रुतचरितम्' में प्रयुक्त गद्य का विश्लेषण कर इनका मूल्यांकन किया जा सकता है। यों संस्कृत साहित्य की प्रमुख गद्य रचनाएँ–वासवदत्ता, कादम्बरी, हर्षचरित,

शिवराजविजय, चन्द्रमहीपति, कुमुदिनीचन्द्र आदि उक्त गद्य भेदों की सफल रचनाएँ प्रमाणित हैं। उक्त गद्य भेदों को लक्ष्य कर किसी रचना विशेष का निर्माण नहीं हुआ है, अपितु सभी गद्य रचनाओं में वैदर्भी रीति या गौड़ी रीति अथवा पाञ्चाली रीति का समन्वय प्राप्त होता है।

'काव्यादर्श' नामक अपनी साहित्यशास्त्रीय रचना में आचार्य दण्डी ने गद्य काव्य के सम्बन्ध में जो विचार प्रस्तुत किये हैं, वस्तुतः अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। लगता है, आचार्य दण्डी के समय गद्यरचनाओं का बाहुल्य रहा होगा, जिनके आधार पर दण्डी ने निष्कर्ष निकाला होगा। यद्यपि स्वयं दण्डी भी एक कुशल गद्यलेखक माने गए हैं, तथापि उनकी रचना भी इन लक्षणों से सर्वथायुक्त नहीं कही जा सकती। आचार्य दण्डी का यह कथन–'ओजः समासभूयस्त्वं एतद् गद्यस्य जीवितम्' साहित्यिक गद्य की ओर लक्ष्य करता है।

आचार्य दण्डी की रचनाओं के गूढ़ विश्लेषण से हम निःसन्देह कह सकते हैं कि वे बहुश्रुत थे। वे अपने युग की उन सभी विधाओं में प्रवीण थे, जिन्हें उन्होंने राजकुमारों की शिक्षाओं में गिनायी है। वे राजनीति, चार्क्यकर्म, द्यूत, परदारगमन, हत्या, छलकपट, मनोविज्ञान, नृत्त, संगीत आदि कलाओं के साथ विभिन्न धर्मों के ज्ञान और कर्मकाण्ड में प्रवीण थे। उन्होंने संपूर्ण भारत की यात्रायें कर विभिन्न प्रान्तों की संस्कृति व सभ्यता का सूक्ष्मेक्षिका से निरीक्षण कर उसे हृदयंगम किया था। इसीलिए वे उस अनुभव को अपनी सशक्त लेखनी से अभिव्यक्त करने में सफल रहे।

'दशकुमारचरितम्' के विश्लेषण से यह प्रमाणित होता है कि समीक्षकों ने कवियों की गणना में आचार्य दण्डी को श्रेष्ठ कवि स्वीकारा है। इसीलिए तो 'कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः।' वाक्य विश्रुत है। इनके व्यक्तित्व में कवित्व गुण भी रहे हैं तथा साहित्यशास्त्री की प्रतिभा भी, इसीलिए वे महाकवि तथा आचार्य दोनों पदों के अधिकारी माने जाते हैं।

डॉ. प्रभाकर शास्त्री

प्राक्कथन

संस्कृत-गद्य-साहित्य

उत्पत्ति एवं विकास

संस्कृत साहित्य का प्रचीनतम रूप यद्यपि छन्दोबद्ध ही प्राप्त होता है फिर भी ऐसा मानने में पूरी कठिनाई है कि हमारे ऋषियों ने ऋग्वेद काल में भी अपने विचारों का आदान-प्रदान पद्य में ही किया होगा। क्योंकि पद्य का सम्बन्ध भावना से है तथा गद्य का विचार से। गद्य की शैली विचार की वाहिका है और बौद्धिक ज्ञान के क्षेत्र को वाणी का मूर्त रूप देने में ही इसका प्रयोग अधिकतर पाया जाता है। मानव की विचार सरणि का रूप गद्यात्मक ही होता है, पद्यात्मक नहीं। कोई बिरला ही व्यक्ति पद्य में सोचता होगा। अत: ऋग्वेद काल में भी बोलचाल की भाषा गद्य ही रही होगी। इतना ही नहीं **पाश्चात्य विद्वान् ओल्डेनबर्ग** का तो कहना है कि पहले ऋग्वेद के भी अन्तर्गत गद्य था, परन्तु कालान्तर में कण्ठस्थ करने की सुविधा के कारण लोगों ने केवल ऋग्वैदिक पद्य का ही संचयन किया। फलस्वरूप गद्य भाग आगे चलकर विस्मृत हो गया।

उक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संस्कृत में गद्य का प्रयोग वैदिक काल से ही होता आया है। ऋग्वेद संहिता संस्कृत-गद्य एवं पद्य दोनों का प्राचीनतम आधार है। कृष्ण यजुर्वेद की कृष्णता गद्य की बहुलता के कारण ही विख्यात है। अथर्ववेद का षष्ठांश गद्यात्मक है। इसके पश्चात् ब्राह्मण ग्रन्थों तथा आरण्यक ग्रन्थों में भी पद्य का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। प्राचीन उपनिषदों में भी गद्य का प्रयोग दृष्टिगत होता है। वैदिक साहित्य में गद्य का प्रयोग आख्यानों में भी किया गया है। इस प्रकार सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में पद्य के साथ गद्य का प्रयोग प्राप्त होता है।

ऐतिहासिक गवेषणाओं से यह स्पष्ट प्रमाणित हो गया है कि वैदिक साहित्य में संस्कृत-गद्य के प्रारम्भिक रूप के दर्शन होते हैं। **आचार्य बलदेव उपाध्याय** का निम्न कथन यहाँ पर उल्लेखनीय है—

"वैदिक काल से प्रारम्भ कर मध्यकाल तक गद्य के विकसित होने का इतिहास बड़ा ही मनोरम है। गद्य के दो प्रकार के रूप मिलते हैं—वैदिक काल का सीधा-सादा बोलचाल का गद्य तथा लौकिक संस्कृत का प्रौढ समास बहुत गाढ़बन्धन वाला गद्य, दोनों प्रकार के गद्यों में अपना विशिष्ट सौन्दर्य तथा आकर्षण है।"

गद्य का विकास : विविध रूप

डॉ. वचनदेव कुमार ने अपने संस्कृत साहित्य के नवीन इतिहास में विकासक्रम की दृष्टि से संस्कृत-गद्य को चार युग्मों में विभाजित किया है—

(क) वैदिक गद्य (ख) पौराणिक गद्य

(ग) शास्त्रीय गद्य तथा (घ) साहित्यिक गद्य

(1) वैदिक गद्य—वैदिक गद्य सीधा-सादा बोलचाल का गद्य था जिसमें न लम्बे-लम्बे समासों का और न अलङ्कारों का ही प्रयोगाधिक्य था। वाक्य छोटे-छोटे सरल एवं सुबोध होते थे। 'ह', 'वै', 'उ' आदि अव्यय वाक्यालङ्कार के रूप में प्रयोग किये जाते थे, जिनके प्रयोग से वाक्य में रोचकता तथा सुन्दरता का समावेश हो जाता था। इस गद्य में रूपक एवं उपमा अलङ्कार का स्वाभाविक प्रयोग भी किया गया है। उदाहरणार्थ—ऐतरेय ब्राह्मण के हरिश्चन्द्रोपाख्यान का निम्न गद्यांश प्रस्तुत है—

''हरिश्चन्द्रो है वैद्यस ऐक्ष्वाको राजाऽपुत्र आस। तस्य ह शतं जाया बभूवुः। तासु पुत्रं न लेभे। तस्य है पर्वतनारदौ गृह ऊषतुः। स ह नारदं पप्रच्छ।'' (ऐतरेय ब्राह्मण अ. 30 खण्ड 1)

(2) पौराणिक गद्य—पुराणों में वैदिक एवं लौकिक संस्कृत के गद्य का मिश्रित रूप दिखाई देता है। पौराणिक गद्य वैदिक गद्य की तुलना में अधिक आलङ्कारिक व प्रासादिक है। श्रीमद्भागवत व विष्णुपुराण के गद्य में निस्सन्देह साहित्यिक गद्य का समग्र सौन्दर्य विद्यमान है। विष्णुपुराण का निम्नलिखित गद्यांश उदाहरणार्थ अवलोकनीय है—

''यथैव व्योम्नि वह्निपिण्डोपमं त्वामहमपश्यं तथैवाद्याग्रतो गतमप्यत्र भगवता किञ्चिन्न प्रसादीकृतं विशेषमुपलक्ष्यामीत्युक्ते भगवता सूर्येण निजकण्ठान्मुच्य स्यमन्तकं नाम महामणिवरमवतार्य एकान्ते न्यस्तम्।'' (विष्णुपुराण 4/13/14)

(3) शास्त्रीय गद्य—अलङ्कार शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों में भी गद्य का प्रयोग हुआ है। इस गद्य में लेखक का ध्यान अपने प्रतिपाद्य के प्रकटीकरण पर है, भाषा के अलङ्करण पर नहीं। इस प्रकार के गद्य में भाषा का लालित्य कम तथा भाषा गाम्भीर्य अधिक पाया जाता है। शास्त्रीय गद्य का रूप व्याकरणशास्त्र, दर्शनशास्त्र, काव्यशास्त्र तथा कामशास्त्र आदि ग्रन्थों में दिखाई देता है। शास्त्रीय गद्य का प्रथम उदाहरण पतञ्जलि के महाभाष्य में प्राप्त होता है जिसकी भाषा बोलचाल की सरल भाषा है तथा शैली कथोपकथनात्मक है।

(4) साहित्यिक गद्य—गद्य का चतुर्थ भेद साहित्यिक गद्य के रूप में प्रसिद्ध है। इसके उदाहरण प्राचीन शिलालेखों एवं नाटकों में प्रयुक्त संवादों में उपलब्ध होते हैं। इनमें भी केवल तथ्य को व्यक्त किया गया है, सामान्य रूप में बातें कही गई हैं। इनमें वह सुषमा एवं काव्यत्व दृष्टिगत नहीं होता जो स्वतन्त्र रूप से विकसित गद्य में है। उदाहरणार्थ—भास विरचित 'मध्यम व्यायोग' रूपक का निम्नलिखित गद्यांश द्रष्टव्य है—

''हन्त दृढं विज्ञातुम्। एष खलु पाण्डवमध्यमस्यात्मजो हिडिम्बारणि संभृतो राक्षसाग्निकृतवैरं ब्राह्मणजनं वित्रासयति। भो कष्टम्।''

परन्तु वर्तमान समय में जिसे गद्य-साहित्य कहा जाता है, उसका प्रथम प्रौढ रूप सुबन्धु विरचित 'वासवदत्ता' ग्रन्थ में प्राप्त होता है। इसके बाद दण्डी, बाणभट्ट,

अम्बिकादत्त व्यास आदि गद्यकारों ने अपनी रचनाओं के मध्यम से उसे उच्च शिखर पर पहुँचा दिया।

साहित्य गद्य — दो रूप

साहित्यिक गद्य के मुख्य रूप से दो भेद किये गये हैं—**कथा एवं आख्यायिका**। इन दोनों में आचार्य दण्डी के मतानुसार निम्नलिखित अन्तर होता है—

1. आख्यायिका का आधार ऐतिहासिक इतिवृत्त होता है, किन्तु कथा कवि कल्पित होती है।
2. आख्यायिका का नायक स्वयं वक्ता होता है। वह एक प्रकार से आत्मकथा होती है। कथा में वक्ता स्वयं नायक होता है किन्तु इसमें यह कार्य कोई अन्य व्यक्ति भी कर सकता है।
3. आख्यायिका का विभाजन उच्छ्वासों में होता है, जिसमें वक्त्र तथा अपरवक्त्र छन्द के पद्यों का समावेश रहता है। कथा में ऐसा नहीं होता है।
4. कथा में कन्याहरण, संग्राम, विप्रलम्भ, सूर्योदय, चन्द्रोदय, संध्या, रात्रि आदि का विस्तृत वर्णन होता है। वह वर्णनात्मक होती है, परन्तु आख्यायिका में इन वर्णनों को महत्त्व नहीं दिया जाता है।
5. कथा में कुछ विशिष्ट सांकेतिक शब्दों का प्रयोग होता है जबकि आख्यायिका में ऐसे शब्द प्रयुक्त नहीं होते। आख्यायिका प्राय: भावात्मक शैली में लिखी जाती है।

कथा में एवं आख्यायिका में न केवल दण्डी अपितु भामह एवं रुद्रट आदि आचार्यों ने भी भेद स्थापित किया है परन्तु संस्कृत-गद्य-साहित्य का अध्ययन करने से यह विदित होता है कि इस प्रकार के भेदों का दृढ़ता से पालन नहीं किया गया है। दण्डी स्वयं ही कहते हैं कि कथा-आख्यायिका में कोई महत्त्व का भेद नहीं। इतना समझ लेना पर्याप्त होगा कि ये गद्य काव्य के दो नाम मात्र हैं।

गद्य-साहित्य का समृद्धि युग

गद्यकार दण्डी, सुबन्धु और बाणभट्ट के युग को गद्य काव्य का समृद्धि युग माना जा सकता है। इन तीनों में कौन किसका पूर्ववर्ती अथवा परवर्ती था—इस विषय में विद्वानों में अद्यावधि मतभेद हैं। कतिपय विद्वान् दण्डी को प्रथम गद्यकार मानते हैं तो अन्य विद्वान् सुबन्धु को। आचार्य बलदेव उपाध्याय, डॉ. भोलाशंकर व्यास एवं डॉ. वचनदेव कुमार आदि विद्वानों ने सुबन्धु को गद्य काव्य का सर्वप्रथम लेखक माना है जबकि डॉ. बाबूराम त्रिपाठी एवं पाण्डेय व्यास ने दण्डी को प्रथम लेखक माना है।

महाकवि दण्डी

जीवन-परिचय—महान् संस्कृत-गद्य लेखक दण्डी के जीवनचरित के सम्बन्ध में अद्यावधि पूर्ण जानकारी नहीं प्राप्त हुई है। कुछ ही समय पूर्व 'अवन्तिसुन्दरीकथा' तथा

'अवन्तिसुन्दरी कथासार' नामक दो ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं, प्रथम के लेखक दण्डी ही बतलाये जाते हैं। इस 'अवन्तिसुन्दरी' नामक ग्रन्थ के प्रारम्भ में दण्डी का जीवन चरित्र प्राप्त होता है। उसके मतानुसार इनके पिता का नाम वीरदत्त और माता का नाम गौरी है। इनके माता-पिता का देहावसान इनकी बाल्यावस्था में ही हो गया। ये कुछ दिनों तक अनाथ के रूप में इधर-उधर भटकते रहे। अन्त में इन्हें पल्लव नरेश की सभा में स्थान मिला। वहीं इन्होंने अपने ग्रन्थों की रचना की।

महाकवि दण्डी का समय—(स्थिति-काल) महाकवि दण्डी का स्थितिकाल अधिकांश आलोचकों तथा विद्वानों द्वारा सप्तम शताब्दी स्वीकार किया गया है; किन्तु फिर भी इस बारे में विद्वानों में मतैक्य नहीं है।

सिंघली भाषा के अलङ्कार-ग्रन्थ 'सिय-बस-लकर' (स्वभाषालङ्कार) की रचना महाकवि दण्डी के 'काव्यादर्श' के आधार पर की गई है।[1] इस ग्रन्थ के रचयिता राजसेन प्रथम का समय 826-866 ई. था। इसी भाँति कन्नड़ भाषा के अलङ्कार ग्रन्थ 'कविराजमार्ग' में भी 'काव्यादर्श' की छाप पर्याप्त रूप से दृष्टिगोचर होती है। इस ग्रन्थ के लेखक अमोघवर्ष का समय 814 अथवा 815 ई. के लगभग माना गया है, अत: दण्डी के 'काव्यादर्श' की रचना अष्टम शताब्दी के अन्त तक अवश्य हो चुकी होगी। इस आधार पर दण्डी के काल की अन्तिम सीमा अष्टम शताब्दी का अन्त स्वीकार किया गया है।

अब पूर्व की सीमा के बारे में भी विचार करना है। 'काव्यादर्श' के कुछ पद्यों में कालिदास का प्रभाव स्पष्ट रूप से उपलब्ध होता है,[2] अत: दण्डी का कालिदास के पश्चात् होना निश्चित है। इसके अतिरिक्त राजा प्रवरसेन विरचित 'सेतुबन्ध' नामक प्राकृत काव्य का उल्लेख भी 'काव्यादर्श' में उपलब्ध होता है। राजा प्रवरसेन का पंचम शताब्दी में होना निश्चित है, अत: दण्डी का स्थिति काल 500-800 ई. के मध्य ही स्वीकार किया जाना अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि दण्डी महाकवि बाण के पश्चात् हुए अथवा पहले? इस बारे में भी विद्वानों में भी मतभेद हैं। याकोबी तथा पीटरसन की दृष्टि में 'कादम्बरी' में वर्णित शुकनासोपदेश की छाया 'काव्यादर्श' के एक पद्य[3] में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। इसके अतिरिक्त दण्डी ने महाकवि बाण और मयूरी की प्रशंसा भी की है। तीसरी बात

---

1 डॉक्टर बारनेट — जर्नल ऑफ दी रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, 1905, पृ. 841

2 मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्मलक्ष्मीं तनोति—कालिदास।

लक्ष्म लक्ष्मीं तनोतीति प्रतीति सुभगं वच—दण्डी

3 केवलं च निसर्गत एवाभानुभेद्यमरत्नालोकोच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेयमतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्।—कादम्बरी

अरत्नलोकसंहार्यमवार्य सूर्यरश्मिभि:।

दृष्टिरोधकरं यूनां यौवनप्रभवं तम:।। काव्यादर्श 2/197 ।।

यह है कि अवन्तिसुन्दरीकथा में कादम्बरी का वर्णन बाण की प्रसिद्ध कथा से मिलता-जुलता है, अत: उक्त स्थिति में महाकवि दण्डी का बाण के पश्चात् सप्तम शताब्दी के उत्तरार्द्ध में होना निश्चित हो जाता है। डॉ. बेलवेलकर[4] ने भी दण्डी का यही समय स्वीकार किया है।

इसके विरुद्ध दण्डी का काल सप्तम शताब्दी का पूर्वार्द्ध मानने वाले विद्वानों का कथन यह है कि ''शैली की दृष्टि से दण्डी बाण के पूर्ववर्ती ज्ञात होते हैं।'' यदि दण्डी बाण के पश्चात् हुए होते तो दण्डी के ग्रन्थों की लेखन शैली पर बाण का प्रभाव अवश्य पड़ा होता, किन्तु 'दशकुमारचरितम्' की सरल तथा प्रासादिक शैली पर बाणभट्ट की प्रौढ तथा आलङ्कारिक शैली का कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है। इसके अतिरिक्त 'दशकुमारचरितम्' का भौगोलिक[5] और राजनीतिक चित्रण हर्षवर्धन के पूर्व के भारत की ओर ही संकेत करता है, अत: इस आधार पर ही दण्डी का स्थितिकाल सप्तम शताब्दी का (प्रारम्भिक) पूर्वार्द्ध ही मानना उचित प्रतीत होता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर महाकवि दण्डी का सप्तम शताब्दी में होना तो सिद्ध हो जाता है। अब चाहे इसे शताब्दी का पूर्वार्द्ध काल माना जाये अथवा उत्तरार्द्ध।

यदि 'काव्यादर्श' में उल्लिखित राजवर्मा (रातवर्मा) को नरसिंह वर्मा द्वितीय (जिसका उपनाम राजवर्मा था) मान लिया जाये तो दण्डी के काल के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का सन्देह किये जाने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता है। प्रो. आर. नरसिंहाचार्य तथा डॉ. बेलवेलकर नेभी इन दोनों की एकता स्वीकार कर दण्डी का काल सप्तम शताब्दी का उत्तरार्द्ध ही सिद्ध कियाहै। शैवधर्मोपासक पल्लवराज 'नरसिंहवर्मा' का समय 690-715 ई. माना गया है तथा दण्डी इनके सभाकवि थे, अत: इनका समय सप्तम शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाना स्वयं ही सिद्ध हो जाता है।

कृतित्व—दण्डी विरचित तीनों कृतियाँ तीनों लोकों में प्रसिद्ध हैं—ऐसा राजशेखर ने शार्ङ्गधर पद्धति नामक ग्रन्थ में उल्लेख किया है—

''त्रयोऽग्नयस्त्रयो देवास्त्रयो वेदास्त्रयो गुणाः।
त्रयोदण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः।।''

ये तीन रचनायें हैं—(1) काव्यादर्श, (2) अवन्तिसुन्दरीकथा तथा (3) दशकुमारचरित। इनमें से 'काव्यादर्श' अलङ्कार शास्त्रीय ग्रन्थ है तो 'दशकुमारचरित' एक उत्कृष्ट गद्य काव्य है। 1924 ई. में एम.आर. कवि महोदय द्वारा प्रकाशित 'अवन्तिसुन्दरी कथा' एक आख्यायिका है। प्रारम्भ में तृतीय कृति को लेकर विद्वानों में मतैक्य नहीं था, परन्तु अब अधिकांश विद्वानों ने इसी गद्य काव्य को दण्डी की तृतीय कृति के रूप में स्वीकार कर लिया है।

---

4. नोट्स ऑन काव्यादर्श, पृ. 176-177

5. कोलिन्स — दी ज्योग्राफिकल डेटा ऑफ दी रघुवंश एण्ड दशकुमारचरितम्, 1907, पृ. 46

दशकुमारचरितम्—यह दण्डी का प्रसिद्ध गद्य काव्य है। ग्रन्थ सरलता, सरसता तथा कौतूहलपूर्णता के लिए विशेष रूप से विख्यात् है। यह तो इसके नाम से ही प्रकट है कि इसमें दशकुमारों के चरित का संकलन किया गया है। इसका वर्तमान उपलब्ध स्वरूप तीन भागों में विभक्त है—(1) पूर्वपीठिका—इसके अन्तर्गत पाँच उच्छ्वास हैं, (2) उत्तरपीठिका, (3) इन दोनों के मध्य पुस्तक का मूल भाग है, जिसमें आठ उच्छ्वासों में आठ कुमारों की कथाएँ वर्णित हैं। यही मध्य भाग 'दण्डी' की वास्तविक रचना माना जाता है। वैसे यह तो निर्विवाद रूप से 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के आधार पर सिद्ध किया जा चुका है कि दोनों पीठिकाएँ भी दण्डी द्वारा अवश्य ही लिखी गयी होंगी, किन्तु किसी कारणवश आदि तथा अन्त की दोनों पीठिकाएँ नष्ट हो गयीं, किन्तु बाद में उन्हीं के किसी भक्त द्वारा पूर्व तथा उत्तरपीठिकाएँ लिखकर उस पुस्तक में जोड़ दी गयीं। श्री एम.आर. काले महोदय के मतानुसार दण्डी की इस मूलकृति का तेलगु अनुवाद तेरहवीं ईसवी शती में किया गया था, अत: उनका अनुमान है कि किसी योग्य लेखक ने बाद में इस तेलगू अनुवाद के आधार पर अप्राप्य भाग को संस्कृत में अनूदित कर दिया होगा।

'दशकुमारचरितम्' में दस राजकुमारों की कथाएँ अत्यन्त मनोरंजक शैली में वर्णित हैं। इसमें दसों राजकुमारों के पर्यटनों, अनुभवों तथा पराक्रमों का अत्यन्त सजीव वर्णन दण्डी द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इसमें छल-कपट, मार-काट, चोरी-जारी से ओत-प्रोत वर्णन हैं। व्यंग्य तथा विनोद के साथ इसमें तत्कालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया गया है। साहसी राजकुमार किस भाँति उचित, अनुचित का विचार छोड़कर अपने-अपने कार्यों की सिद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील तथा सजग दिखलायी पड़ते हैं, इसका वर्णन एक विचित्र व्यंग्यात्मक शैली में उपस्थित किया गया है। अभिमानी, कपटी, धूर्त, कुट्टनी, व्यभिचारिणी स्त्रियों तथा हृदयहीन वेश्याओं, तपस्वियों तथा ब्राह्मणों आदि सभी का इस ग्रन्थ में भण्डाफोड़ किया गया है।

दण्डी का चरित्र-चित्रण अत्यन्त सजीव तथा विशद् है। उनके सभी पात्र वास्तविक से प्रतीत होते हैं। समाज के उच्च तथा निम्न वर्गों का वे जीता-जागता चित्र उपस्थित कर देते हैं। उनके 'दशकुमारचरितम्' से तत्कालीन रीति-रिवाजों का भी परिचय प्राप्त होता है। उनका रचना-कौशल भी देखने योग्य ही है। कथानक की रोचकता में वृद्धि करने के लिए दण्डी यत्र-तत्र शिष्ट हास्य, मधुर व्यंग्य तथा गम्भीर वर्णन का आश्रय ले लेते हैं। यदि कहीं पर वर्णनों का विस्तार मिलता है तो कहीं-कहीं लघु कथाएँ भी उपलब्ध होती हैं। कथाओं का क्रम प्रशंसा के योग्य है। मुख्य कथा के प्रवाह में अवान्तर कथाओं के आ जाने से किसी प्रकार गति-अवरोध उत्पन्न नहीं होता है। व्याकरण की दृष्टि से भी 'दशकुमारचरितम्' पूर्णतया निर्दोष है। इस भाँति सजीव चरित्र-चित्रण, स्वाभाविक शैली, शिष्ट हास, रसानुकूल शब्द विन्यास, बुद्धिचातुर्य, यथार्थ एवं आदर्श का सुमधुर सामञ्जस्य इत्यादि अनेक विशेषताओं से सुसज्जित 'दशकुमारचरितम्' संस्कृत-गद्य-साहित्य में अपना एक अनूठा तथा विशिष्ट स्थान रखता है।

दण्डी की शैली—दण्डी की रचनाएँ प्रमुख रूप से वैदर्भी शैली में लिखी गई हैं। इसलिए उनका पद लालित्य प्रसिद्ध है—

दण्डिनः पद लालित्यम्।

उनकी यह विशेषता उनके साहित्यिक गौरव की अभिवृद्धि करती है। इनकी गद्य शैली सरस, सुबोध एवं प्रवाहमयी है। ये शब्द एवं अर्थ पर पूर्ण अधिकार रखते हैं। उपयुक्त शब्दों की मीनाकारी के द्वारा ये ऐसी आकर्षक लघु वाक्य माला तैयार करते हैं जो अपनी अभिव्यक्ति, चारुता एवं सरसता से अप्रतिम हैं। ये पद योजना द्वारा वर्ण्य-विषय के एक-एक शब्द चित्र को जीवन्त बना देते हैं। दण्डी की कृतियों में भाषा की जटिलता, अलङ्कारों का अनावश्यक प्रयोग, वर्णनों में निरर्थक विस्तार का सर्वथा अभाव है। किन्तु वर्णनों में प्रतिभागत चमत्कार भी भाषा पर अधिकार प्रदर्शित करने में सर्वथा सचेष्ट है। इनका गद्य न तो श्लेष से बोझिल है और न सामासिक पदों से दुर्बोध ही।

दण्डी विरचित 'दशकुमारचरित' सभी रसों से पूर्ण एक अद्वितीय उपन्यास है। इसकी विशेषता व्यंग्यात्मकता एवं विनोदपूर्ण शैली है। कवि ने पूर्णतया यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए तत्कालीन समाज और संस्कृति का उज्ज्वल चित्र प्रस्तुत किया है। इसमें दम्भी तपस्वियों, कपटी ब्राह्मणों, धूर्त कुट्टिनियों एवं हृदयहीन दुश्चरित्र स्त्रियाँ का जहाँ एक ओर कवि ने व्यंग्यात्मक चित्रण किया है वहाँ कुलीन, पतिव्रता स्त्रियों के अद्भुत सौन्दर्य एवं अलौकिक प्रेम एवं त्याग का भी सुन्दर चित्रण किया है।

''दण्डी की शैली न लम्बे-लम्बे समास हैं, न लम्बे लम्बे गाढ़ बन्धात्मक वाक्य ही, अलङ्कारों का सहज, सुन्दर, स्वाभाविक प्रयोग है, पर सुबन्धु की भाँति उनकी भाषा कहीं भी अलङ्कारों के अत्यधिक आश्लेष से बोझिल नहीं है, उसमें प्रसाद गुण की प्रधानता है, न कहीं अप्रसिद्ध पौराणिक संकेत हैं और न कहीं अप्रसिद्ध पारिभाषिक पदावली का पाण्डित्यपूर्ण प्रदर्शन ही। भाषा आद्योपांत कोमलकांत, पदावली विशिष्ट, ललित एवं मधुर है, सर्वत्र प्रवाह एवं सरलता है।''

'दशकुमारचरित' गद्यकार दण्डी की शैलीगत विशेषताओं को स्पष्ट प्रदर्शित करने वाला दर्पण है। राजा राजहंस की रानी वसुमती का परिचय देखिए—''**तस्य सुमती नाम सुमती लीलावती कुलशेखर मणि रमणी बभूव।**'' यहाँ दण्डी शब्द विन्यास मणि की भाँति ही सुगमता से अर्थ को अक्षिगोलक से मानस-प्रदेश तक पहुँचा देता है। राजा राजहंस के वैशिष्ट्य वर्णन में विशिष्ट सुषमामयी भाषा शैली का प्रयोग है, यथा—''**अनघरतयागदक्षिणारक्षितशिष्टविशिष्टविद्या संभारभारभूसुर-निकरा...राजहंसो नामधनदर्पकन्दर्प सौन्दर्यहृद्यनिरवद्यरूपो भूपो बभूव।**'' इन स्थलों पर दण्डी ने अनुप्रास, यमक तथा शब्दों की पुनरावृत्ति के द्वारा पद लालित्य की योजना की है। कुछ स्थलों पर अलङ्कार प्रयोग के माध्यम से ही गद्यकार ने पद लालित्य लाने में सफलता अर्जित की है। यथा—''**कुमारा माराभिमारा माद्य परुषारूषा भस्मीकृतारयोरयो-पाहसति समीरणरणाभियायनेन यानेनाभ्युदयाशंस राजानमकार्षुः।**''

डॉ. त्रिपाठी के मतानुसार—"दण्डी में आचार्य बुद्धि और कवि हृदय दोनों का मणिकाञ्चन संयोग है। अतएव कल्पना प्रसूत एवं अतिशयोक्तिपूर्ण होते हुए भी उनके वर्णन स्वाभाविक हैं और उनमें हृदयग्राहिता है। कवि का भाषा पर अगाध अधिकार है। उनके प्रकृति वर्णन बड़े ही रमणीय एवं प्रभावोत्पादक हैं, उनका वसन्तोत्सव दृश्य वर्णन बड़ा ही प्रभावकारी तथा कवि के प्रकृति निरीक्षण की क्षमता का परिचायक है। इन वर्णनों में विविधता भी है जिससे कि पाठक का मनोरंजन होता रहे। एक समान वर्णन पढ़ते-पढ़ते वह ऊब न जाये। अतएव जहाँ उनके शृंगार वर्णनों में कोमलता और मधुरता है, वहाँ उनके वीर-रस के वर्णनों में ओजस्विता भी है। मगधराज एवं मालवराज के युद्ध वर्णन इसके निदर्शन हैं।"

दण्डी की मुख्य विशेषता उनके चरित्र-चित्रण में है। उन्होंने न केवल अपने रंगमंच के प्रमुख पात्रों का ही बड़ी तन्मयता से सजीव एवं यथार्थ चित्रण किया है, अपितु उन्होंने अपने गोण पात्रों को भी उसी रूप में चित्रित किया है, मरीचि व सुपालित, काम-मंजर, शृंगालिका आदि पात्रों का वर्णन इसका प्रमाण है। प्रत्येक पात्र अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व रखता है और अपने वर्ग का यथार्थ रूप में प्रतिनिधित्व करता है। एक साधारण सी कथा में काव्य के उत्कृष्ट नाद सौन्दर्यमय शब्द विन्यास समन्वित शैली का प्रयोग कर उसे सभी दृष्टियों से अति मनोरम बना देने की कला में दण्डी सिद्धहस्त हैं और अपने पदलालित्य तथा वैदर्भी रीति के प्रयोग के लिए तो वे सर्वत्र विश्रुत हैं—**दण्डिनः पद लालित्यम्।**

उक्त सभी गुणों के कारण प्राचीन आलोचक लोग दण्डी को वाल्मीकि तथा व्यास के अनन्तर होने वाला तत्समक्ष तृतीय कवि मानते हैं—

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत्।
कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्वभि दण्डिनि।।

विश्रुतचरितः संक्षिप्त कथा—दण्डी विरचित 'दशकुमारचिरतम्' के अष्टमोच्छ्वास में विश्रुत का चरित्र वर्णित है। अतः इसे पृथक् से 'विश्रुत-चरित' भी कहा जाता है। इस अष्टमोच्छ्वास की संक्षिप्त कथा इस प्रकार है—

विश्रुत ने कहा—"महाराज! मैं विन्ध्याटवी में भ्रमण कर रहा था। वहाँ लगभग आठ वर्ष के एक बालक को देखा। उसने मुझसे सहायता माँगी, क्योंकि उसका रक्षक एक वृद्ध पुरुष उसी के लिए जल निकालने के समय समीप ही के एक कुएँ में गिर पड़ा था। मैंने लताओं की सहायता से उस वृद्धि को बाहर निकाला तथा पत्थर मारकर एक बडहल के वृक्ष से पाँच-छह फल तोड़े। उनसे दोनों की भूख मिटायी। फिर वृद्ध से बालक का परिचय पूछा।"

वृद्ध ने कहा—'महाशय! विदर्भ देश में पुण्यवर्मा नामक एक सर्वगुणसम्पन्न राजा था। उसके मरने के उपरान्त उसका पुत्र अनन्तवर्मा राजगद्दी पर बैठा। वह कला में प्रवीण होने पर भी राजनीति में कुशल नहीं था। दिन-रात विलासिता में निमग्न रहता था। इसलिए

उसके मुख्यमंत्री वसुरक्षित ने उसे एक दिन राजनीति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए एकान्त में बहुत उपदेश दिया। उसने मन्त्री की बात मान ली, किन्तु अपने अन्तःपुर में रानियों के समक्ष मन्त्री के उपदेश की चर्चा कर दी। वहाँ विहार भद्र नामक उसके एक महास्वार्थी सेवक ने छिपे तौर पर उसकी सब बातें सुन लीं। उसने आकर अनन्तवर्मा के सामने बड़ी नम्रता से राजनीति का खण्डन करते हुए, राजा को यथेच्छ भोगपरायण होने की सलाह की। कामी राजा पर उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों का असर पड़ गया। फिर क्या था, अनन्तवर्मा मन्त्री की अवहेलना करके भोगासक्त हो गया।

अनन्तर अश्मक देश के अधिपति वसन्तभानु ने अपने मन्त्री के पुत्र चन्द्रपालित को बहुत से गुप्तचरों तथा सुन्दरी स्त्रियों के साथ अनन्तवर्मा के पास भेज दिया। चन्द्रपालित ने ऐसा माया-जाल फैलाया कि अनन्तवर्मा बुरी तरह उसके चक्कर में फँसकर महादुर्व्यसनी हो गया। उसके देखा-देखी नौकर-चाकर, प्रमुख अधिकारी, सामन्त आदि सब के सब कुमार्ग पर चलने लगे। अवसर पाकर अश्मकपति ने अनन्तवर्मा पर आक्रमण कर दिया, जिसमें वह मारा गया।

इस बीच वसुरक्षित कुछ पुरान सेवकों के साथ अनन्तवर्मा के पुत्र इस बालक को और उसकी बड़ी बहन मञ्जुवादिनी को इनकी माता वसुन्धरा समेत लेकर भाग निकले। दाहज्वर होने के कारण वसुरक्षित मार्ग ही में मर गये। तब सेवकों ने महारानी वसुन्धरा को पुत्र-पुत्री सहित अनन्तवर्मा के सौतेले भाई मित्रवर्मा के पास माहिष्मती नगरी में पहुँचा दिया। मित्रवर्मा दुष्ट है। वह महारानी के पुत्र को मारकर उनके साथ अनुचित सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था। इसलिए महारानी ने मुझे इस बालक को लेकर किसी सुरक्षित स्थान में भाग निकलने का आदेश दिया। मैं इसे लेकर भागता हुआ यहाँ आ पहुँचा। इसके लिए जल निकालने के समय कुएँ में गिर पड़ा। जिस पर आपने अनुग्रह किया। मेरा नाम नालीजंघ है। अब आप ही इस बालक के रक्षक हैं।'

तदुपरान्त भास्करवर्मा की माता के सम्बन्ध में पूछने पर नालीजंघ ने कहा—'पाटलिपुत्र के व्यापारी वैश्रवण की पुत्री सागरदत्ता में कोसलेन्द्र कुसुमधन्वा से इस कुमार की माता का जन्म हुआ है।' 'यदि ऐसी बात है तो इसकी माता और मेरे पिता के एक ही मातामह हैं।' यह कहकर मैंने उसका सस्नेह आलिंगन किया। उसी समय दैवात् वहाँ आये हुए एक बहेलिये के बाण से मैंने एक हरिण को मारकर आग में पकाकर उन दोनों की तथा अपनी क्षुधा शान्त की। उसी बहेलिये से हमें ज्ञात हुआ कि माहिष्मती में मित्रवर्मा मञ्जुवादिनी का विवाह प्रचण्डवर्मा से करने की तैयारी कर रहा है। तब मैंने नालीजंघ से कहा—'तुम महारानी के पास जाकर एकान्त में उनसे मेरा समाचार बताकर कहना कि 'बालक को बाघ खा गया' ऐसी घोषणा करके आप रोना-पीटना शुरू कर दीजिए। इस पर मित्रवर्मा जब आपको साँत्वना देने के लिए आये तब आप कहें कि यदि मैं पतिव्रता हूँ तो यह माला तुम्हारे लिए तलवार का प्रहार हो जाय।' यह कहकर वत्सनाभ नामक विष के साथ जल में डुबोई गई एक माला उसके ऊपर फेंक दें। वह उससे मर जाएगा। तब उस माला को इस औषधि के साथ पुनः जल में डुबोकर अपनी पुत्री को पहना दें। पुत्री नहीं

मरेगी। इस घटना से प्रजा आपको पतिव्रता मानकर आप पर बड़ी श्रद्धा करेगी। तब आप प्रचण्डवर्मा को संदेश कहलावें कि वह आकर मञ्जुवादिनी के साथ पूरा राज्य ले ले। उस समय मैं और राजकुमार भास्करवर्मा कापालिक साधु के वेश में वहीं श्मशान में निवास करेंगे। पुनः आप (महारानी) नगर के प्रतिष्ठित लोगों से कहें कि विन्ध्यवासिनी देवी ने मुझसे स्वप्न में कहा है—'आज के चौथे दिन प्रचण्डवर्मा मर जाएगा। पाँचवें दिन नर्मदातटवर्ती मेरे मन्दिर में तुम्हारे पुत्र के साथ एक ब्राह्मण कुमार प्रकट होगा। वह इस राज्य का पालन करता हुआ तुम्हारे पुत्र को राजगद्दी पर बैठायेगा। उसके बाद तम मञ्जुवादिनी का विवाह उसी ब्राह्मणकुमार के साथ कर देना।'

मैंने नालीजंघ से जो योजना बतायी, उसको पूर्णरूप से कार्यान्वित किया गया। मैं और राजकुमार कापालिक वेश में वहीं पहुँच गये। महारानी से भिक्षा लेकर जाते समय नालीजंघ से पूछने पर पता चला कि प्रचण्डवर्मा इस समय राजसभागृह में विद्यमान है। मैं चारण के वेश में प्रचण्डवर्मा के पास पहुँचकर नाना प्रकार के खेलों में उसका मनोरञ्जन करने लगा। दिनान्त के समय खेल ही खेल में छुरी से उस पर प्रहार करके भाग निकला। आधी रात के समय महारानी का एक नौकर यथानिर्दिष्ट दुर्गादेवी के मन्दिर में कीमती वस्त्र एवं आभूषण रखकर चला गया। मैं और राजकुमार उसी मन्दिर में प्रतिमा के पास एक बिल बनाकर बिल के मुँह पर पत्थर रखकर छिपे हुए थे। उन वस्त्र-आभूषणों को पहनकर हम दोनों उसी बिल में घुस गए। दूसरे दिन प्रातःकाल महारानी मंत्रियों तथा सामन्तों के साथ दुर्गा मन्दिर में आयीं। पूजन करने के उपरान्त किवाड़ सटाकर मन्दिर के प्रागंण में सब लोग हाथ जोड़कर खड़े हो गये तथा संकेतानुसार नगाड़ा बजाया जाने लगा। नगाड़े का शब्द सुनकर हम दोनों बिल से बाहर निकलकर लोगों के सामने आये। मैंने सबको सम्बोधित किया—'विन्ध्यवासिनी देवी मेरे द्वारा आप लोगों को आदेश देती हैं कि मैंने व्याघ्री का रूप धारण करके कुमार की रक्षा की। आज से इसे मेरा पुत्र समझो। यह राजसिंहासन पर बैठाया जाय। इसकी रक्षा के लिए मैंने इस ब्राह्मण-कुमार को नियुक्त किया है। इस ब्राह्मण कुमार के साथ मंजुवादिनी का विवाह कर दिया जाय।'

यह सुनकर सभी लोग विस्मित एवं प्रमुदित हुए। उसी दिन राजकुमार को राजसिंहासन पर बैठाया गया। मंजुवादिनी का विवाह मेरे साथ हुआ। मैं राज्य-पालन करता हुआ राजकुमार को राजनीति की शिक्षा देने लगा।

अनन्तर मैंने गुप्तचरों द्वारा वसन्तभानु की प्रजाओं में बुद्धिभेद उत्पन्न करके उसको विनष्ट कर विदर्भ देश का पैतृक राज्य भी राजकुमार को प्राप्त करा दिया। कुछ दिनों के उपरान्त अपनी पत्नी मंजुवादिनी को माता के पास छोड़कर आपको ढूँढ़ता हुआ यहाँ आने पर आपके दर्शन से कृतकृत्य हुआ।

संस्कृते विश्रुतचरितस्य कथासारः

विश्रुतः कथयितुमारभते—एकदा विन्ध्याटव्यां भ्रमणं कुर्वता मया क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुलः एकः कुमारः अवलोकितः। तस्य संरक्षकः एकः वृद्धजनः तदानीं कूपे पतितः आसीत्।

कुमारस्य प्रार्थनया द्रवीभूतोऽहं तं वृद्धं कूपादुद्धृत्य तयोः परिचयं पृष्टवान्। वृद्धोऽब्रवीत्—'विदर्भजनपदस्य राजा पुण्यवर्मा आसीत्। कालकवलिते तस्मिन् तत्पुत्रः अनन्तवर्मा राजसिंहासनम् अधितस्थौ। स कलानिपुणोऽपि राजनैतिकज्ञानरहितः आसीत्। मन्त्रिणां परामर्शमपि स नामन्यत। अतएव स्वस्य विहारभद्रनाम्नः सेवकस्य प्रेरणया सकलेषु दुर्व्यसनेषु नितरां निमग्नो जातः।'

एवं स्थिते राजनि मन्त्रिषु च उदासीनेषु जातेषु अनन्तवर्मणः शत्रुः अश्मकेन्द्रः कूटनीतिं प्रायुङ्क्त। स विदर्भेषु स्वगुप्तचरान् प्रेष्य नानाकूटोपायैः अनन्तवर्मणः सैन्यानि व्यनाशयत्, प्रजासु बहून् उपद्रवान् अकारयत्, युद्धे अनन्तवर्माणमपि अमारयत्।

तदनन्तरम् अनन्तवर्मणो मन्त्रिवृद्धो वसुरक्षितः कतिपयैः विश्वस्तसेवकैः सह तस्य कुमारमेनं भास्करवर्माणम् अस्यैव स्वसारं मञ्जुवादिनीम् अनयोश्च जननीं वसुन्धरामादाय अपासर्पत्। परं दौर्भाग्याद् वसुरक्षितः मार्गे एव निधनं प्राप्तवान्। ततो नालीजंघनामाहं भास्करवर्मसेवकः सापत्यां देवीं वसुन्धरां भर्तुः वैमात्रेयस्य भ्रातुः मित्रवर्मणः अन्तिकं नीतवान्। दुष्टप्रकृतिको मित्रवर्मा बालमेनं हन्तुमैच्छत्। इदं तु ज्ञात्वा देव्याज्ञया अहं माहिष्मत्याः एनं निर्गमय्य विन्ध्याटवीं व्यगाहिषि। अत्रैव दारुणपिपासापीडितस्य अस्य कुमारस्य वारि दातुकामोऽहं कूपे पतितः भवता एवमनुगृहीतः।

पुनः नालीजंघात् मया ज्ञातं यद् भास्करवर्मणो माता पाटलिपुत्रस्य वणिजो वैश्रवणस्य नप्त्री अस्ति। तदा वैश्रवणस्यैव नप्ता मत्पिता अपि वर्तते इति कथयित्वा अहं कुमारं सस्नेहमालिंगितवान्। तदानीमेव केनापि व्याधेनानुसृतौ दैवात् समुपागतौ द्वौ मृगौ तत्र हत्वा दावाग्निषु मृगमांसं शूलाकृत्य तप्तेनामिषेण तयोरात्मनश्च क्षुधमतार्षम्।

तस्माद् व्याधाद् वयं ज्ञातवन्तो यत् प्रचण्डवर्मा नाम चण्डवर्मानुजो मञ्जुवादिनीं परिणेतुं माहिष्मतीमभ्येति। एतदाकर्ण्य अहम् नालीजङ्घं कथितवान्—'अहं कूटनीत्या भास्करवर्माणं राज्ये प्रतिष्ठापयेयम्। त्वं प्रतिगत्य कुशलमस्य बालस्य मद्वार्तां च देव्यै रहसि निवेद्य पुनः कुमारः शार्दूलभक्षित इति प्रकाशामाक्रोशः कार्यः।' मित्रवर्मा देवीमाश्वासयितुं नूनं तदुपान्तमागमिष्यति। तदा देव्या स वाच्यः—'अथ तु मम बालकः परलोकमगात्। अतएव अद्य प्रभृति त्वदादेशकारिण्येवाहम्'। पुनरनेन वत्सनाभनाम्ना महाविषेण संनीय जलं तत्र मालां मज्जयित्वा तया स वक्षसि मुखे च हन्तव्यः 'स एवायमसिप्रहारः पापीयसस्तवास्तु यद्यस्मि पतिव्रता' इत्युक्त्वा पुनरनेनौषधेन संगमिते तोये तां मालां मज्जयित्वा स्वदुहित्रे देया। मृते तु तस्मिन् तस्यां च निर्विकारायां सत्यां प्रजाः देवीं साक्षात् देवीमिव मत्वा अनुवर्तिष्यन्ते। पुनः प्रचण्डवर्मणे संदेश्यम्—'अनायकमिदं राज्यम्। अनेनैव सह बालिकेयं स्वीकार्या'। तावदहं भास्करवर्मा च कापालिकवेषच्छन्नौ पुराद् बहिरूपश्मशानं वत्स्यावः। पुनः पौरवृद्धान् आप्तांश्च मन्त्रिवृद्धानेकान्ते ब्रवीतु देवी—'स्वप्नेऽद्य मे देव्या विन्ध्यवासिन्या कृतः प्रसादः। अद्य चतुर्थेऽहनि प्रचण्डवर्मा मरिष्यति। पञ्चमेऽहनि रेवातटवर्तिनि मद्भवने त्वत्सुतेन सह कोऽपि विप्रकुमारो निर्यास्यति। स राज्यमिदमनुपाल्य बालं ते प्रतिष्ठापयिष्यति। स खलु बालो मया व्याघ्रीरूपया सुगूढं स्थापितः। सा चेयं वत्सा

मञ्जुवादिनी तस्य विप्रदारकस्य पत्नीत्वेनैव कल्पिता' इति। तदेतदतिरहस्यं युष्मास्वेव गुप्तं तिष्ठतु, यावदेतदुपपत्स्यते।

नालीजंघः प्रहृष्टः प्रायात्। मन्निर्देशश्च यथाचिन्तितमनुष्ठितोऽभूत्। अहं च कापालिकवेषे देव्याः भिक्षां लब्ध्वा नालीजंघात् प्रचण्डवर्मणोऽवस्थानं ज्ञात्वा ऐन्द्रजालिकवेषं गृहीत्वा प्रचण्डवर्मणः समीपं गतः। तत्र नानाश्चर्यकरेण ऐन्द्रजालिककर्मणा सर्वान् संमोह्य अन्ते एकया क्षुरिकया प्रचण्डवर्मणः प्रत्युरसं प्रहृत्य वेगात् पलायितः। ततो दुर्गागृहं प्राप्य प्रतिमुक्तपूर्ववेषः सह कुमारेण तत्रैव प्रागेव मया कृतं प्रस्तरस्थगितबाह्यद्वारं बिलम् प्राविशम्।

अथ मध्यरात्रे देव्या प्रेषितानि महार्हवस्त्राभूषणानि आवाभ्यां धारितानि। प्रभाते देवी मन्त्रिभिः पौरजनैश्च सह दुर्गामन्दिरम् आगच्छत्। भगवतीमर्चयित्वा सर्वे जनाः कपाटं पिधाय मन्दिरप्राङ्गणे अतिष्ठन्। तदा आवां बिलान्निर्गत्य उद्घाटितकपाटौ जनानां दृष्टिगोचरौ जातौ। अहं प्रजाः सम्बोधितवान्—'विन्ध्यवासिनी देवी मन्मुखेन युष्मानाज्ञापयति—इमं राजकुमारं व्याघ्रीरूपेण अहमेव रक्षितवती। अतोऽयं मत्पुत्रः शासकत्वेन युष्माभिः गृह्यताम्। अयं ब्राह्मणकुमारश्च रक्षकत्वेनास्य तिष्ठतु। अस्य स्वसा मञ्जुवादिनी ब्राह्मणकुमारस्यास्य पत्नी भवतु' इति।

एतच्छ्रुत्वा निखिलाः प्रकृतयः सुप्रसन्नाः अभवन्। ताः भास्करवर्माणं राज्ये प्रतिष्ठापितवत्यः। मम च मञ्जुवादिन्या सह विवाहो जातः। पुनरहं कूटनीत्या वसन्तभानुं विनाश्य विदर्भदेशस्य पैतृकराज्यमपि भास्करवर्माणं प्रापयम्। कियत्कालानन्तरमहं स्वप्रियां मञ्जुवादिनीं मातुरन्तिके न्यस्य भवदन्वेषणपरायणः सन् इह भवद्दर्शनेन कृतार्थोऽभवम्।

☐

महाकवि दण्डीकृत दशकुमारचरितम्

(अष्टमोच्छ्वासः)

विश्रुतचरितम्

(1) अथ सोऽप्याचचक्षे—देव! मयाऽपि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुधा तृषा च क्लिश्यन्न क्लेशार्हः क्वचित्कूपाभ्याशे अष्टवर्षदेशीयो दृष्टः। स च त्रास गद्गद्मगदत्—"महाभाग, क्लिष्टस्य मे क्रियतामार्य! साहाय्यकम्। अस्य मे प्राणापहारिणीं पिपासां प्रतिकर्तुमुदकमुदञ्चन्निह कूपे कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः। तमलमस्मि नाहमुद्धर्तुम् इति।"

कठिन-शब्दार्थ—**अथ** = इसके पश्चात्, सप्तम उच्छ्वास में मन्त्रगुप्त द्वारा कहे गये वृत्तान्त के बाद। **सः** = वह (विश्रुत नाम का राजकुमार), **अपि** = भी, **आचचक्षे** = कहा, **देव!** = हे महाराज!, **मयाऽपि** = मेरे द्वारा भी, **परिभ्रमता** = घूमते हुये, **विन्ध्याटव्याम्** = विन्ध्याचल पर्वत के वन में, **क्षुधा** = भूख से, **तृषा** = प्यास से, **क्लिश्यन्** = पीड़ित होता हुआ, **अक्लेशार्हः** = कष्ट सहन न करने योग्य, **क्वचित्** = किसी, **कूपाभ्याशे** = कूएँ के पास में, **अष्टवर्षदेशीयो** = लगभग आठ वर्ष का, **कोऽपि** = कोई, **कुमारः** = (एक) बालक, **दृष्टः** = देखा गया, **स च** = और उसने, **त्रासगद्गदम्** = भय के कारण रूँधे हुए कण्ठ के स्वर से, **अगदत्** = कहा, **महाभाग!** = हे महाभाग!, **क्लिष्टस्य** = कष्ट में पड़े हुए (मुझ बालक) की, **साहाय्यकम्** = सहायता, **क्रियताम्** = कीजिए, **आर्य** = पूज्य, **अस्य** = इस, **मे** = मेरी, **प्राणापहारिणीम्** = प्राणों को हरण करने वाली, **पिपासाम्** = प्यास को, **प्रतिकर्तुम्** = दूर करने के निमित्त, **उद्ञ्चन्** = निकालते हुए, **इह कूपे** = इस कुएँ में, **कोऽपि** = कोई, **निष्कलो** = वृद्ध, **ममैकशरणभूतः** = मेरे एक मात्र सहारे के रूप में स्थित, **पतितः** = गिर गया, **तम्** = उसको, **अहम्** = मैं, **उद्धर्तुम्** = निकालने के लिए, **अलमस्ति** = असमर्थ हूँ।

हिन्दी-अनुवाद—इसके बाद उसने (विश्रुत ने) भी कहा—'हे महाराज! मेरे द्वारा भी घूमते-घूमते विन्ध्याचल के वन में भूख तथा प्यास से पीड़ित, कष्टों को सहन करने में असमर्थ, किसी कुएँ के समीप लगभग आठ वर्ष का एक बालक देखा गया।' (मुझे देखकर) भयभीत वह (बालक) गद्गद् (रूँधे हुए) स्वर में बोला—'हे महाभाग! आर्य (पूज्य), कष्ट में पड़े हुए मुझ (बालक) की (आपके द्वारा) सहायता की जाय। प्राणों का अपहरण करने वाली प्यास को दूर करने के निमित्त पानी को निकालने (खींचते हुए) एक वृद्ध (पुरुष), जो कि मेरा एक मात्र सहारा था, इसी कुएँ में गिर गया है। उसको (इस कुएँ से बाहर) निकालने में मैं समर्थ नहीं हूँ।'

संस्कृत-व्याख्या— **अथ** = अनन्तरम्, सप्तमोच्छवासे मन्त्रगुप्त वर्णितवृत्तान्तोपरान्तम्, **सः** = विश्रुतनामकः राजकुमारः, **आचचक्षे** = कथयामास, **देव!** = हे महाराज!, **परिभ्रमता** = अटता, भ्रमणं कुर्वता, **मयाऽपि** = विश्रुतेनापि, **विन्ध्याटव्याम्** =

विन्ध्यारण्ये, **क्षुधा** = बुभुक्षया, **तृषा** = पिपासया च, **क्लिश्यन्** = क्लेशम् अनुभवन्, **अक्लेशार्हः** = क्लेशस्य अर्हः इति क्लेशार्हः, न क्लेशार्हः इति अक्लेशार्हः= कष्टसोढुमसमर्थः अतिसुकुमारः इत्याशयः, **क्वचित्** = कुत्रचित्, **कूपाभ्याशे** = कूप समीपे, **अष्टवर्षदेशीयः** = अष्टवर्षकल्पः कोऽपि, **कुमारः** = बालकः, **दृष्टः** = अवलोकितः। सः च, **त्रासगद्गदम्** = त्रासेन भयेन, **गद्गदम्** = अस्पष्टम् यथा स्यात्तथा, **अगदत्** = अकथयत्, **महाभाग!** = हे महोदय!, **क्लिष्टस्य** = कष्टापन्नस्य, **मे** = मम, बालकस्य, **आर्य!** = हे माननीय! हे पूजार्ह!, **साहाय्यकम्** = साहाय्यम्, **क्रियताम्** = विधीयताम्, **अस्य मे** = मम कुमारस्य, **प्राणापहारिणीम्** = जीवनान्तकरीं, **पिपासाम्** = तृषाम्, **प्रतिकर्तुम्** = दूरीकर्तुम्, **उदकम्** = जलम्, **उदञ्चन्** = निष्कासयन्, **इह कूपे** = अस्मिन् कूपे, **कोऽपि निष्कलः** = वृद्धः स्थविरः, **ममैकशरणभूतः** = एकमात्र सहायकः पतितः, **तम्** = वृद्धम्, अहम्, **उद्धर्तुम्** = कूपात् निस्सारयितुम्, **अलं न अस्मि** = समर्थो नास्मि।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—आचचक्षे—आ+चक्ष् (अदादि आत्मनेपदी)+लिट् लकार, प्रथमपुरुष एकवचन। **परिभ्रमता**—परि+भ्रम्+शतृ प्रत्यय, पुल्लिङ्ग, तृतीया एकवचन, 'मया' का विशेषण। **विन्ध्याटव्याम्**—विन्ध्यायाः अटवी, इति विन्ध्याटवी, तस्याम् विन्ध्याटव्याम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **क्षुधा**—क्षुध् (स्त्रीलिङ्ग), तृतीया एकवचन। **तृषा**—तृष् (स्त्रीलिङ्ग) तृतीया, एकवचन। **क्लिश्यन्**—क्लिश् (दिवादि परस्मैपद)+शतृ, पुल्लिङ्ग, प्रथमा, एकवचन। **अक्लेशार्हः**—अर्हति इति अर्हः योग्यः, अर्ह्+अच्, 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणि न्यचः' से अर्ह् में अच् प्रत्यय का योग हुआ है। क्लेशस्य अर्हः इति क्लेशार्हः (षष्ठी तत्पुरुष), न क्लेशार्हः इति अक्लेशार्हः (नञ् तत्पुरुष)। **कूपाभ्याशे**—कूपस्य अभ्याशः इति कूपाभ्याशः तस्मिन् कूपाभ्याशे (सप्तमी तत्पुरुष)। **त्रासः**—त्रस्+घञ्। **त्रासगद्गदम्**—त्रासेन गद्गदम् यथा स्यात्तथा इति त्रासगद्गदम्। **अगदत्**—गद् धातु+लङ्, प्रथमपुरुष एकवचन। **महाभाग**—महान् भागः यस्य सः महाभागः तत्सम्बुद्धौ हे महाभाग (बहुव्रीहि)। **क्लिष्टस्य**—क्लिश्+क्त। **साहाय्यकम्**—सहायस्य भावः साहाय्यम् सहाय+ष्यञ्, साहाय्यम् एव साहाय्यकम्, साहाय+कन् (स्वार्थे), **पिपासाम्**—पातुं इच्छा पिपासा, पा+सन्+टाप्। **प्राणापहारिणीम्**—प्राणान् अपहर्तुं शीलमस्याः इति प्राणापहारिणी ताम् प्राणापहारिणीम्, प्राण+अप+हृ+णिनि+ङीप् (ताच्छील्येणिनिः)। **प्रतिकर्तुम्**—प्रति+कृ+तुमुन्। **उदञ्चन्**—उत्+अञ्च्+शतृ प्रथमा एकवचन पुल्लिङ्ग। **निष्कलः**—निर्गताः कलाः यस्मात् स निष्कलः (बहुव्रीहि)। **ममैकशरणभूतः**—मम+एकशरणभूतः, एकम् (केवलम्) एव शरणम् इति एक शरणम्, (कर्मधारय) एक शरणं भूतः इति एकशरणभूतः। **पतितः**—पत्+क्त। **उद्धर्तुम्**—उत्+हृ+तुमुन्।

विशेष—(i) प्रस्तुत गद्यांश की भाषा सहज, सरल एवं सामासिक पदावली रहित है।

(ii) अष्टवर्षीय बालक की स्थिति का सम्यक् एवं यथार्थ चित्रण किया गया है।

(2) अथाहमभ्येत्य व्रतत्या कयाऽपि वृद्धमुत्तार्य तं च बालं वंशनालीमुखोद्धृताभिरद्भिः **फलैश्च** *पथ्यैः शरक्षेपोच्छ्रितस्य लकुच वृक्षस्य शिखरात्पाषाणपातितैः प्रत्यानीत*

प्राणवृत्तिमापाद्य तरुतलनिषण्णस्तं जरन्तमब्रवम्— 'तात क एषः बालः? को वा भवान्? कथं चेयमापदापन्ना' इति।

कठिन-शब्दार्थ—**अथ** = इसके बाद, **अभेत्य** = समीप जाकर, **व्रतत्या** = लता से, **कयाऽपि** = किसी, **वृद्धम्** = वृद्ध पुरुष को, **उत्तार्य** = ऊपर (बाहर) निकालकर, **तं च बालम्** = उस बालक को, **वंशनालीमुखोद्धृताभिः** = बाँस की नाली के द्वारा निकाले गये हुए, **अद्भिः** = पानी के द्वारा, **पञ्चषैः फलैश्च** = पाँच-छह फलों से, **शरक्षेपोच्छ्रितस्य** = छोड़े जाने पर बाण जितना ऊँचा जा सकता है, उससे भी ऊँचा, **लकुचवृक्षस्य** = बड़हर के पेड़ के, **शिखरात्** = शिखर से, **पाषाण पातितैः** = पत्थर से गिराए हुए, **प्रत्यानीत प्राणवृत्तिम्** = प्राणवृत्ति लौटाकर, होश में लाकर, **तरुतलनिषण्ण** = वृक्ष के नीचे बैठे हुए, **तम् जरन्तम्** = उस वृद्ध को, **अब्रवम्** = कहा, **तात्** = हे तात!, **क एषः बालः** = यह बालक कौन है?, **भवान्** = आप, **को** = कौन हैं, **कथं** = कैसे, **आपदा** = विपत्ति, **आपन्ना** = आ पड़ी।

हिन्दी-अनुवाद—इसके अनन्तर मैंने समीप जाकर कुछ लताओं को एकत्र करके उनकी (सहायता से) उस वृद्ध को (कुएँ से) बाहर निकाल कर, बाँस की नली से निकाले हुए जल (तथा) बाण फेंकने से जितना ऊँचा जा सकता है, उतने ऊँचे बड़हर के वृक्ष की चोटी से, पत्थर से (पत्थर मारकर) गिराए हुए पाँच-छः फलों से, उस बालक की प्राण वृत्ति लौटा कर (उस बालक को होश में लाकर), वृक्ष के नीचे बैठकर उस वृद्ध से कहा—हे माननीय! यह लड़का कौन है? अथवा आप कौन हैं? तथा यह विपत्ति कैसे आ पड़ी?

संस्कृत-व्याख्या—**अथ** = तदनन्तरम्, अहं, **अभेत्य** = समीपं गत्वा, **व्रतत्या** = लतया, **वृद्धम्** = स्थविरम्, **उत्तार्य** = कूपात् बहिः निस्सार्थ, **वंशनाली-मुखोद्धृताभिरद्भिः** = वंश नाली मुखेन, **उद्धृताः** = निष्कासिताः इति वंशनाली-मुखोद्धृताः, ताभिः वंश नालीमुखोद्धृताभिः, **अद्भिः** = जलैः, पञ्च षड्वां प्रमाणमेषां ते पञ्चषास्तैः, **शरक्षेपो** = बाणगतिः, यावद् बाणा गच्छन्तीत्यर्थः, शरक्षेपादप्युच्छ्रित-स्योन्नतस्य, **शिखरात्** = अग्रदेशात्, **पाषाणपातितैः** = प्रस्तर-निःक्षेपेणाधः क्षिप्तैः, फलैरित्यस्य विशेषणम्, **प्रत्यानीत प्राणवृत्तिमापाद्य** = प्रत्यानीता पुनराक्षिप्ता प्राणवृत्तिः जीवनयोगो यस्य तम्, **आपाद्य** = कृत्वा, **तरुतलनिषण्णः** = वृक्षस्य अधस्तात् उपविष्टः, **तं जरन्तम्** = तं वृद्धम्, **अब्रवम्** = उवाच, **तात** = हे तात!, **क एष बालः** = कोऽयं बालकः? को वा भवान्?, **कथं** = कस्मात् कारणात्, **चेयमापदापन्नेति** = इयम् आपद् आपन्ना आगता आपतिता वा।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**अभेत्य**—अभि+आ+इ+ल्यप्। **व्रतत्या**—वृतति शब्द की तृतीया विभक्ति का एकवचन। **उत्तार्य**—उत्+तृ+णिच्+ल्यप्। **वंशनाली-मुखोद्धताभिः**—वंशस्य नाली इति वंशनाली (षष्ठी तत्पुरुष) तस्या मुखं इति वंशनाली-मुखम् तेन उद्धृताः इति वंशनालीमुखोद्धृताः ताभिः वंशनालीमुखोद्धृताभिः (तृतीया तत्पुरुष)। **शरक्षेपोच्छ्रितस्य**—शरस्य क्षेपः इति शरक्षेपः (षष्ठी तत्पुरुष) शरक्षेपात् अपि उच्छ्रिः इति शरक्षेपोच्छ्रितः (पञ्चमी तत्पुरुष) तस्य। **पाषाण पातितैः**—पाषाणैः पातितानि

इति पाषाणपातितानि तैः (तृतीया तत्पुरुष)। **पञ्चषैः**—पञ्च षड् वा संख्या येषां तानि पञ्चषाणि, तैः पञ्चषै (बहुव्रीहि)। **प्रत्यानीतप्राणवृत्तिम्**—प्रत्यानीता प्राणवृत्तिः यस्य सः प्रत्यानीतप्राणवृत्तिः तम् प्रत्यानीतप्राणवृत्तिम् (बहुव्रीहि)। प्रत्यानीत—प्रति+आ+नी+क्त। **वृत्तिः**—वृत्+क्तिन्। **आपाद्य**—आ+पद्+णिच्+ल्यप्। **तरुतलनिषण्णः**—तरोः तलम् (षष्ठी तत्पुरुष) तरुतलम्, तरुतले निषण्णः इति तरुतलनिषण्णः (सप्तमी तत्पुरुष)। **निषण्णः**—नि+सद्+क्त। **जरन्तम्**—जृ+शतृ+द्वितीया विभक्ति (एकवचन)। **आपन्ना**—आ+पद्+क्त+टाप्।

विशेष—(i) गद्यांश की भाषा भावानुकूल तथा लालित्यपूर्ण है।

(3) सोऽश्रुगद्गदमगदत्—'श्रूयतां महाभाग! विदर्भो नाम जनपदः तस्मिन्भोजवंशभूषणम्, अंशावतार इव धर्मस्य, अतिसत्त्वः सत्यवादी वदान्यः सुविनीतः, विनेता प्रजानाम्, रञ्जितभृत्यः, कीर्तिमान्, उदग्रः बुद्धि मूर्तिभ्यामुत्थानशीलः शास्त्रप्रमाणकः शक्यभव्यकल्पारम्भी, संभावयिता बुधान् प्रभावयिता सेवकान्, उद्भावयिता बन्धून् न्यग् भावयिता शत्रून् असम्बद्धप्रलापेष्वदत्त कर्णः, कदाचिदप्य वितृष्णो गुणेषु, अतिनदीष्णः कलासु, नेदिष्ठो धर्मार्थ संहितासु स्वल्पेऽपि सुकृते सुतरां प्रत्युपकर्त्ता, प्रत्यवेक्षिता कोशवाहनयोः यत्नेन परीक्षिता सर्वाध्यक्षाणाम्, उत्साहयिता कृतकर्मणा मनुरूपैर्दानमानैः, सद्यः प्रतिकर्त्ता दैवमानुषीणामापदाम्, षाड्गुण्योपयोग निपुणः, मनुमार्गेण प्रणेता चातुर्वर्ण्यस्य पुण्यश्लोकः पुण्यवर्मा नामासीत्।'

कठिन-शब्दार्थ—**अश्रुगद्गदम्** = आँसुओं के कारण गला रूँधा हुआ, **अगदत्** = कहा, **श्रूयताम्** = सुनिए, **महाभाग** = महानुभाव, **जनपदः** = देश, **तस्मिन्** = उस जनपद में, **भोजवंशभूषणम्** = भोज कुल का अलङ्कार स्वरूप, **धर्मस्य अंशावतार इव** = धर्म के आंशिक अवतार के तुल्य, **अतिसत्त्वः** = अत्यन्त पराक्रमी, **सत्यवादी** = सत्य वक्ता, **वदान्यः** = उदार, दानी, **सुविनीतः** = अत्यन्त नम्र, **विनेता** = शासक, **रञ्जितभृत्यः** = जिसके द्वारा सेवक सदा प्रसन्न रखे जाते थे, **कीर्तिमान्** = यशस्वी, **उदग्रः** = उन्नत आचार विचार वाला, **मूर्तिबुद्धिभ्याम्** = स्वरूप एवं बुद्धि से, **उत्थानशीलः** = उन्नति करने वाला, **शास्त्रप्रमाणकः** = जिसके लिए शास्त्र ही प्रमाण था, **शक्यभव्यकल्पारम्भी** = वह कार्य, जिसे करना अपनी शक्ति के अन्दर हो, **संभावयिता** = सम्मान करने वाला, **बुधान्** = पण्डितों का, **प्रभावयिता** = प्रभावित करने वाला, विशेष प्रभाव रखने वाला, **सेवकान्** = सेवकों पर, **उद्भावयिता** = उन्नति करने वाला, **बन्धून्** = बन्धु वर्ग की, **न्यग् भावयिता** = दमन करने वाला, **शत्रून्** = शत्रुओं का, **असम्बद्ध प्रलापेषु** = व्यर्थ की बातों में, **अदत्तकर्णः** = कान नहीं लगाने वाला, ध्यान न देने वाला, **गुणेषु अवितृष्णः** = जो गुणों के प्रति विरक्त नहीं था, **अति नदीष्णः** = अत्यन्त निपुण, **कलासु** = कलाओं में, **नेदिष्ठो** = अति समीपवर्ती, **धर्मार्थसंहितासु** = धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र में, **स्वल्पेऽपि** = थोड़े से भी, **सुकृते** = किसी के द्वारा किये गये उपकार पर, **सुतरां** = अत्यन्त, **प्रत्युपकर्त्ता** = उपकार के बदले में उपकार करने वाला, **कोशवाहनयोः** = खजाने तथा सेना के अश्व एवं गजादि का, **प्रत्यवेक्षिता** = सावधानी

से देखभाल करने वाला, **सर्वाध्यक्षाणाम्** = प्रधान कर्म करने वालों का, **परीक्षिता** = परीक्षक, देखभाल करने वाला, **उत्साहयिता** = उत्साह बढ़ाने वाला, **कृतकर्मणाम्** = अपने कर्त्तव्य का पालन भली-भाँति करते थे। उनका, **अनुरूपै:** = योग्य, **दानमानै:** = सम्मान के द्वारा, **सद्य:** = शीघ्र, **प्रतिकर्त्ता** = दूर करने वाला, शान्त करने वाला, **दैवमानुषीणांआपदाम्** = दैव द्वारा तथा मनुष्यों द्वारा उपस्थित की गई आपत्तियों का, **षाड्गुणोपयोगनिपुण:** = छहों गुणों का विधिपूर्वक पालन करने वाला, **मनुमार्गेण** = मनु द्वारा प्रतिपादित नियमों के अनुसार, **प्रणेता** = नायक, **पुण्यश्लोक:** = पवित्र यश वाला।

हिन्दी-अनुवाद—हे महाभाग! सुनिये। विदर्भ नाम का एक जनपद (देश) है। उसमें भोजवंश का भूषण पुण्यवर्मा नाम का एक राजा था (जो) धर्म का अवतार, अत्यन्त बलशाली, सत्यवादी, दानी, अति विनम्र, प्रजापालक, प्रजा को शिक्षा देने वाला, अपने सेवकों को प्रसन्न रखने वाला, यशस्वी, उन्नतिशील, अपनी बुद्धि तथा शरीर द्वारा (प्रजा की) निरन्तर उन्नति करने वाला, शास्त्र को प्रमाण मानने वाला, जो काम अपने से हो सके, सामान्य जनता के लिए हितकर हो तथा न्याय युक्त हो–ऐसे कामों को करने वाला, विद्वानों का सम्मान करने वाला, सेवकों पर प्रभाव रखने वाला, भाई-बन्धुओं को ऊँचा उठाने वाला, शत्रुओं का दमन करने वाला, जिन बातों से अपना कोई प्रयोजन न हो उनको (अर्थात् असम्बद्ध बातों को) न सुनने वाला, गुणों से कभी भी तृप्त न होने वाला, कलाओं में अत्यधिक निपुण, धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र के अत्यन्त निकट रहने वाला (अर्थात् धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र में अत्यन्त प्रवीण) थोड़ी सी भी उसकी भलाई की जाने पर प्रचुर प्रत्युपकार करने वाला, कोष तथा वाहन (सेना के हाथी, घोड़े आदि) की देख-रेख करने वाला, अपने सभी कार्याध्यक्षों पर सावधानीपूर्वक दृष्टि रखने वाला, अनुरूप पुरस्कार तथा सम्मान द्वारा कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ाने वाला, दैवी तथा मानुषी आपत्तियों को तुरन्त ही शान्त अथवा दूर करने वाला, छह गुणों (सन्धि, विग्रह, यान, आसन, आश्रय तथा द्वैधीभाव) का विधिवत् पालन करने में चतुर, मनु द्वारा निर्दिष्ट चातुर्वर्ण्य (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) के धर्मों का पालन कराने वाला, पवित्र कीर्ति वाला था (अर्थात् उसका यश सर्वत्र व्याप्त था)।

संस्कृत-व्याख्या—**स:** = वृद्धः, **अश्रुगद्गदम्** = अश्रुभिः वाष्पैः गद्गद यथा स्यात्तथा इति अश्रुगद्गदम् = वाष्पकारणात् आचष्टम्, **अगदत्** = उवाच, **श्रूयताम्** = आकर्ण्यताम्, **महाभाग!** = हे महानुभाव!, **विदर्भो नाम** = विदर्भाख्यः, **एक: जनपद:** = देशः, **तस्मिन्** = तस्मिन्, विदर्भनामके जनपदे, **भोजवंशभूषणम्** = भोजकुलालङ्कारः, धर्मस्य, अंशेन अवतारः इति, **अंशावतार:** = एकदेशेन अवतारः न तु पूर्ण इत्यर्थः, **अतिसत्त्व:** = समधिकबलवान् सत्त्वगुणप्रधानो वा, **सत्यवादी** = सत्यवक्ता, **वदान्य:** = बहुप्रदः, उदारः, **सुविनीत:** = विनम्रः, **विनेता** = शिक्षाकर्त्ता अथवा शासकः, **प्रजानाम्** = जनतायाः, **रञ्जितभृत्य:** = अनुरक्तसेवकः, **कीर्तिमान्** = यशस्वी, **उदग्र:** = उन्नतः, **बुद्धिमूर्तिभ्यामुत्थानशील:** = बुद्धया, मूर्त्या आकारेण चोत्यानशीलः पौरुषस्वभावः, **शास्त्रप्रमाणक:** = शास्त्रं प्रमाणं मत्वा निखिलकार्यकर्त्ता, **शक्यभव्यकल्पारम्भी** =

शक्यं स्वसाध्यं भव्यं मङ्गलजनकं कल्पम् विधिम् आरभत इति शक्यभव्यकल्पारम्भी, **संभावयिता** = मानधनादिना सत्कर्त्ता, **बुधान्** = विदुषः, **प्रभावयिता** = प्रभुत्वकारकः, **सेवकान्** = अनुचरान्, **बन्धून् उद्भावयिता** = ज्ञातीनां संवर्धकः, **शत्रून् न्यग्भावयिता** = अरीणां दमनकर्त्ता, **असम्बद्धप्रलापेषु** = अप्रासङ्गिकवार्तासु, **अदत्तकर्णः** = दत्तौ कर्णौ येन सः दत्तकर्णः, न दत्तकर्णः इति **अदत्तकर्णः** = ध्यानविरहितः, कदाचिदपि, **गुणेषु अवितृष्णः** = विरागरहितः, सर्वदा गुणानुरक्ता एवेत्यर्थः, **कलासु** = विविधकलासु, **अतिनदीष्णः** = अतिनिपुणः, **धर्मार्थसंहितासु नेदिष्ठः** = धर्मशास्त्रार्थशास्त्रयोः सर्वदा संलग्नः, **स्वल्पेऽपि** = अल्पमात्रायामपि, **सुकृते** = सत्कर्मणि, **सुतराम्** = अत्यन्तम्, **प्रत्युपकर्त्ता** = प्रत्युपकारकर्त्ता, **कोशवाहनयोः** = कोशस्य, सेनायाः अश्वहस्त्यादीनां च, **प्रत्यवेक्षिता** = अनुसन्धानकर्त्ता, **सर्वाध्यक्षाणाम्** = सर्वप्रधानकर्मकर्तृणाम्, **यत्नेन** = प्रयासेन, **परीक्षिता** = परीक्षकः, **कृतकर्मणाम्** = कृतं निष्पादितं कर्म कार्यं यैस्तेषाम्, **उत्साहयिता** = उत्साहवर्धकः, **अनुरूपैः** = योग्यैः समुचितैः, **दानमानैः** = धनानि दानेन समादरकारणेन च, **सद्यः** = त्वरितम्, **प्रतिकर्त्ता** = शमयिता दूरीकर्त्ता वा, **दैवमानुषीणामापदाम्** = दैव्यश्च मानुष्यश्च इति दैवमानुष्यः तासाम् दैवमानुषीणाम्, **आपदाम्** = विपत्तीनाम्, **षाड्गुण्योपयोगनिपुणः** = षड्गुणयं सन्धिविग्रहादि तेषामुपयोगे विविच्य प्रयोगे निपुणः कुशलः, **मनुमार्गेण** = मनूक्तपद्धत्या, **चातुर्वर्णस्य** = चत्वारो वर्णाः चतुर्वर्णाः, चतुर्वर्णाः एव चातुर्वर्ण्यम् तस्य चातुर्वर्णस्य = ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रस्य, **पुण्यश्लोकः** = पवित्रकीर्तिः, पुण्यवर्मा नाम नृपतिरासीत्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—अश्रुगद्गदम्—अश्रुभिः गद्गदं यथा स्यात्तथा इति अश्रुगद्गदम्। **अगदत्**—गद्+लङ् प्रथमपुरुषएकवचन। **श्रूयताम्**—श्रु धातु कर्मवाच्य, लोट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन। **महाभाग**—महान् भागो यस्य स महाभागः तत्सम्बोधने हे महाभाग (बहुव्रीहि)। **भोजवंशभूषणम्**—भोजस्य वंशः इति भोजवंशः (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य भूषणम् इति भोजवंशभूषणम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अंशावतारः**—अंशेन अवतारः इति अंशावतारः (तृतीया तत्पुरुष)। **सत्यवादी**—सत्यं वदति तच्छीलः इति सत्यवादी, सत्य+वद्+णिनि। **सुविनीतः**—सुतराम् विनीतः इति सुविनीतः। **रञ्जितभृत्यः**—रञ्जिताः भृत्याः येन सः रञ्जितभृत्यः (बहुव्रीहि)। **कीर्तिमान्**—कीर्तिः विद्यते अस्य इति कीर्तिमान्, कीर्ति+मतुप्। **मूर्तिबुद्धिभ्याम्**—मूर्तिश्च बुद्धिश्च इति मूर्तिबुद्धी ताभ्यां मूर्तिबुद्धिभ्याम् (द्वन्द्व)। **उत्थानशीलः**—उत्थानं शीलं यस्य सः उत्थानशीलः (बहुव्रीहि)। **शास्त्रप्रमाणकः**—शास्त्रं प्रमाणं यस्य सः (बहुव्रीहि)। **शक्यभव्यकल्पारम्भी**—शक्यश्च भव्यश्च कल्पश्च इति शक्यभव्यकल्पः, शक्यभव्यकल्पश्चासौ आरम्भश्च इति शक्यभव्यकल्पः (विशेषणपूर्वपद कर्मधारय), शक्यभव्यकल्पारम्भः अस्ति अस्य इति शक्यभव्यकल्पारम्भी, शक्यभव्यकल्पारम्भ+इनि (अत इनिठनौ)। **सम्भावयिता**—सम्+भू+णिच्+तृच्। **प्रभावभिता**—प्र+भू+णिच्+तृन्। **उद्भावयिता**—उद्+भू+णिच्+तृन्। **अदत्तकर्णः**—दत्तौ कर्णौ येन सः दत्तकर्णः (बहुव्रीहि), न दत्तकर्णः इति अदत्तकर्णः (नञ् तत्पुरुष)। **अवितृष्णः**—विगता तृष्णा यस्य सः वितृष्णः (बहुव्रीहि), न

वितृष्ण: इति अवितृष्ण: (नञ् तत्पुरुष)। **नदीष्ण:**—नदी+स्ना+क (आतोऽनुपसर्गे क:)। **धर्मार्थसंहितासु**—धर्मश्च अर्थश्च इति धर्मार्थौ (द्वन्द्व) तयो: संहिता: इति धर्मार्थसंहिता: तासु धर्मार्थ संहितासु। **नेदिष्ठ:**—अन्तिक+इष्ठन् = नेदिष्ठ:, 'अन्तिकबाढयोर्नैदसाधौ' नियम से 'अन्तिक' के स्थान में 'नेद' हो गया। इसके बाद 'इष्ठन्' से मेल होने पर 'नेदिष्ठ:' बन गया। **प्रत्युपकारकर्त्ता**—प्रति+उप+कृ+तृच्। **प्रत्यवेक्षिता**—प्रति+अव+ईक्ष्+तृच्। **परीक्षिता**—परि+ईक्ष्+तृच्। **सर्वाध्यक्षाणाम्**—सर्वे च अध्यक्षा: इति सर्वाध्यक्षा: तेषाम् सर्वाध्यक्षाणाम्। **कृतकर्मणाम्**—कृतानि कर्माणि यै: ते कृतकर्माण: तेषाम् कृतकर्मणाम् (बहुव्रीहि)। **उत्साहयिता**—उत्+सह्+णिच्+तृच्। **दानमानै:**—दानानि च मानानि च इति दानमानानि तै: दानमानै: (द्वन्द्व)। **प्रतिकर्त्ता**—प्रति+कृ+तृच्। **दैवमानुषीणाम्**—दैत्यश्च मानुष्यश्च इति दैवमानुष्य: तासाम् दैवमानुषीणाम्। **षाड्गुण्योपयोगनिपुण:**—षट् च ते गुणा: इति षड्गुणा:, षड्गुणा एव षाड्गुण्यम्, षड्गुण+ष्यञ् स्वार्थे, षाड्गुणस्य उपयोग: इति षाड्गुण्योपयोग: (षष्ठी तत्पुरुष), षाड्गुण्योपयोगे निपुण: इति षाड्गुण्योपयोगनिपुण: (सप्तमी तत्पुरुष)। **मनुमार्गेण**—मनो: मार्ग: इति मनुमार्ग: तेन मनुमार्गेण। **प्रणेता**—प्र+नी+तृच्। **चातुर्वर्ण्यस्य**—चत्वारो वर्णा: चतुर्वर्णा:, चतुर्वर्णा: एव चातुर्वर्ण्यम् तस्य चातुर्वर्ण्यस्य, चतुर्वर्ण+ष्यञ् स्वार्थे। **पुण्यश्लोक:**—पुण्य: श्लोक: यस्य स: पुण्यश्लोक: (बहुव्रीहि)।

विशेष—(i) षड्गुणा:—छ: गुण निम्नलिखित माने गये हैं—

सन्धिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रय:।
षड्गुणा: शक्तयस्तिस्र: प्रभावोत्साहमन्त्रजा:।। (अमर)

(ii) पुण्यश्लोक:—पवित्र कीर्तिवाला। परम्परया इतने लोग पुण्यश्लोक माने गये हैं–

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिर:।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दन:।।

(iii) प्रस्तुत गद्यांश में राजा पुण्यवर्मा के चारित्रिक गुणों पर सरल भाषा-शैली में प्रकाश डाला गया है।

(4) स: पुण्यै कर्मभि: प्राप्य पुरुषायुषम्, पुनरपुण्येन प्रजानामगण्यतामरेषु। तदनन्तरमनन्तवर्मा नाम तदायतिरवनिमध्यतिष्ठत्। स सर्वगुणै: समृद्धोऽपि दैवाद्दण्डनीत्यां नात्यादृतोऽभूत्। तमेकदा रहसि वसुरक्षितो नाम मन्त्रिवृद्ध: पितुरस्य बहुमत प्रगल्भवागभाषत।

कठिन-शब्दार्थ—पुण्यै: कर्मभि: = पवित्र कर्मों द्वारा, **पुरुषायुषम् प्राप्य** = पुरुष की (पूर्ण) आयु प्राप्त कर अर्थात् सौ वर्ष की आयु प्राप्त कर, **अपुण्येन** = पाप से, **अमरेषु** = देवताओं में, **अगण्यत्** = गिन लिया गया, **तदनन्तरम्** = पुण्यवर्मा के पश्चात्, **तदायति:** = जिसका प्रभाव पुण्यवर्मा के कारण था, **अवनिमध्यतिष्ठत्** = पृथ्वी पर बैठा अर्थात् शासन करने लगा, **सर्वगुणै:** = सब गुणों से, **समृद्धोऽपि** = युक्त होने पर भी,

दैवात् = भाग्य से, **दण्डनीत्याम्** = दण्ड नीति में अर्थात् राजनीति में, **नात्यादृतोऽभूत्** = अधिक रुचि रखने वाला नहीं था, **रहसि** = एकान्त में, **मन्त्रिवृद्धः** = मन्त्रियों में वृद्ध, **पितुरस्य** = उसके पिता का, **बहुमतः** = अत्यन्त सम्मान का पात्र, **प्रगल्भवाक्** = निर्भीक रूप से बोलने वाला, **अभाषत** = बोला, कहा।

हिन्दी-अनुवाद—वह अपने पुण्य कर्मों से पुरुषायु अर्थात् 100 वर्ष की आयु (पुरुष पूर्णायु 100 वर्ष की मानी गई है) प्राप्त कर प्रजाओं के पाप के कारण, देवताओं में जाकर मिल गया (देवलोक को प्राप्त हो गया) अर्थात् मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसके पश्चात् उसका पुत्र अनन्तवर्मा जिसको (अपने पिता) पुण्यवर्मा से ही प्रभाव प्राप्त हुआ था, पृथिवी (राज्य) पर बैठा, शासन करने लगा। वह सब गुणों से युक्त होने पर भी दैवयोग से राजनीति में अधिक रुचि रखने वाला नहीं था। एक समय उसको एकान्त में ले जाकर उसके पिता द्वारा अत्यधिक सम्मानित तथा अनुभवपूर्ण बातें कहने वाले वृद्ध मन्त्री वसुरक्षित ने उससे कहा।

संस्कृत-व्याख्या—**सः** = पुण्यवर्मा, **पुण्यैः कर्मभिः** = यज्ञदानादिभिः, **पुरुषायुषम्** = पूर्णमायुः, शतं वर्षाणीति यावत्, **प्राप्य** = लब्ध्वा, **अपुण्येन** = पापेन, **प्रजानाम्** = जनानाम्, दुर्भाग्येनेति यावत्, **अमरेषु अगण्यत** = स्वर्गमगच्छत्, **तदनन्तरम्** = तस्य पुण्यवर्मणः अनन्तरम्, **तदायतिः** = तस्मात् पुण्यवर्मणः आयतिः प्रभावो यस्य सः तत्पुत्र इत्यर्थः, **अनन्तवर्मा नाम** = नाम्ना अनन्तवर्मा, **अवनिम्** = पृथ्वीम्, **अध्यतिष्ठत्** = उपविशत, सिंहासनारूढो जातः, **सः** = अनन्तवर्मा, **सर्वगुणैः** = सर्वे च ते गुणाः इति सर्वगुणाः तैः, **समृद्धः** = युक्तः, अपि, **दैवात्** = भाग्यात्, विधिवशात्, **दण्डनीत्याम्** = राजनीतौ, **नात्यादृतोऽभूत्** = न अत्यादृतः अभूत् न अभिरुचिवान् आसीत्। **तम्** = अनन्तवर्मानम्, **एकदा** = एकस्मिन् समये, **रहसि** = एकान्ते, वसुरक्षितो नाम, **मन्त्रिवृद्धः** = मन्त्रिषु मन्त्रिणां वा वृद्धः, **पितुरस्यः** = तस्य पितुः जनकस्य, **बहुमतः** = सम्मानितः, अत्यन्तम् आदृतः, **प्रगल्भवाक्** = निर्भीकवक्ता, **अभाषत** = कथयामास।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**पुरुषायुषम्**—पुरुषस्य आयुः इति पुरुषायुषम्। **अपुण्येन**—न पुण्यम् इति अपुण्यम्, तेन अपुण्येन (नञ् तत्पुरुष)। **तदामतिः**—तस्मात् आयतिः यस्य सः तदायतिः (बहुव्रीहि)। **अध्यतिष्ठत्**—अधि+स्था+लङ् प्रथम पुरुष एकवचन। **मन्त्रिवृद्धः**—मन्त्रिषु मन्त्रिणां वा वृद्धः इति मन्त्रिवृद्धः (सप्तमी अथवा षष्ठी तत्पुरुष)। **प्रगल्भवाक्**—प्रगल्भा वाक् यस्य सः प्रगल्भवाक् (बहुव्रीहि)।

विशेष—(i) **पुरुषायुषम्**—प्राचीनकाल में मानव की औसत आयु सौ वर्ष मानी गई थी। इस सन्दर्भ में सम्पूर्ण वैदिक शास्त्र प्रमाण स्वरूप हैं। जहाँ कामना की गई है—

जीवेमः शरदः शतम् पश्येमः शरदः शतम्।

(ii) गद्यांश की भाषा भावानुरूप, सरल एवं सरस है।

(5) तात, सर्वैवाऽऽत्मसम्पदभिजनात्प्रभृत्यन्यूनैवात्रभवति लक्ष्यते। बुद्धिश्च निसर्ग-पट्वी, कलासु नृत्यगीतादिषु चित्रेषु च काव्यविस्तरेषु प्राप्तविस्तारा तवेतरेभ्यः प्रतिविशिष्यते

तथाऽप्यसावप्रतिपाद्यात्मसंस्कारमर्थशास्त्रेषु, अनग्निसंशोधितेव हेमजातिर्नातिभातिबुद्धिः। बुद्धिहीनो हि भूभृदत्युच्छ्रितोऽपि परैरध्यारुह्यमाणमात्मानं न चेतयते। न च शक्तः साध्यं साधनं वा विभज्य वर्तितुम्। अयथावृत्तश्च कर्मसु प्रतिहन्यमानः स्वैः परश्च परिभूयते। न चावज्ञातस्यस्या प्रभवति प्रजानां योगक्षेमाराधनाय। अतिक्रान्तशासनाश्च प्रजा यत्किंचन वादिन्यो यथा कथंचिद्वर्तिन्यः सर्वाः स्थितीः संकिरेयुः। निर्मर्यादाश्च लोका लोकाभितोऽमुतश्च स्वाभिनमात्मानं च भ्रंशयेयुः। आगमदीपदृष्टेन खल्वध्वना सुखेन वर्तते लोकयात्रा। दिव्यं हि चक्षुर्भूतभवद्भविष्यत्सु व्यवहितविप्रकृष्टादिषु च विषयेषु शास्त्रं नामा प्रतिहतवृत्ति तेन हीनः सतोरप्यायतविशालयो लोचानयोरन्ध एव जन्तुरर्थदर्शनेष्वसामर्थ्यात्। अतो विहाय बाह्यविद्यास्वभिषङ्गमागयय दण्डनीतिं कुलविद्याम् तदर्थानुष्ठानेन चाऽऽवर्जित-शक्तिसिद्धिरस्खलितशासनः शाधिचिरमुदधिमेखलामुर्वीम् इति।

कठिन-शब्दार्थ—आत्मसम्पद् = वैयक्तिक गुण, **सर्वैव** = सभी, **अभिजनात्** = वंश इत्यादि, **अन्यूना** = अत्यधिक, **लक्ष्यते** = दिखाई पड़ती है, **निसर्ग** = स्वभाव, **पटवी** = निपुणा, **नृत्यगीतादिषु** = नृत्यगीतादि में, **काव्यविस्तरेषु** = काव्य कला के क्षेत्र में, **प्राप्तविस्तारा** = प्राप्त कर लिया है विस्तार जिसने, **इतरेभ्यः** = अन्य पुरुषों की अपेक्षा, **प्रतिविशिष्यते** = बढ़कर है, **अप्रतिपद्य आत्मसंस्कारम्** = आत्म संस्कार न पाने के कारण, **प्रतिभाति** = सुशोभित होती है, **अनग्नि संशोधितेव** = जो आग में शुद्ध न की गई हो, **हेमजाति** = स्वर्ण, **प्रतिभाति** = सुशोभित होती है, **भूभृत्** = राजा, **अत्युच्छ्रितः** = अत्युन्नत, **परैः** = शत्रुओं के द्वारा, **अध्यारुह्यमाणम्** = आक्रमण किये जाते हुए, **न चेतयते** = समझ पाने में समर्थ नहीं होता है, **शक्तः** = समर्थ, **साध्यम्** = कार्य, **साधनम्** = साधन, उपकरण, **विभज्य** = पृथक्-पृथक् कर, **वर्तितुम्** = व्यवहार करने के लिए, **अयथावृत्तः** = अनुचित प्रकार से व्यवहार करने वाला, **प्रतिहन्यमानः** = विफलता प्राप्त करता हुआ, **स्वैः** = अपने आत्मीय जनों द्वारा, **परिभूयते** = तिरस्कार किया जाता है, **अवज्ञातस्य** = तिरस्कृत राजा की, **न प्रभवति** = समर्थ नहीं होती, **योगक्षेमयोः** = योग और क्षेम के, **न प्रभवति** = समर्थ नहीं होती, **आराधनाय** = प्राप्त करने के लिए, **अतिक्रान्तशासनाः** = शासन का उल्लंघन करने वाली (प्रजायें), **यत्किञ्चनवादिभ्यो** = अपनी इच्छानुसार जो चाहती है, वही कहने लगा करती है, **यथाकथञ्चिद् वर्तिन्यः** = जैसा चाहती है, वैसा व्यवहार करने लगा करती है, **सर्वास्थितीः** = सम्पूर्ण मर्यादाओं को, **संकिरेयुः** = नष्ट-भ्रष्ट कर डाला करती है, **लोकादितोऽमुतश्च** = इस मृत्यु लोक से तथा उस परलोक से, **भ्रंशयेयुः** = गिरा देती है, **आगमदीपदृष्टेन** = शास्त्र रूपी दीपक से देखे गये हुए, **अध्वना** = मार्ग से, **सुखेन** = सुखपूर्वक, **लोकयात्रा** = सांसारिक यात्रा, **दिव्यं** = पवित्र, दैवी, **चक्षुः** = नेत्र, **प्रवहित विप्रकृष्टदिषु** = एक-दूसरे से पृथक् तथा दूर रहने वाले, **अप्रतिहतवृत्तिः** = जिसकी वृत्ति (गति) की कहीं भी रुकावट न हो, **सतोऽपि** = होते हुए भी, **आयतविशालयो लोचनयोः** = लम्बे तथा बड़े-बड़े नेत्रों के होने पर भी, **जन्तु** = प्राणी, **अर्थदर्शनेषु** = राजनीति सम्बन्धी विषयों में, **असामार्थ्यात्** = असमर्थता होने के कारण, **अभिषङ्गम्** = आसक्ति को, **विहाय** = छोड़कर, **आगमय** = प्राप्त करो,

दण्डनीतिम् = राजनीति को, **स्वकुलविद्याम्** = अपने कुल में सनातन से चली आ रही विद्या को अर्थात् दण्डनीति को, **तदर्थानुष्ठानेन** = उसके नियमों का पालन करने से, **आवर्जितशक्तिसिद्धिः** = जिसने शक्तियों की सिद्धि प्राप्त कर ली हो, **अस्खलितशासनः** = जिसकी आज्ञा कभी उल्लंघित न की जाती हो, **शाधि** = शासन करो, **चिरम्** = चिरकाल तक, **उर्वीम्** = पृथ्वी पर, **उदधिमेखलाम्** = जो समुद्र रूपी करधनी से वेष्टित है।

हिन्दी-अनुवाद—हे तात (प्रियवर)! आप में अपने वंश (खानदान) के अनुरूप सभी सम्पदाएँ (गुण) अत्यधिक रूप से दिखाई पड़ती हैं। नृत्य-गीतादि कलाओं में, चित्र (निर्माण) में तथा शल्य कला में स्वभाव से ही तीक्ष्ण आपकी बुद्धि और लोगों की अपेक्षा अधिक विशिष्ट है तथापि (आपकी बुद्धि) अर्थशास्त्र (राजनीति) में आत्मसंस्कार न पाकर (शिक्षा न पाने के कारण) न तपाये हुए स्वर्ण के समान, अधिक शोभा नहीं देती। बुद्धिरहित राजा अत्युन्नत होने पर भी शत्रु द्वारा आक्रमण किये जाते हुए भी अपने को समझने में समर्थ नहीं होता है। वह साध्य तथा साधन का (समुचित) विभाग कर व्यवहार करने में भी समर्थ नहीं होता। अनुचित रीति से व्यवहार करने वाला राजा (अपने) कार्यों में असफल होता हुआ, अपने तथा अन्य लोगों के द्वारा तिरस्कृत हुआ करता है। उस अवज्ञात (तिरस्कृत) राजा की आज्ञा, प्रजा के योग (अप्राप्त का प्राप्त करना) तथा क्षेम (प्राप्त की सुरक्षा) साधने में समर्थ नहीं होती। (फिर तो) शासन का उल्लंघन (अतिक्रमण) करने वाली प्रजाएँ अपनी इच्छानुसार जो चाहती हैं वही कहने लगा करती है, अपनी इच्छानुसार व्यवहार करने लगा करती हैं तथा अन्त में सम्पूर्ण स्थिति (मर्यादा) को छिन्न-भिन्न (तितर-बितर) कर देती हैं। (पुनः) ऐसी मर्यादाहीन प्रजाएँ इस लोक तथा परलोक दोनों से अपने को तथा (अपने) स्वामी को भ्रष्ट कर देती हैं। लोकयात्रा (जीवन यात्रा) (तो) शास्त्र रूपी दीपक से देखे हुए मार्ग (पर चलने) से (ही) सुखपूर्वक चलती है। वह धर्मशास्त्र दिव्य दृष्टि के समान है जो दृष्टिभूत, वर्तमान, भविष्य तथा एक-दूसरे से अलग रहने वाले एवं दूरस्थ विषयों में भी अप्रतिहत गति से पहुँच जाया करती है, कहीं भी रुकती नहीं है। उस (शास्त्र ज्ञान) से रहित प्राणी लम्बे-चौड़े तथा विशाल नेत्रों के रखते होने पर भी अर्थदर्शन (राजनीति) में सामर्थ्य (ज्ञान अथवा योग्यता) न होने के कारण अंधा ही हुआ करता है। अतः आप बाह्य विद्याओं की आसक्ति (रुचि) का त्याग कर अपनी वंश परम्परा की विद्या (दण्डनीति) की ओर ध्यान लगायें तथा सीखें। उसके अर्थों (नियमों) के अनुसार व्यवहार करने से (व्यवहार करके) शक्तिसिद्धि प्राप्त कर बाधाओं से रहित शासन वाला बनकर, चिरकाल तक, समुद्ररूपी करधनी वाली (अर्थात् समुद्र से घिरी हुई) पृथ्वी पर शासन करो।

संस्कृत-व्याख्या—**तात** = हे पूज्यवर, **अत्रभवति** = त्वयि, **सर्वैव** = अखिलैव, **आत्मसम्पद्** = वैयक्तिकगुणाः, **अभिजनात्प्रभृति** = कुलक्रमानुसारेण, **अन्यूनैव** = अन्यूना, अस्वल्पा, विपुला, प्रचुरमात्रामामेव, **लक्ष्यते** = दृश्यते, **बुद्धिश्च** = मतिश्च, **निसर्गपट्वी** = निसर्गात्, स्वभावात्, **पट्वी** = निपुणा, **कलासु** = विविधकलासु

नृत्यगीतादिषु, **चित्रेषु च** = चित्रनिर्माणे च, **काव्यविस्तरेषु** = काव्यस्य (साहित्यस्य) विस्तराः इति काव्यविस्तराः तेषु कव्यविस्तरेषु साहित्यक्षेत्रे इत्याशयः, **प्राप्तविस्तारा** = प्राप्तः विस्तारो मया सा प्राप्तविस्तारा लब्धप्रसरा, **तवेतरेभ्यः** = अन्येभ्यः पुरुषेभ्यः, **प्रतिविशिष्यते** = विशिष्टाऽस्ति, **तथाप्य सावप्रतिपद्यात्मसंस्कारम्** = तथापि असौ = बुद्धिः, अप्रतिपद्य अप्राप्य, आत्मसंस्कारम् = आत्मवासनाम्, **अर्थशास्त्रेषु** = दण्डनीत्यादिषु, **अनग्निसंशोधितेन** = अनग्निशोधितं सुवर्णं यथा न शोभते तया संस्कार-रहिता बुद्धिः, **नातिभाति** = न अतिभाति न अत्यन्तं शोभते। **बुद्धिहीनो** = मतिविहीनो हि, **भूभृत्** = राजा, **अत्युच्छ्रितोऽपि** = अति उच्छ्रितः, अपि = अत्युन्नतोऽपि, **परैः** = शत्रुभिः, **अध्यारुह्यमाणम्** = आक्रम्यमाणम्, **आत्मानम्** = स्वकीयं, **न चेतमते** = ज्ञातुं न प्रभवति। (सः), **न च शक्तः** = समर्थो न भवति, **साध्यम्** = कार्यम्, **साधनम्** = कारणम् अथवा साध्यम् विपक्षभूतम् साधनं सपक्षभूतम्, **विभज्य** = निर्णीयं, **वर्तितुम्** = व्यवहर्तुम्, **अथवावृत्तः** = न यथावृत्तः इति अपथा वृत्तः योग्य चरित्रहीनः, **कर्मसु** = कार्येषु, **प्रतिहन्यमानः** = विफलीभवन् प्रतिरुध्यमानः, **स्वैः** = आत्मीयैः जनैः, **परैः च** = अन्यैः अथवा शत्रुभिः, **परिभूयते** = तिरस्क्रियते, **अवज्ञातस्य** = तिरस्कृतस्य (तस्य राज्ञः), **आज्ञा** = शासनम्, **प्रजानां** = जनानाम्, **योगक्षेमाराधनाय** = अलब्धस्य लाभो योगः, लब्धस्य संरक्षणम् क्षेमः तयो आराधनाय साधनाय, **न प्रभवति** = समर्था न भवति, **अतिक्रान्तशासनाः** = अतिक्रान्तानि शासनानि याभिः, ताः (प्रजाः), **यत्किञ्चनवादिन्यः** = अनियन्त्रितभाषिण्यः, **यथाकथञ्चिद्वर्तिन्यः** = यथेच्छं विहरन्त्यः, **सर्वाः** = अखिलाम्, **स्थितीः** = मर्यादाम्, **संकिरेयुः** = विशृङ्खलयेयुः, **निर्मर्यादाः** = निर्गताः मर्यादाः येयः ते निर्मर्यादाः, **लोकाः** = प्रजाः, **लोकादितोऽभुतश्च** = इतो लोकात्, **अभुतः** = परलोकात्, **स्वामिनं** = राजानम्, आत्मानम् च, **भ्रंशयते** = पातयति, **आगमदीपदृष्टेन** = आगमः शास्त्रमेव दीपस्तेन दृष्टेन, **खलु** = निश्चयेन, **अध्वना** = मार्गेण, **सुखेन** = सुखपूर्वकम्, **लोकयात्रा** = लोकस्थितिः, जीवनयात्रा, **वर्तते** = सम्पद्यते, **दिव्यं** = पवित्रं, **चक्षुः** = नेत्रम्, **प्रवहितविप्रकृष्टेषु** = प्रवहिता विषयान्तरेणाच्छादिताश्च, **विपृकष्टा** = असन्निहिता तेषु, भूतभवद्भविष्यत्सु विषयेषु, **अप्रतिहतवृत्तिः** = अप्रतिहंता अकुण्ठिता वृत्तिः प्रसरो यस्य तत्, भवति अर्थात् सा दृष्टिः सर्वत्र गमयति। **तेन हीनः** = दिव्यचक्षुषा रहितः अथवा शास्त्रेण रहितः, **सतोऽपि** = वर्तमानयो अपि, **आयतविशालयोः लोचनयोः** = आयते च विशाले च इति आयतविशाले तयोः, **आयतविशालयोः** = दीर्घमहतोः, **जन्तुः** = प्राणी, **अर्थशास्त्रेषु असामर्थ्यात्** = राजनीतिज्ञानाभावात्, अन्ध एव भवति, अतः, **बाह्यविद्यासु** = नीतिविद्येतर विद्यासु, **अभिषङ्गम्** = आसक्तिम्, **विहाय** = त्यक्त्वा, **आगमय** = प्रापय, उपार्जय, **दण्डनीतिं** = राज्ञनीतिम्, **स्वकुलविद्याम्** = स्वस्य कुलमिति स्वकुलम्, तस्य विद्या इति स्वकुलविद्या ताम् स्वकुलविद्याम् अर्थात् दण्डनीतिम्, **तदर्थानुष्ठानेन** = तन्नियमानुसारं प्रवहरणेनं, **आवर्जितशक्तिसिद्धिः** = आवर्जिता प्राप्ता शक्तिः सामर्थ्यं सिद्धिः कार्यसिद्धिश्च, येन सः, तादृशः अस्खलितशासनः अप्रतिहताज्ञः, **शाधि** = शासनं कुरु, **चिरम्** = चिरकालपर्यन्तम्, **उपधिमेखलाम्** = समुद्रपरिवेष्टिताम्, **उर्वीम्** = पृथ्वीम्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—आत्मसम्पद्—आत्मनः सम्पत् इति आत्म सम्पत् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अन्यूना**—न न्यूना इति अन्यूना (नञ् तत्पुरुष)। **निसर्गपट्वी**—निसर्गेण पट्वी इति निसर्गपट्वी (तृतीया तत्पुरुष)। **नृत्यगीतादिषु**—नृत्यं च गीतं च इति नृत्यगीते (द्वन्द्व), नत्यगीते आदी यासां ताः नृत्यगीतादयः तासु नृत्यगीतादिषु (बहुव्रीहि)। **काव्यविस्तरेषु**—काव्यस्य विस्तराः इति काव्यविस्तराः तेषु काव्यविस्तरेषु। **प्राप्तविस्तारा**—प्राप्तः विस्तारो यया सा प्राप्तविस्तारा (बहुव्रीहि)। **आत्मसंस्कारम्**—आत्मनः संस्कारः इति आत्मसंस्कारः तम् आत्मसंस्कारम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अनग्निशोधिता**—अग्नौ शोधिता इति अग्निशोधिता (सप्तमी तत्पुरुष)। न अग्निशोधिता इति अनग्निशोधिता (नञ् तत्पुरुष)। **बुद्धिहीनः**—बुद्ध्या हीनः इति बुद्धिहीनः (तृतीया तत्पुरुष)। **अध्यारुहयमाणम्**—अधि+आ+रुह्+कर्मणि शानच्। **अयथावृत्तः**—यथा (उचितं) वृत्तं यस्य सः यथावृत्तः (बहुव्रीहि), न यथा वृत्तः इति अथवा वृत्तः (नञ् तत्पुरुष)। **योगक्षेमयोः**—योगश्च क्षेमश्च इति योगक्षेमौ (द्वन्द्व), तयोः। **वर्तितुम्**—वत्+तुमुन्। **प्रतिहन्यमानः**—प्रति+हन्+कर्मणि शानच्। **अवज्ञातस्य**—अव+ज्ञा+क्त। **अतिक्रान्तशासना**—अतिक्रान्तानि शासनानि याभिः ताः (बहुव्रीहि)। **यत्किञ्चनवादिन्यः**—यत् किञ्चन वदन्ति तच्छीलाः इति यत्किञ्चन-वादिन्यः। यत्किञ्चन+वद्+णिनि (ताच्छील्ये)+ङीप्। **यथाकथञ्चिद् वर्तिन्यः**—यथाकथञ्चिद् वर्तितुं शील एतासां इति यथाकथञ्चिद्वर्तिन्यः। **निर्मर्यादाः**—निर्गता मर्यादा येभ्यः ते अथवा निर्गताः मर्यादाभ्यः इति निर्मर्यादाः (प्रादि तत्पुरुष)। **आगमदीपदृष्टेन**—आगम एव दीपः इति आगमदीपः तेन दृष्टः इति, आगमदीपदृष्टः तेन (तृतीया तत्पुरुष)। **लोकयात्रा**—लोकस्य यात्रा इति लोकयात्रा (षष्ठी तत्पुरुष)। **व्यवहितविप्रकृष्टेषु**—व्यवहिताश्च विप्रकृष्टाश्च ते प्रवहितविप्रकृष्टाः तेषु (कर्मधारय)। **व्यवहित**—वि+अव+धा+क्त। **भूतभवद्भविष्यत्सु**—भूताश्च भवन्तश्च भविष्यन्तश्च इति भूतभवद्भविष्यन्तः तेषु (कर्मधारय)। **अप्रतिहितवृत्तिः**—प्रतिहता वृत्तिः यस्य तत् प्रतिहतवृत्तिः (बहुव्रीहि)। न प्रतिहतवृत्ति इति अप्रतिहतवृत्ति (नञ् तत्पुरुष)। **आयतविशालयोः**—आयते च विशाले च इति आयतविशाले तयोः (कर्मधारय)। **असामर्थ्यात्**—न सामर्थ्यम् इति असामर्थ्यम् तस्मात् असामर्थ्यात् (नञ् तत्पुरुष)। **बाह्य- विद्यासु**—बहिः भवाः बाह्याः बाह्याश्च ताः विद्या बाह्यविद्याः तासु (कर्मधारय)। **अभिषङ्गम्**—अभि+सञ्ज्+घञ्। **स्वकुलविद्याम्**—स्वस्य कुलमिति स्वकुलम् (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य विद्या इति स्वकुलविद्या ताम् स्वकुलविद्याम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **तदर्थानुष्ठानेन**—तस्य अर्थाः इति तदर्थाः (षष्ठी तत्पुरुष), तेषाम् अनुष्ठानम् इति तदर्थानुष्ठानम् तेन तदर्थानुष्ठानेन (षष्ठी तत्पुरुष)। **अनुष्ठानम्**—अनु+स्था+ल्युट्। **आवर्जितशक्तिसिद्धिः**—आयर्जिता (प्राप्ता) शक्तीनां सिद्धिः येन तथोक्तः त्वम् (बहुव्रीहि)। **अस्खलितशासनः**—स्खलितं शासनं यस्य स स्खलितशासनः (बहुव्रीहि) न स्खलितशासनः इति अस्खलित- शासनः (नञ् तत्पुरुष)। **शाधि**—शास् धातु, लोट् लकार मध्यमपुरुष एकवचन। **उदधिमेखलाम्**—उदधिः मेखला यस्याः सा उदधिमेखला ताम् उदधिमेखलाम् (बहुव्रीहि)।

विशेष—(i) प्रस्तुत कथन वसुरक्षित नामक वृद्ध मन्त्री का है। इसमें वसुरक्षित द्वारा अनन्तवर्मा को प्रशासन सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण शिक्षा प्रदान की गई है।

(ii) गद्यांश की भाषा भावानुकूल एवं प्रभावोत्पादक है। वाक्य छोटे-छोटे तथा सारगर्भित हैं।

(6) एतदाकर्ण्य 'स्थान एव गुरुभिह्यनुशिष्टम् तथा क्रियते' इत्यन्तःपुरमविशत्। तां च वार्तां पार्थिवेन प्रमदासन्निधौ प्रसङ्गेनोदीरितामुपनिशम्य समीपोपविष्टश्चित्तानुवृत्तिकुशलः प्रसादवित्तो गीतनृत्यवाद्यादिष्वबाह्यो बाह्यनारीपरायणः पटुरयन्त्रितमुखो बहुभङ्गिविशारदः परमर्मान्वेषणपरः परिहासयिता परीवादरुचिः पैशुन्यपण्डितः सचिवमण्डलादप्युत्कोचहारी सकलदुर्नयोपाध्यायः कामतन्त्रकर्णधारः कुमारसेवको विहार भद्रो नाम स्मितपूर्वं व्यज्ञापयत्—

कठिन-शब्दार्थ—**स्थाने एव** = समुचित हो, **गुरुभिः** = आपके द्वारा, **अनुशिष्टम्** = उपदेश दिया गया, **तथा क्रियते** = ऐसा ही किया जायेगा, **अन्तःपुरम्** = महल अथवा रनिवास में, **अविशत्** = प्रविष्ट हो गया, **पार्थिवेन** = राजा के द्वारा, **प्रमदासन्निधौ** = स्त्रियों के समीप में, **प्रसङ्गेन** = प्रसङ्गवश, वार्तालाप के अन्तर्गत, **उदीरिताम्** = कही हुई, **उपनिशम्य** = सुनकर, **समीपोपविष्टः** = समीप में बैठा हुआ, **चित्तानुवृत्तिकुशलः** = राजा की चित्तवृत्ति के अनुसार चलने में निपुण, **प्रसादवित्तः** = राजा की कृपा के कारण प्रसिद्ध, **वादित्र** = बाजा, वाद्य यन्त्र, **अबाह्यः** = बाहर नहीं था अर्थात् गीत, नृत्य एवं वाद्य का ज्ञान रखने वाला, **बाह्यनारीपरायणः** = बाहर की स्त्रियों में आसक्त, वेश्याओं में आसक्ति रखने वाला, **अयन्त्रितमुखः** = जिसके मुख में ताला नहीं लगा था, अर्थात् जो इच्छानुसार बोलता था, **बहुभङ्गिविशारदः** = व्यंग्यभरी बातों को कहने में चतुर, **परमर्मान्वेषणपरः** = दूसरों के दोष खोजने में संलग्न, **परिहासयिता** = हँसाने वाला, **परिवादरुचिः** = दूसरे की निन्दा करने में तथा सुनने में बड़ी रुचि रखने वाला, **पैशुन्यपण्डितः** = चुगलखोरी करने में चतुर, **उत्कोचहारी** = घूस या रिश्वत लेने वाला, **दुर्नयोपाध्यायः** = अनर्थों का आचार्य, **कामतन्त्रकर्णधारः** = कामशास्त्र का अच्छा ज्ञाता, **कुमारसेवकः** = कुमारावस्था से ही राजा का सेवक, **स्मितपूर्वम्** = मुस्कुराहट के साथ, **व्यज्ञापयत्** = कहा।

हिन्दी-अनुवाद—यह (वसुरक्षित नामक वृद्ध मन्त्री के उपर्युक्त उपदेश) को सुनकर (अनन्तवर्मा ने कहा)—हे सचिव श्रेष्ठ! आप द्वारा उचित ही उपदेश दिया गया, ऐसा ही किया जायेगा (अर्थात् मैं इसका पालन करूँगा)। ऐसा कहकर (उसने) अन्तःपुर में प्रवेश किया। स्त्रियों के समीप (विद्यमान) राजा (अनन्तवर्मा) द्वारा प्रसंगवश कहे गये (उस वृद्ध मन्त्री के उपदेश) को सुनकर पास में ही स्थित, राजा की चित्तवृत्ति के अनुसरण करने में चतुर (राजा की कृपा पर ही जिसका जीविका निर्भर थी अथवा जो राजा की कृपाओं के कारण प्रसिद्ध था), गीत, नृत्य, वाद्य आदि में जो प्रवीण था, बाहरी स्त्रियों में आसक्त होने वाला (अथवा वेश्यागामी), प्रवीण, अनियंत्रित मुख वाला (जो चाहे वही बोलने वाला) व्यंग्यपूर्ण बातें करने में दक्ष, दूसरों की त्रुटि (छिद्र) खोजने में तत्पर, हँसाने वाला, परनिन्दा में संलग्न, चुगलखोरी करने में पण्डित, मन्त्रिमण्डल (के सदस्यों) से भी घूस लेने वाला,

सब प्रकार के अनर्थों का उपाध्याय (आचार्य), कामशास्त्र का कर्णधार (प्रधान नायक) तथा बाल्यावस्था में ही राजा का सेवक था (ऐसा वह विहारभद्र) मुस्कराहट के साथ निवेदन करने लगा अर्थात् उक्त विशेषताओं वाले राजा के सेवक उस विहारभद्र ने ईषद् हास्य के साथ कहा—

संस्कृत-व्याख्या—**एतदाकर्ण्य** = इदं श्रुत्वा, **स्थाने एव** = उचितम् एव, **गुरुभिः** = श्रीमद्भिः, अत्रभवद्भिः, **अनुशिष्टम्** = उपदिष्टम्, **तथा क्रियते** = एवमेव करिष्यामि इत्युक्त्वा, **अन्तःपुरमप्रविशत्** = हर्म्यं प्रविष्टयाम्, तां च वार्तां, **पार्थिवेन** = राज्ञा, **प्रमदासन्निधौ** = स्त्रीणां समीपे, **प्रसङ्गेनोदीरिताम्** = प्रसंगवशकथिताम्, **उपनिशम्य** = श्रुत्वा, **समीपोपविष्टः** = समीपे आसीनः, **चित्तानुवृत्तिकुशलः** = अनुवृत्तिः अनुसरणं, चित्तस्य अनुवृत्तिः इति चित्तानुवृत्तिः, चित्तानुवृत्तौ कुशलः पटुः इति, **प्रसादवित्तः** = प्रसन्नता विख्यातः, **वादित्र अबाह्यः** = वाद्यम् अबाह्यः, अर्थात् वाद्यगीतेषु आसक्तः, **बाह्यनारीपरायणः** = वेश्यासक्तः अथवा परस्त्रीषु अभिनिवेशवान्, **अयंत्रिमुखः** = असंयत वाक्, वाच्यावाच्यज्ञानहीनो, **बहुभङ्गिविशारदः** = वक्रोक्तिकुशलः, **परमर्मान्वेषणपरः** = परच्छिद्रान्वेषणपरायणः, **परिवादरुचिः** = परनिन्दारसिकः, **परिहासयिता** = परोपहासकर्त्ता, **पैशुन्यपण्डितः** = पैशुन्यं = खलता तत्र पण्डितः, **सचिवमण्डलाद्** = मन्त्रिसमूहादपि, **उत्कोचहारी** = द्रव्यग्रहणपरः, **सकलदुर्नयोपाध्यायः** = सकल = अखिल, दुर्नयः = अनर्थ तेषां उपाध्यायः = आचार्यः, **कामतन्त्रकर्णधारः** = कामशास्त्रकर्णधारः नाविकः, **कुमारसेवको** = कुमारावस्थामारभ्य राज्ञः सेवकः, **विहारभद्रो** = विहारभद्रनाम्नः, **स्मितपूर्वम्** = सस्मितम्, **व्यज्ञापयत्** = अकथयत्—

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**प्रमदासन्निधौ**—प्रमदानां सन्निधिः इति प्रमदासन्निधिः तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष)। **चित्तानुवृत्तिकुशलः**—चित्तस्य अनुवृत्तिः इति चित्तानुवृत्तिः (षष्ठी तत्पुरुष)। चित्तानुवृत्तौ कुशलः चित्तानुवृत्तिकुशलः (सप्तमी तत्पुरुष)। **अबाह्यः**—न बाह्यः इति अबाह्यः (नञ् तत्पुरुष)। **बाह्यनारीपरायणः**—बाह्याश्च ताः नार्यः, तासु परायणः इति बाह्यनारीपरायणः (सप्तमी तत्पुरुष)। **अयंत्रितमुखः**—न यंत्रितमुखः इति अयंत्रितमुखः (नञ् तत्पुरुष)। **बहुभङ्गिविशारदः**—बह्व्यश्च ताः भङ्ग्यश्च इति बहुभङ्ग्यः, तासु विशारदः इति बहुभङ्गिविशारदः (सप्तमी तत्पुरुष)। **परिहासयिता**—परि+हस्+णिच्+तृच्। **परिवादरुचिः**—परिवादे रुचिः यस्य सः (बहुव्रीहि)। **पैशुन्यपण्डितः**—पैशुन्ये पण्डितः (सप्तमी तत्पुरुष)। **उत्कोचहारी**—उत्कोच+हृ+णिनि। **व्यज्ञापयत्**—वि+ज्ञा+णिच्+लङ् प्रथमपुरुष एकवचन।

(7) देव, दैवानुग्रहेण यदि कश्चिद् भाजनं भवति विभूतेस्तमकस्मादुच्चावचैरुपप्रलोभनैः कदर्थयन्तः स्वार्थं साधयन्ति धूर्ताः तथाहि। केचित्प्रेत्य किल लब्धैरभ्युदयातिशयैराशामुत्पाद्य मुण्डयित्वा शिरो बद्ध्वा दर्भरज्जुभिरजिनेनाच्छाद्य नवनीतेनोपलिप्यानशनं च शाययित्वा सर्वस्वं स्वीकरिष्यन्ति। तेभ्योऽपि घोरतराः पाषण्डिनः पुत्रदारशरीरजीवितान्यपि मोचयन्ति। यदि कश्चित् पटुजातीयो नास्यै मृगतृष्णिकायै हस्तगतं त्यक्तुमिच्छेत्, तमन्ये परिवार्याहुः—

कठिन-शब्दार्थ—**दैवानुग्रहेण** = भाग्य की कृपा या दया से, **भाजनम्** = पात्र, **उपप्रलोभनैः** = लालचों से, **प्रेत्य** = मरने के पश्चात्, **प्रेत्यलभ्यैः** = मरणानन्तर मिलने वाले, **दर्भरज्जुभिः** = कुशों द्वारा निर्मित रस्सियों से, **नवनीतेन** = मक्खन से, **उपलिप्य** = लपेट कर, **अनशनम्** = भोजन बिना ही, **शाययित्वा** = सुलाकर, **आच्छाद्य** = ढककर, **स्वीकरिष्यन्ति** = स्वीकार कर लेंगे, **जीवितानि** = प्राणों को, **परिवार्य** = चारों ओर से घेरकर।

हिन्दी-अनुवाद—महाराज, भगवान् की कृपा से यदि कोई ऐश्वर्य का पात्र बनता है तो धूर्त तुरन्त ही अनेक प्रकार के प्रलोभनों (लालचों) से उस को दुःखी बनाते हुए अपने प्रयोजन की सिद्धि करते हैं। जैसे—कुछ व्यक्ति मरने पर प्राप्त होने वाले तथाकथित उत्कृष्ट अभ्युदयों की आशा उत्पन्न कर, सिर मुण्डवा कर, कुशा की रस्सियों से बाँध कर, मृगचर्म पहना कर (शब्दानुवाद—ढक कर), मक्खन से मालिश कर और बिना खाए सुला कर (उसकी) सारी धनसम्पत्ति को हस्तगत कर लेते हैं। उन से भी अधिक क्रूर पाखण्डी पुत्र, पत्नी, शरीर और प्राणों को भी छुड़वा देते हैं। यदि कोई कुशल बुद्धि इस मृगतृष्णा (झूठी आशा) के लिए हाथ की वस्तु को छोड़ना नहीं चाहता तो दूसरे उसे घेर कर कहते हैं।

संस्कृत-व्याख्या—देव = हे देव!, **देवानुग्रहेण** = भाग्यस प्रसादेन, यदि, **कश्चिद्** = कोऽपि, **भाजनं** = पात्रम्, **विभूतेः** = ऐश्वर्यस्य, **भवति** = जायते, तं, **अकस्मात्** = न कस्यादपि कारणात, **उच्चावच्चैः** = नानाविधैः, **उपप्रलोभनैः** = लालचैः, **कदर्थयन्तः** = पीडयन्तः, **स्वार्थम्** = स्वप्रयोजनम्, **साधयन्ति** = सिद्धं कुर्वन्ति, **धूर्ताः** = दुष्टाः, **तथाहि** = उदाहरणार्थम्, **केचित्** = केचन पुरुषाः, **प्रेत्य** = मरणानन्तरम् आगामिनि जन्मनि, **लभ्यैः** = प्राप्यैः, **अभ्युदयातिशयैः** = ऐश्वर्यबाहुल्यैः, आशाम्, **उत्पाद्य** = उत्पन्नं कृत्वा, **मुण्डयित्वा शिरः** = केशानां वपनं कारयित्वा, **दर्भरज्जुभिः** = दर्भाणां रज्जवः ताभिः, **बद्ध्वा** = बन्धनं कृत्वा, **आजिनेन** = मृगचर्मणा, **आच्छाद्य** = परिवेष्ट्य, **नवनीतेन** = हैयंगवीनेन, **उपलिप्य** = लेपनं कृत्वा, **अनशनं** = भोजनहीनम्, च शाययित्वा, **सर्वस्वम्** = सकलं धनम्, **स्वीकरिष्यन्ति** = ग्रहणन्ति हस्तगतं कुर्वन्ति, तेभ्योऽपि घोरत्तराः अधिक-उग्राः **पाखण्डिनः** = धूर्ताः, **पुत्रदारशरीरजीवितानि** = पुत्राश्च दाराश्च शरीरं च जीवितं च, एतत् सर्वं, **मोचयन्ति** = त्याजयन्ति, **यदि कश्चित्** = कोऽपि, **पटुजातीयो** = चतुरसदृशः, नास्यै, **मृगतृष्णिकायैः** = मिथ्याशायैः, **हस्तगतं** = स्वहस्तस्थितम्, **त्यक्तुम्** = विहातुम्, **न इच्छेत्** = न वाञ्छेत्, **तम्** = जनम्, **अन्ये** = अपरे राजनीतिज्ञाः, **परिवार्य** = परितः वाहयित्वा, **आहुः** = कथयन्ति।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**दैवानुग्रहेण**—दैवस्य अनुग्रहः इति दैवानुग्रहः तेन (षष्ठी तत्पुरुष)। **उच्चावच्चैः**—उदञ्चि च अवाञ्चि च इति उच्चावचानितैः। **सर्वस्वम्**—सर्वं च तत् स्वं च इति सर्वस्वम् (कर्मधारय)। **पुत्रदारशरीरजीवितानि**—पुत्राश्च दाराश्च शरीरं च जीवितं च इति पुत्रदाराशरीरजीवितानि (द्वन्द्व समास)।

(8) 'एकामपि काकिणीं कार्षापणलक्षमापादयेम, शस्त्रादृते सर्वशत्रून् घातयेम, एकशरीरमात्रमपि मर्त्यं चक्रवर्तिनं विदधीमहि यद्यस्मदुद्दिष्टेन मार्गेणाचर्यते' इति। स पुनरिमान् प्रत्याह— 'कोऽसौ मार्गः' इति।

कठिन-शब्दार्थ—**काकिणीम्** = कौड़ी, **कार्षापण** = एक सिक्का विशेष, **आपादयेम** = बना सकते हैं, **घातयेम** = मरवा सकते हैं, **विदधीमहि** = कर दे, **आचर्यते** = आचरण किया जाता है।

हिन्दी-अनुवाद—यदि हमारे बताये हुए मार्ग पर चला जाय तो हम एक (अकेली) कौड़ी को भी एक लाख कार्षापणों में बदल दें, बिना शस्त्र के सारे शत्रुओं को मरवा दें, केवल एक शरीर वाले पुरुष को भी चक्रवर्ती बना दें। तब वह इनसे पूछता है—'वह मार्ग कौन सा है ?'

संस्कृत-व्याख्या—**एकामपि काकिणीम्** = वराटिकाम्, **कार्षापणलक्षम्** = कार्षापणानां मुद्राविशेषानां लक्षम्, **आपादयेम** = उत्पादयेम, अर्थशास्त्रबलात् एकयाऽपि काकिण्या कार्षापणलक्षकर्जयितुं प्रभवति नर इति भावः, **शास्त्रादृते** = शस्त्रं विना, **सर्वशत्रून्** = सर्वरिपून्, **घातयेम** = वधं कारयितुं शक्तुम्, **एकशरीरमात्रमपि** = एकं शरीरमात्रम्= देहमात्रम् अपि, **मर्त्यम्** = मनुष्यम्, **चक्रवर्तिनम्** = मर्त्यानां मनुष्याणां चक्रे मण्डले समूहे वा वर्तते प्राधान्येन चरतीति तया, **विदधीमहि** = कर्तुं शक्नुयाम, **आस्मदुद्दिष्टेन** = अस्याभिः प्रदर्शितेन, **मार्गेण** = विधिना, **आचर्यते** = अनुष्ठीयते त्वयेति शेषः, सः, **पुनः** = भूयः, **इमान्** = धूर्तान्, प्रति आह! कोऽसौ मार्गः।

व्यकरणात्मक टिप्पणी—**शस्त्रात् ऋते**—ऋते के योग में यहाँ 'शस्त्र' शब्द में पञ्चमी का प्रयोग हुआ है। **विदधीमहि**—वि+धा+विधिलिङ् लकार, उत्तमपुरुष बहुवचन। **उद्दिष्ट**—उत्+दिश् धावु+क्त।

(9) पुनरिमे ब्रुवते— 'ननु चतस्रो राजविद्याः—त्रयी वार्ताऽऽन्वीक्षिकी दण्डीतिरिति। तासु तिस्रस्त्रयीवार्तान्वीक्षिक्यो महत्यो मन्दफलाश्च। तास्तावदासताम्। अधीष्व तावद्दण्डनीतिम्। इयमिदानीमाचार्यविष्णुगुप्तेन मौर्यार्थे षड्भिः श्लोकसहस्रैः संक्षिप्ता। सैवेयमधीत्य सम्यगनुष्ठीयमाना यथोक्तकर्मक्षमा' इति। स *'तथा'* इत्यधीते शृणोति च। *तत्रैव जरां गच्छति। तत्तु किल शास्त्रं शास्त्रान्तरानुबन्धि। सर्वमेव वाङ्मयमविदित्वा न तत्त्वतोऽधिगंस्यते। भवतु कालेन बहुनाऽल्पेन वा तदर्थाधिगतिः।*

कठिन-शब्दार्थ—**ब्रुवते** = कहते हैं, **मन्दफलाश्च** = कम फल देने वाली, **आसताम्** = रहने दें, **अधीष्व** = पढ़ो, अध्ययन करो, **अनुष्ठीयमाना** = व्यवहार में लायी जाती हुई, **यथोक्तकर्मक्षमा** = उचित फल देने में समर्थ, **अधीते** = अध्ययन प्रारम्भ करता है, **जराम्** = वृद्धावस्था, **अनुबन्धि** = सम्बन्ध रखने वाला, **अधिगंस्यते** = समझ में आना, **अधिगतिः** = प्राप्ति।

हिन्दी-अनुवाद—तब वे कहते हैं—'निश्चर्य से चार ही राजविद्याएँ हैं—त्रयी (वेदविद्या), वार्ता (सम्पत्तिशास्त्र), आन्वीक्षिकी (तर्कशास्त्र) और दण्डनीति (अर्थशास्त्र)। उन में त्रयी, वार्ता और आन्वीक्षिकी—ये तीन बड़ी विस्तृत और अल्प (या देर में) फल (देने) वाली हैं। इसलिए उन्हें रहने दिया जाए। अतः दण्डनीति को पढ़ो। अब यह आचार्य विष्णुगुप्त द्वारा (चन्द्रगुप्त) मौर्य के लिए छः हजार श्लोकों में संक्षिप्त की गई

थी। वह ही यह पढ़ी जा कर और अच्छी प्रकार प्रयोग की हुई ऊपर कहे हुए कर्मों (के करने) में समर्थ होती है।' वह 'अच्छा' यह (कह कर उसे) पढ़ता है और सुनता है। उसी में वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है। निःसन्देह वह शास्त्र तो दूसरे शास्त्रों से सम्बद्ध है। सारे ही साहित्य को जाने बिना यथार्थ रूप से वह समझी भी नहीं जाती। मान लो, बहुत समय में अथवा थोड़े में ही उसके ज्ञान की प्राप्ति (हो जाती है)।

संस्कृत-व्याख्या—**पुनः** = भूयः, **इमे** = एते, **ब्रुवते** = कथयन्ति, **ननु** = निश्चयेन, **चतस्रः राजविद्याः** = चतुर्संख्याका राजनीतिसम्बन्धिनी विद्याः सन्ति, ताः खलु सन्ति—त्रयी, वार्ता, आन्वीक्षिकी, दण्डनीतिश्च, **तासु** = राजविद्यासु, **तिस्रः** = प्रथमतिस्रः, **त्रयी** = वेदत्रयी, **वार्ता** = अर्थशास्त्रम्, **आन्विक्षिकी** = न्यायशास्त्रम्, **महत्यो** = अति विशालाः, **मन्दफलाश्च** = निष्फल प्रायाश्च सन्ति। **ताः** = तिस्रविद्याः तावत्, **आसताम्** = तिष्ठन्तु, तावत् दण्डनीतिम्, **अधीष्व** = पठ, अध्ययनं कुरु वा, **इयम्** = दण्डनीतिः, **आचार्यविष्णुगुप्तेन** = आचार्य चाणक्येन, **मौर्यार्थे** = चन्द्रगुप्तमौर्यस्य कृते, षड्भिः श्लोक सहस्रैः, **संक्षिप्ता** = संक्षिप्तीकृता। **सैवेयमधीत्य** = सा एव इयम् दण्डनीतिः, **अधीत्य** = अध्ययनं कृत्वा, **सम्यगनुष्ठीयमाना** = सम्यक् आचर्यमाणा, **यथोक्तकर्मक्षमा** = अभीष्ट फलप्रदा, पूर्वप्रतिपादित कार्यकरण समर्था।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**मन्दफलाः**—मन्दं (स्वल्पं) फलं प्राप्ताः ता, मन्दफलाः (बहुव्रीहि)। **आसताम्**—आस् धातु लोट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन। **संक्षिप्ता**—सम्+क्षिप्+क्त+टाप्। **अनुष्ठीयमाना**—अनु+स्था+कर्मणि शानच्+टाप्। **यथोक्त कर्मक्षमा**—यथोक्तम् च तत् कर्म इति यथोक्त कर्म (कर्मधारय)।

विशेष—(i) चतस्र राजविद्या—चार प्रकार की राजविद्याएँ। ये निम्नलिखित हैं—1. त्रयी, 2. वार्ता, 3. आन्वीक्षिकी तथा 4. दण्डनीति। **त्रयी**–अर्थात् वेदत्रयी–तीनों वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद। **वार्ता**–अर्थात् गुप्तचर सम्बन्धी विज्ञान। **आन्वीक्षिकी**–वह विद्या जिसके द्वारा मनुष्य अपने आपको देखता है, अपनी जाँच करता है तथा अपने आपको समझता है। इस विद्या के अन्तर्गत तर्कशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र आते हैं। 'अनु ईक्ष्यते अनया विद्यया' इति आन्वीक्षिकी। 'दण्ड' का अर्थ है शासन, राज्य संचालन तथा 'दण्डनीति' कहते हैं 'राजनीति' को।

(10) स 'तथा' इत्यधीते शृणोति च। तत्रैव जरां गच्छति। तत्तु किल शास्त्रं शास्त्रान्तरानुबन्धि। सर्वमेव वाङ्मयविदित्वा न तत्त्वतोऽधिगम्यते। भवतु कालेन बहुनाऽल्पेन वा तदर्थाधिगतिः। अधीगतशास्त्रेण चादावेव पुत्रदारमपि न विश्वास्यम्। आत्मकुक्षेरपि कृते तण्डुलैरियद्भिरियानोदनः संपद्यते। इयत ओदनस्य पाकायैतावदिन्धन पर्याप्तमिति मानोन्मानपूर्वकं देयम्। उत्थितेन च राज्ञा क्षालिताक्षालिते मुखे मुष्टिमर्धमुष्टिंवाऽभ्यन्तरीकृत्य कृत्स्नमायव्ययजातमह्नः प्रथमेऽष्टमे वा भागे श्रोतव्यम्। शृण्वत एवास्य द्विगुणमपहरन्ति तेऽध्यक्षधूर्त्ताः। चत्वारिंशतं चाणक्योपदिष्टानाहरणोपायान्सहस्रधात्मबुद्धयैव ते विकल्पयितारः।

कठिन-शब्दार्थ—जराम् = वृद्धावस्था को, **शास्त्रान्तरानुबन्धि** = दूसरे शास्त्रों का अनुगमन करने वाला, **अविदित्वा** = बिना जाने, **न अधिगम्यते** = प्राप्त नहीं होगी, **पुत्रदारम्** = पुत्र तथा स्त्री, **न विश्वास्यम्** = नहीं विश्वास किया जाना चाहिए, **आत्मकुक्षे** = अपने पेट के लिए, **ओदनः** = भात, **क्षालिताक्षालिते** = धोये अथवा न धोये हुए, **अभ्यन्तरीकृत्य** = अन्दर करके अर्थात् पेट में डालकर, **कृत्स्नम्** = सम्पूर्ण, **आयव्ययजातम्** = आय तथा व्यय का समूह, **शृण्वत** = सुनते हुए, **अपहरन्ति** = अपहरण कर लेते हैं, **आहरणोपाय** = चोरी के उपाय।

हिन्दी-अनुवाद—वह (धनी व्यक्ति) 'ठीक है' ऐसा कहकर (वह दण्डनीति) पढ़ने तथा सुनने लगता है। इसी में वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है। (जब वह शिष्य दण्डनीति के मंथन से घबराता है तो धूर्त उसे समझाता है:—)वह शास्त्र अन्य शास्त्रों से सम्बन्धित है; अत: बिना सम्पूर्ण शास्त्रों को जाने वह ठीक-ठीक समझ में नहीं आता। मान लो, अधिक या थोड़े समय में उसकी प्राप्ति हो भी गयी तो शास्त्र (दण्डनीति अथवा राजनीति) पढ़ लेने वाले (व्यक्ति) के द्वारा सर्वप्रथम, पुत्र तथा स्त्री भी विश्वास योग्य नहीं रह जाती है। अपने पेट के लिए भी 'इतने चावलों से इतना भात तैयार होता है, इतने भात को पकाने के लिए इतना ईंधन पर्याप्त है', इस भाँति तौल नापकर (वस्तुएँ) दी जाने लगा करती हैं। (सूर्योदय से पूर्व) उठकर राजा को धुले अथवा न धुले मुख में ही, एक अथवा आधी मुट्ठी (अन्न) अन्दर करके (पेट में डालकर) राज्य के सम्पूर्ण आय-व्यय का हिसाब दिन के पहले आठवें पहर में (सुनना चाहिए) सुनना पड़ा करता है। चाणक्य द्वारा बतलाये गये हुए, चोरी के चालीस प्रकार के उपायों को अपनी बुद्धि से हजारों प्रकार का बना लेने वाले वे धूर्त (अध्यक्ष) उस (राजा) के सुनते ही सुनते दूना धन अपहरण कर (ही) लिया करते हैं।

संस्कृत-व्याख्या—सः = नृपः, धनीजनो वा, **तथा** = तथैवास्तु। इति कथयित्वा दण्डनीतिं अधीते शृणोति च, **तत्रैव** = दण्डनीत्यध्ययने एव, **जरां गच्छति** = वृद्धत्वं प्राप्नोति, (यदा सः शिष्यः दण्डनीतेः मन्थनात् उद्विग्नो भवति तदा धूर्तः तस्मै उपदिशति) तत्तु किल शास्त्रम्, **शास्त्रान्तरानुबन्धि** = अन्यशास्त्रापेक्षि। **अतः सर्वमेव** = अखिलमेव, **वाङ्मयमविदित्वा** = शास्त्रं, अविदित्वा = अज्ञात्वा, **तत्त्वतः** = वस्तुतः, **न अधिगम्यते** = न प्राप्स्यते, **भवतु** = अस्तु, **बहुना अल्पेन वा कालेन** = चिरकालेन न्यूनेन कालेन वा, **तदर्थाधिगतिः** = तदर्थबोधः, राजनीतिशास्त्रस्य अध्ययनं सम्पन्नम्, **अधिगतशास्त्रेण** = अधीत राजनीतिशास्त्रेण, **चादावेव** = आदौ = प्रथमम् एव, **पुत्रदारमपि** = पुत्रकलत्रम्, **न विश्वास्यम्** = न विश्वसनीयम्, **आत्मकुक्षेरपि** = स्वोदरस्थ, **कृते** = निमित्तम्, **इयद्भिः** = एतावद्भिः तण्डुलैः, **इयान् ओदनः** = भोज्यान्न विशेषः, **सम्पद्यते** = सम्पन्नः भवति। **इयत ओदनस्य** = तण्डुलस्य, **पाकाय** = इन्धनाय, **एतायत इन्धनम्** = इयत् काष्ठम्, **पर्याप्तम्** = युज्यतो इति, **मानोमानपूर्वकं** = मानं प्रस्थादिकृतम्, **उन्मानं** = तुलादण्डकृतम्, तत्पूर्वकम्, **देयम्** = प्रदेयम्, दातव्यम् वा (सूर्योदयात् पूर्वं), **उत्थितेन** = जागृतेन, **राज्ञा** = नृपतिना, **क्षालिताक्षालिते** = कार्य त्वहृया किञ्चित् क्षालिते किञ्चिद क्षालिते, **मुखे** = आनने, **मुष्टिम्** = मुष्टिमात्रं अन्नं अर्धमुष्टिं वा, **अभ्यन्तरीकृत्य** =

निक्षिप्य गिलित्वेति भावः, **कृत्स्नम्** = सम्पूर्णम्, **आयव्ययजातम्** = आय व्ययस्य विवरणम्, **अह्नः** = दिवसस्य, **प्रथमेऽष्टमे भागे** = प्रथमाष्टमे भागे, **श्रोतव्यम्** = श्रवणीयम्। **शृण्वन्तः एव अस्य** = शृण्वन्तं राजानं अनादृत्य, **अस्य** = नृपस्य, **अध्यक्षधूर्ताः** = धूर्ताः राजकर्मचारिणः, **क्रियणम्** = द्विगुणितम्, **अपहरन्ति** = अपहरणं कुर्वन्ति, चोरयन्ति, **चत्वारिंशतमित्यादि चाणक्येन** = चत्वारिंशत्संख्याका एयाहर-गोपापा उपदिष्टास्ते तु स्वबुद्धिबलेन सहस्रप्रकारानाहरणोपायान् कल्पयेयुरित्यर्थः।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—सर्वशास्त्रानुबन्धि—सर्वाणि च तानि शास्त्राणि इति सर्वशास्त्राणि (मयूर व्यंसकादि)। तानि अनुबध्नाति तच्छीलम् इति शास्त्रानुबन्धि। **अविदित्वा**—नञ्+विद्+क्त्वा। **अधिगम्यते**—अधि+गम्+कर्मणि लृट्। **बहुना अल्पेन वा कालेन**—यहाँ 'अपवर्गे तृतीया' नियम से तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है। **अधिगत शास्त्रेण**—अधिगतानि शास्त्राणि येन सः अधिगत शास्त्रः तेन (बहुव्रीहि)। **पुत्रदारम्**—पुत्राश्च दाराश्च एतेषां समाहारः पुत्रदारम्। **विश्वास्यम्**—वि+शस्+णिच्+ण्यत्। **आत्मकुक्षेः**—आत्मनः कुक्षिः इति आत्मकुक्षिः, तस्य आत्मकुक्षेः (षष्ठी तत्पुरुष)। **मानोन्मानपूर्वकम्**—मानं च उन्मानं च इति मानोन्माने (द्वन्द्व) मानोन्माने पूर्वं यस्मिन् कर्माण तद् मया स्यात् तथा मानोन्मानपूर्वकम्। **देयम्**—दा+यत्। **उत्थितेन**—उत्+स्था+क्त। **क्षालिताक्षालिते**—क्षालितं वा अक्षालितं वा इति क्षालिता क्षालितम् तस्मिन् क्षालिताक्षालिते। **आयव्ययजातम्**—आयश्च व्ययश्च इति आयव्ययौ तयोः जातम् समूहः इति आयव्ययजातम्। **शृण्वतः**—श्रृ धातु+शतृ प्रत्यय। **द्विगुणम्**—कौ गुणौ यस्य यस्मिन् वा तत् द्विगुणम् (बहुव्रीहि)। **आहरण**—आ+हृ+ल्युट्। **आहरणोपायान्**—आहरणस्य उपायाः इति आहरणोपायाः तान् आहरणोपायान् (षष्ठी तत्पुरुष)। **विकल्पभितारः**—वि+कल्प्, लुट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन।

(11) द्वितीयेऽन्योन्यं विवदमानानां प्रजानामाक्रोशाद्दह्यमानकर्णः कष्टं जीवति। तत्रापि प्राड्विवाकादयः स्वेच्छया जयपराजयौ विदधानाः पापेनाकीर्त्या च भर्तारमात्मनंचार्थैर्योजयन्ति। तृतीये स्नातुंभोक्तुं च लभते। भुक्तस्य यावदन्धः परिणामस्तावदस्य विषभयं न शाम्यत्येव। चतुर्थे हिरण्यप्रतिग्रहाय हस्तं प्रसारयन्नेवोत्तिष्ठति। पञ्चमे मन्त्रचिन्तया महान्तमायासमनुभवति। तत्रापि मन्त्रिणो मध्यस्था इवान्योन्यं मिथः सम्भूय, दोषगुणौ दूतचारवाक्यानि शक्याशक्यतां देशकालकार्यावस्थाश्च स्वेच्छया विपरिवर्त्तयन्तः, स्वपरमित्रमण्डलान्युपजीवन्ति। बाह्याभ्यन्तरांश्च कोपान् गूढमुत्पाद्य प्रकाशं प्रशमयन्त इव स्वामिनमवशमवगृह्णन्ति।

कठिन-शब्दार्थ—विवदमानाम् = झगड़ा करती हुई, **आक्रोशात्** = चिल्लाहट से, **दह्यमानकर्णः** = जले जाते हैं कान जिसके ऐसा राजा, **विदधानाः** = करते हुए, **अपकीर्त्या** = बदनामी से, **प्रतिग्रहाय** = लेने के लिए, **प्रसारयन्नेव** = फैलाये हुए ही, **आयासम्** = महान् क्लेश, **सम्भूय** = मिलकर, **उपजीवन्ति** = जीवन निर्वाह किया करते हैं, **प्रशमयन्तः इव** = शान्ति प्राप्त कराते हुए के सदृश, **अवशम** = निस्सहाय, **अवगृह्णन्ति** = अनादर किया करते हैं।

हिन्दी-अनुवाद—दूसरे प्रहर में परस्पर लड़ती-झगड़ती हुई प्रजाओं के शोरगुल से (राजा का) कान जल (सुनते-सुनते) जाता है (और इस भाँति वह) कष्टपूर्वक जीता है। वहाँ भी न्यायकर्त्ता (अफसर लोग) अपनी इच्छानुसार, जीत तथा हार के फैसलों को सुनाते हुए राजा को पाप तथा अपकीर्ति से और अपने को धन से जीत लेते हैं (अर्थात् वे अफसर लोग खूब रिश्वत ले लेकर अपना घर भरते हैं तथा बेचारा राजा व्यर्थ में ही अपयश और पाप का भागी बना करता है)। तृतीय प्रहर में स्नान तथा भोजन कर पाता है। खाना खा चुकने के पश्चात् भी जब तक अन्न का पाचन नहीं हो जाता तब तक उसके (राजा) मन से विष का भय शान्त नहीं होता है (अर्थात् जब तक भोजन ठीक रूप में पच नहीं जाता तब तक राजा के मन में यह चिन्ता लगी ही रहा करती है कि कहीं किसी ने भोजन में विष तो नहीं मिला दिया)। चतुर्थ प्रहर में स्वर्ण (राज-कर) लेने के निमित्त उसे हाथ फैलाये हुए ही उठना पड़ा करता है। पाँचवें में विचार-विमर्श की चिन्ता (मन्त्रियों से सलाह लेने की चिन्ता) से अत्यन्त कष्ट का अनुभवन करना पड़ा करता है। वहाँ भी मन्त्री मध्यस्थ लोगों के सदृश, आपस में मिलकर, दोष तथा गुणों को, राजदूत तथा गुप्तचरों की बातों को (कार्यों आदि की) साध्यता और असाध्यता को, देश, काल तथा कार्य की अवस्था को अपनी इच्छा के अनुसार परिवर्तित करते हुए (राजा का उल्टा-सीधा समझते हुए) अपने मित्रों के धन पर तथा अपने शत्रुओं के मित्रों के धन पर जीवन निर्वाह किया करते हैं। बाहरी तथा भीतरी क्रोधों (झगड़ों) को छिपे हुए रूप में उत्पन्न कर प्रकट रूप में (झगड़ों) को शान्त-सा करते हुए राजा को विवश करके अपने चंगुल में फँसाये रखा करते हैं।

संस्कृत-व्याख्या—द्वितीये = दिवसस्य द्वितीय भागे, अन्यस्मिन् अष्टमे भागे, **अन्योन्यम्** = परस्परम्, **विवदामानाम्** = कलहमानाम्, **प्रजानाम्** = जनानाम्, **आक्रोशात्** = चीत्कार शब्दात्, **दह्यमानकर्णः** = दह्यमानौ कर्णौ यस्य सः, **कष्टं** = कष्टपूर्वकम्, **जीवति** = जीवनं यापयति। **तत्रापि** = विवादेषु अपि, **प्राड्विवाकादयः** = व्यवहार दुष्टा 'जज' इति भाषा, **स्वेच्छया** = निजेच्छया, **जयपराजयौ** = जयः = विजयः, पराजयश्च, **विदधानाः** = कुर्वाणाः पापेन निन्दया च, **भर्त्तारं** = स्वामिनं, योजयन्ति, **आत्मनः** = स्वान्, **अर्थै** = धनैः, **योजयन्ति** = पूर्णान् कुर्वन्ति। **तृतीये** = दिवसस्य तृतीय भागे, **स्नातुं** = स्नानं कर्तुम्, **भोक्तुम्** = भोजनादि कर्तुं च, **न लभते** = समयो न मिलति। **भुक्तस्य** = भुक्तवतः, **यावदन्धः परिणामः** = अन्नपरिपाकः, **तावद्** = तायत कालपर्यन्तम्, **विषभयं** = विषात् भयम्, गरल शंकाम्, **न शाम्यतेव** = न दूरी भवति, **चतुर्थे** = चतुर्थे अष्टमे भागे, **हिरण्यप्रतिग्रहाय** = प्रजाभ्यो धनग्रहणाम, **हस्तं** = कर, **प्रसारयन्नेव** = प्रसारयन् एव उत्तिष्ठति, **पञ्चमे** = पञ्चमे अष्टमे भागे, **मन्त्र चिन्तया** = अमात्यैः सह मन्त्रणायाम्, **महान्तम्** = अत्यधिकं, **आयासाम्** = कष्टं, **अनुभवति** = अनुभवं करोति, **तत्रापि** = तस्मिन्नपि, **मन्त्रिणो** = अमात्याः, **मध्यस्था इवः** = उदासीन इव, **अन्योन्यं** = परस्परम्, **सम्भूय** = मिलित्वा, **दोषगुणौ** = हानिलाभौ **दूतचारवाक्यानि** = गुप्तचर वाक्यानि, **शक्याशक्यताम्** = शक्यं च अशक्यं च इ **शक्याशक्ये सम्भवाऽसम्भवे**, **देशकालकार्यावस्थाश्च** = स्थानसमयकार्यावस्थाश्च

स्वेच्छया = निजेच्छया, **विपरिवर्त्तयन्तः** = विपर्यासयन्तः, **स्वपरमित्रमण्डलानि** = स्वपरेति स्वस्य परस्य मित्राणाञ्च मण्डलानि उपजीवन्ति आश्रयन्ते। **बाह्याभ्यन्तरांश्च** = बाह्याश्च आभ्यन्तराश्च इति बाह्याभ्यन्तराः तान् बाह्यान् प्रजाः, आभ्यन्तरान् अमात्यादींश्च, **कोपान्** = क्रोधान्, **गूढं** = गुप्तरुपेण, **उत्पाद्य** = उत्पन्नं कृत्वा, **प्रकाशम्** = सर्वेषां समक्षम्, **प्रशमयन्तः** = शान्तिं प्रापयन्तः, **स्वामिनम्** = राजानम्, **अवशम् अवगृह्णन्ति** = निःसहायं कृत्वा स्ववशे कुर्वन्ति।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—विवदमानानां—वि+वद्+शानच्+टाप्। **आक्रोशात्**—आ+क्रुश्+घञ्। **दह्यमानकर्णः**—दह्यमानौ कर्णौ यस्य सः (बहुव्रीहि)। **प्राड्विवाकादयः**—पृच्छति इति प्राड् अथवा प्राट् विविनक्ति इति विवाक् च इति प्राड्विवाकौ तौ आदौ येषां ते प्राड्विवाकादयः (बहुव्रीहि)। **भुक्तस्य**—भुक्तं अस्यास्तीतिः भुक्तः, तस्य। भुग्+क्त। **परिणामः**—परि+नम्+घञ्। **विषभयम्**—विषात् भयम् इति विषभयम् (पञ्चमी तत्पुरुष)। **हिरण्यप्रतिग्रहाय**—हिरण्यस्य परिग्रहः इति हिरण्यप्रतिग्रहः तस्मै (षष्ठी तत्पुरुष)। **दूतचार वाक्यानि**—दूताश्च चाराश्च इति दूत चाराः (द्वन्द्वसमास) तेषां वाक्यानि इति (षष्ठी तत्पुरुष समास)। **दोषगुणौ**—दोषाश्च गुणश्च इति दोषगुणौ (द्वन्द्व)। **आयासम्**—आ+यस्+घञ्। **शक्याशक्यताम्**—शक्यं च अशक्यं च इति शक्याशक्ये (द्वन्द्व) तयोः भावः शक्याशक्यताम्। **देशकालकार्यावस्थाश्च**—देशश्च कालश्च कार्यञ्च इति देशकाल कार्याणि (द्वन्द्व) तेषां अवस्थाः इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **स्वपरमित्रमण्डलानि**—मित्राणां मण्डलानि इति मित्र मण्डलानि इति (षष्ठी तत्पुरुष), स्वेषां मित्रमण्डलानि अथ च परेषां मित्रमण्डलानि इति स्व-पर मित्र मण्डलानि। **बाह्याभ्यन्तरान्**—बहिः भवाः बाह्याः अभ्यन्तरे भवाः आभ्यन्तराः बाह्याश्च आभ्यन्तराश्च इति बाह्याभ्यन्तराः (द्वन्द्व) तान्। **विपरिवर्तयन्तः**—वि+परि+वृत्+णिच् शत्। **प्रशमयन्तः**—प्र+शम्+णिच्+शतृ।

विशेष—(i) द्वितीये—दिन का द्वितीय भाग अर्थात् दूसरे आठवें भाग में दिन तथा रात्रि का यदि समान रूप से विभाजन कर लिया जाये तो दिन 12 घण्टे का होगा अर्थात् प्रातः 6 बजे से सायं 6 बजे तक। 12 घण्टे का दिन का आठवाँ भाग 1 1/2 घण्टे का होगा। इस आधार पर प्रथम आठवाँ भाग 6 से 7 1/2 बजे तक तथा दूसरा आठवाँ भाग 7 1/2 से 9 बजे तक का होगा।

(ii) प्राट्—राजा के दरबार में कुछ ऐसे अधिकारी हुआ करते थे जो वादी तथा प्रतिवादी से सारी बातें पूछते थे, उन्हें 'प्राट्' कहते थे।

(iii) विपाक्—उसके बाद वे ही विवेचना करते थे तथा निर्णय देते थे। इससे उन्हें 'विपाक्' कहते थे।

(iv) विषभयम्—विष से भय। **कामन्दकनीतिसार** में कहा गया है कि निम्नलिखित वस्तुओं से सदैव विष की आशंका रहा करती है—

याने, शय्यासने, पाने, भोज्ये, वस्त्रे, विभूषणे।
सर्वत्रैवा प्रमत्तः स्याद् वर्जयेत् विषदूषितम्।।

(12) षष्ठे स्वैरविहारो मन्त्रो वा सेव्यः। सोऽस्यैतावान्स्वैरवि हारकाला यस्य तिस्रस्त्रिपादोत्तरा नाडिकाः सप्तमे चतुरङ्गबलप्रत्यवेक्षणप्रयासः। अष्टमेऽस्य सेनापतिसखस्य विक्रमचिन्ताक्लेशः। पुनरूपास्यैव संध्याँ, प्रथमे रात्रिभागे गूढपुरुषा द्रष्टव्या। तन्मुखेन चातिनृशंसाः शस्त्राग्निरसप्रणिधयोऽनुष्ठेयाः। द्वितीये भोजनानन्तरं श्रोत्रिय इव स्वाध्यायमारभेत। तृतीये तूर्यघोषेण संविष्टश्चतुर्थपञ्चमौ शयीत किल। कथमिवास्याजस्रचिन्तायासविह्वलमनसो वराकस्य निद्रासुखमुपनमेत्? पुनः षष्ठे शास्त्रचिन्ताकार्यचिन्तारम्भः। सप्तमे तु मन्त्रग्रहो दूताभिप्रेषणानि च, दूताश्च नामोभयत्र प्रियाख्यानलब्धानर्थान् वीतशुल्कबाधवर्त्मनि वाणिज्यया वर्धयन्तः कार्यमविद्यमानमपि लेशेनोत्पाद्यानवरतं भ्रमन्ति।

कठिन-शब्दार्थ—स्वैरविहारः = अपनी इच्छानुसार मनोरंजन करना, **नाडिकाः** = घड़ी, **चतुरंगबलं प्रत्यवेक्षण** = चतुरंगिणी सेना का निरीक्षण, **विक्रमचिन्ताक्लेशः** = विक्रम पराक्रम दिखाने की चिन्ता का कष्ट, **गूढपुरुषाः** = गुप्तचर, **रसप्रणिधयः** = विषदाताओं की छिपी हुई चेष्टाओं का पता लगाने वाले, **प्रणिधयः** = गुप्तदूत, **अनुष्ठेयाः** = नियुक्ति करनी चाहिए, **तूर्यघोषेण** = बाजों की आवाज के साथ, **विह्वलमनसः** = व्याकुल मन वाला, **वराकस्य** = बेचारे का, **दूताभिप्रेषणानि** = दूतों को भेजना, **उभयत्र** = दोनों स्थानों में, **आख्यान** = बातें, **लेशेन** = कपट या छल से।

हिन्दी-अनुवाद—छठे पहर में या तो स्वेच्छापूर्वक विहार करना चाहिए (विहार कर सकता है) अथवा परामर्श (सम्पत्ति आदि) का सेवन करना चाहिए (सेवन करे)। उनके स्वेच्छाविहार (मनोरंजन) का यह इतना ही समय होता है जिसकी 3 नाड़ी (घड़ी) अवधि होती है। सातवें (पहर) में चतुरङ्गिणी सेना का निरीक्षण करते रहने का प्रयास करना पड़ा करता है। (आठवें पहर) में सेनापति के साथ विक्रय की चिन्ता का कष्ट उठाना पड़ा करता है। (राजाओं के लिए यह परमावश्यक होता है कि वे प्रधान सेनापति को अपना मित्र बनाये रखें तथा अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहें, क्योंकि उनको यह सोचना पड़ा करता है कि उन्हें किस राजा के ऊपर कब तक किस प्रकार से आक्रमण करना चाहिए ताकि उनकी शक्ति बढे)। फिर सायंकालीन संध्या-पूजन करके रात्रि के प्रथम पहर में गुप्तचरों को देखना चाहिए (अर्थात् उनसे मिलकर आवश्यक वार्तालाप किया जाना चाहिए तथा उनके कार्यों को भी देखा जाना चाहिए और उन्हीं के द्वारा अत्यन्त क्रूर, दुराचारियों के शस्त्र प्रहार, अग्निदाहकों और विषदाताओं की गूढ. चेष्टाओं के प्रतिकार के निमित्त दूत नियुक्त किए जाने चाहिए।)। दूसरे पहर भोजन के पश्चात् वेदपाठी छात्र की भाँति (वह) स्वाध्याय (अपना अध्ययन) प्रारम्भ कर देता है (अर्थात् वह पुस्तकें लेकर शास्त्रों का मनन करे)। तीसरे पहर वाद्यों (बाजों) के साथ सोया हुआ (वह) चौथे और पाँचवें पहर तक सोवे (राजाओं के शयन के लिए जाते समय बाजे बजा करते हैं जिससे जनता को ज्ञात हो जाये कि अब राजा साहब सोने के लिए गए। निरन्तर चिन्ता के क्लेश से व्याकुल उस

15. राजा रात के आठों पहरों का वर्णन करें।

बेचारे के पास किस भाँति निद्रा का सुख आवे?) फिर छठे पहर में शास्त्र के चिन्तन करने तथा कार्यों की चिन्ता का आरम्भ हो जाता है सातवें पहर में अमात्यों के साथ विचार-विनिमय करके दूतों को भेजने का कार्य उपस्थित होता है और दूत लोग दोनों स्थानों पर (अपने यहाँ तथा शत्रु राजाओं के यहाँ)—मीठी-मीठी बातों द्वारा प्राप्त किऐ हुए धन को, शुल्क (महसूल) की बाधा से रहित मार्ग द्वारा व्यापार द्वारा वृद्धि का प्राप्त करते हुए, कार्यरत होने पर भी कपट-छल से नये-नये कार्यों को उत्पन्न कर (अथवा कार्यों की व्यवस्था कर) निरन्तर भ्रमण किया करते हैं।

संस्कृत-व्याख्या—षष्ठे = षष्ठे अष्टमे भागे, **स्वैरविहारः** = स्वच्छन्द विहरणम् (कर्तव्यम्), **वा** = अथवा, **मन्त्रः सेव्यः** = मन्त्रणा कार्या। सोऽयं स्वैर विहारकालः एतावान् एव भवति, **तिस्र स्त्रिपादोत्तर नाडिकाः** = त्रिपादोत्तराः त्रिपादधिकाः, **नाडिकाः** = घटिकाः भवन्ति। **सप्तमे** = दिवसस्य सप्तमे भागे, **चतुरङ्गबलप्रत्यवेक्षणप्रयासः** = चत्वारि अङ्गानि विद्यन्ते यस्मिन् तत् चतुरङ्गम्, चतुरङ्गं च तद्बलम् इति चतुरङ्गबलम्, तस्य प्रत्यवेक्षणम् चतुरंग बल प्रत्यवेक्षणम्, तस्य प्रयासः इति चतुरंगबल प्रत्यवेक्षण प्रयासः = हस्त्यश्वर च पदाति लक्षणस्य, **प्रत्यवेक्षणं** = परीक्षणं तस्य, **प्रयासः** क्लेशः। **अष्टमे** = दिवसस्य अष्टमे भागे, **सेनापतिसखस्य** = सैन्याक्षेण सहेत्यर्थ। **विक्रमचिन्ता क्लेशः** = पराक्रम प्रदर्शनस्य चिन्तायाः, **क्लेशः** = कष्टः, **पुनःरूपास्यैव सन्ध्याम्** = सन्ध्योपासनं कृत्वा, **प्रथमे** = आद्यं, **रात्रिभागे** = रात्र्यंशे, **गूढपुरुषाः** = गुप्त पुरुषा, गुप्तचरजनाः, **द्रष्टव्याः** = दर्शनीयाः, **तन्मुखेन** = तेषां आननेन, **चातिनृशंसाः** = अतिक्रूरा, **शास्त्राग्नि रस प्रणिधयः** = शस्त्रेण, अग्निना रसेन = विषेण च हन्तारः प्रणिधयो गुप्तदूताः, **अनुष्ठेयाः** = कर्त्तव्याः प्रयोज्याः इति भावः, **द्वितीये** = रात्रौ द्वितीयप्रहरे, **भोजनानन्तरं** = भोजनं पश्चात्, **श्रोत्रिय इव** = वेदपाठी इव, **स्वाध्यायम्** = ब्रह्मतत्त्व चिन्तनं, **आरंभेत** = प्रारम्भेत, **तृतीये** = तृतीये भागे, तृतीय प्रहरे वा, **तूर्यघोषेण** = नृपस्य समय सूचकेन बाद्यध्वनिना, **संविष्टः** = शयितः, चतुर्थपञ्चमौ भागे शयनं कुर्यात्, **कथम् इव** = केन प्रकारेण, **अस्य** = वराकस्य दीनस्य नृपस्य, **अजस्रचिन्तायास विह्वलमनसः** = निरन्तरम् अधिव्याकुल चेतसः, **निद्रासुखम्** = निद्रायाः सुखम् इति निद्रा सुखम्, **उपनमेत्** = आगच्छेत् अर्थात् व्याकुलमानसः सः सुखपूर्वकं शायितु मपि समर्थो न भवति, **पुनः षष्ठे** = **षष्ठे** प्रहरे, **शास्त्रचिन्ताकार्यचिन्तारम्भः** = शास्त्र सम्बन्धिनी चिन्तनस्य कार्य विषये मन्त्रणा प्रारभ्यते। **सप्तमे** = सप्तमे प्रहरे तु, **मन्त्रगुहो** = सचिवेभ्यो मन्त्रणायाः आदानम्, **दूताभि प्रेषणानि** = दूतानां गुप्तचराणां, **प्रेषणानि** = अभि प्रेषणानि (कियंते), **दूताश्च** = गुप्तचराश्च, नाम, **उभयत्र** = उभयोः स्थानयो, स्व स्वामिनः स्थाने यत्र च ते प्रेषिता। तत्र, **प्रियाख्यान्** = मधुरवचनान्, **लब्धान्** = प्राप्तान्, **अर्थान्** = धनानि, **वीत-शुल्क-बाध-वर्त्म** = निवीता राजकीय पुरुषोऽयमिति कृत्या अपगता शुल्कस्य भाषायां 'मासूल' इति व्याप्तस्य बाधा यत्र तादृशे, **वर्त्मनि** = मार्गे, **वाणिज्यया** = व्यपारेण, **वर्धयन्तः** = वृद्धि प्रापयन्तः, **कार्यं**, **अविद्यमानमपि** = न स्थितं सति, **लेशेन** = कपटेन, **उत्पाद्य** = उत्पन्नं कृत्वा, **अनवरतं** = सततं, **भ्रमन्ति** = भ्रमणं कुर्वन्ति।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—निद्रासुखम्—निद्राया: सुखम् इति निद्रा सुखम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **दूताभिप्रेषणानि**—दूतानां अभिप्रेषणानि इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **क्रियाख्यान लब्धान्**—प्रियं च तदाख्यानं इति प्रियाख्यानम् (कर्मधारय) तै: लब्धा: इति प्रियाख्यान लब्धा (तृतीया तत्पुरुष) तान्। **वीतशुल्कबाध वर्त्मनि**—शुल्कस्य बाधा इति शुल्क बाधा (षष्ठी तत्पुरुष) वीता शुल्क बाधा यस्मिन् तत् वीत शुल्क बाधम् (बहुव्रीहि) वीत शुल्कबाधं चैतत् वर्त्म (इति कर्मधारय) वीतशुल्कबाध वर्त्म तस्मिन्। **वाणिज्यया**—वणिज: भाव: वाणिज्यम् तया। **वर्धयन्त:**—वृध्+णिच्+शतृ प्रथमा विभक्ति के बहुवचन का रूप। **उत्पाद्य**—उत्+पद्+णच्+ल्यप्।

(13) अष्टमे पुरोहितादयोऽभ्येत्यैनमाहु: ''अद्य दृष्टो दु:स्वप्न/दु:स्थाग्रहा:, शकुनानि चा शुभानि। शान्तय: क्रियन्ताम्। सर्वमस्तु सौवर्णमेव होमसाधनम्। एवं सति कर्म गुणवद् भवति। ब्रह्मकल्पा इमे ब्राह्मणा:। कृतमेभि: स्वस्त्ययनं कल्याणतरं भवति। ते चामी कष्टदारिद्र्या बहुपत्या यज्वानो वीर्यवन्तश्चाद्याप्यप्राप्तप्रतिग्रहा:। दत्तं चैभ्य: स्वर्ग्यमायुष्मरिष्टनाशनं च भवति'' इति बहु-बहु दापयित्वा तन्मुखेन स्वयमुपांशु भक्षयन्ति। तदेवमहर्निशमविहितसुखलेशमायासबहुलमविरलकदर्थनं च नयतोनयज्ञस्यास्तां चक्रवर्तिता स्वमण्डलमात्रमपि दुरारक्ष्यं भवेत्। शास्त्रज्ञसमाज्ञातो हि यददाति, यन्मानयति, यत् प्रियं ब्रवीति, तत्सर्वमतिसंधातुमित्यविश्वास:। अविश्वास्यता हि जन्मभूमिरलक्ष्म्या:। यावता च नयेन विना याति लोकयात्रा से लोकत एव सिद्ध:। नात्र शास्त्रेणार्थ:। स्तनंधयोऽपि हि तैस्तैरूपायै: स्तनपानं जनन्या लिप्सते, तदपास्यातियन्त्रणामनुभूयन्तां यथेष्टमिन्द्रियसुखानि।

कठिन-शब्दार्थ—अमेत्य = समीप जाकर, **स्वस्त्यनम्** = मंगल पाठ, **बह्वपत्या:** = अनेक सन्तानों से युक्त, **यज्वान:** = यज्ञ करने वाले, **वीर्यवन्त:** = पराक्रमशाली, **अप्राप्तप्रतिग्रहा:** = जिन्होंने आज तक दान प्राप्त नहीं किया है, **अरिष्ट नाशनम्** = दुर्भाग्य का नाशक, **दाययित्वा** = दिलाकर, **अहर्निशम्** = दिन-रात, **उपांशु** = एकान्त में, **आयास बहुलम्** = अत्यधिक कष्ट से परिपूर्ण, **अविरल कदर्थनम्** = सतत परेशानी को सहन करते हुए, **स्वमण्डलमात्रम्** = केवल अपना राज्य, **दुरारक्ष्यम्** = जिसकी रक्षा अति कठिनता से की जा सके, **अतिसन्धातुम्** = ठगने के लिए, **स्तनंधय:** = स्तन पान करने वाले भी, **लिप्सते** = प्राप्त करने की इच्छा करता है, **अपास्य** = दूर करके, **अतियंत्रणाम्** = महान् कष्ट को, **अनुभूयन्ताम्** = अनुभव की जाये।

हिन्दी-अनुवाद—आठवें पहर में पुरोहित आदि उसके (राजा के) पास आकर कहते हैं—''आज मैंने एक बड़ा खराब स्वप्न देखा है। (इस समय) नक्षत्र बुरे पड़े हैं और शकुन (भी) अशुभ हुए हैं (अत: यज्ञ इत्यादि के द्वारा इनका) शमन किया जाना चाहिए। होम (यज्ञ) की सम्पूर्ण सामग्री स्वर्ण की होवे (होनी चाहिए) ऐसा होने पर काम (फल) सार्थक हुआ करता है। ये ब्राह्मण ब्रह्म के सदृश हैं। इनके द्वारा किया गया स्वस्त्यय बड़ा कल्याणकारी होता है (होगा) ये कष्ट तथा दरिद्रता का अनुभव कर रहे हैं, (ये) अनेक बाल-बच्चों वाले, यज्ञ करने वाले (बड़े) पराक्रमी हैं तथा इन्होंने आज तक दान भी (किसी से) नहीं लिया है। इनको दिया हुआ दान स्वर्ग प्रदाता, आयुवर्द्धक तथा अरिष्ट (दुर्भाग्य)

नाशक होता है (होगा)। इस प्रकार कह कर बहुत सा धन दिलाकर उनके द्वारा स्वय ही एकान्त मे खा जाया करते है। तब इस प्रकार रात-दिन, थोड़ा (तनिक) भी दुःख प्राप्त किये बिना, क्लेशों (मुसीबतों अथवा परेशानियों से परिपूर्ण) से भरा हुआ, सतत् कष्टों से युक्त जीवन को व्यतीत करने वाले नीतिज्ञ राजा की चक्रवर्तिता तो दूर रही, (उस बेचारे राजा के लिए तो) अपने राज्य की ही रक्षा करना कठिन हो जाता है। शास्त्रज्ञ नामक प्रसिद्ध पुरुष जो भी (शास्त्रानुसार परामर्श) देते हैं, जो (कुछ) भी (राजा) का सम्मान करते हैं, जो भी प्रिय वचन बोलता है (चिकनी चुपड़ी) बातें बनाते हैं। ये सब (कार्य उन भोले-भाले राजाओं को) ठगने के लिए होता है; अतएव उन पर विश्वास नहीं होता है। (अपने ऊपर लोगों का) विश्वास न होना अलक्ष्मी (दरिद्रता) की जन्मभूमि है (अर्थात् जहाँ विश्वास नहीं रहता है वहाँ दारिद्र्य का आगमन अनिवार्य हो जाता) है। जितनी नीति के बिना जीविका (लोकयात्रा) नहीं चल पाया करती उतनी नीति तो संसार से ही ज्ञात हो जाती है। उसके लिए शास्त्र से क्या प्रयोजन? (अर्थात् शास्त्र पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं हुआ करती है)। (अपनी माँ का दूध पीने वाला) बच्चा उन-उन उपायों (भिन्न भिन्न उपायों) के द्वारा अपनी माँ का स्तन पान करने की इच्छा करता ही है, अतः अनियन्त्रण (अत्यधिक कष्टों, परेशानियों) का त्याग कर अपनी इच्छानुसार इन्द्रियजनित सुखों को भोगिये (अनुभव कीजिए)।''

संस्कृत-व्याख्या—अष्टमे = अष्टमे प्रहरे, **पुरोहितादयः** = राजपुरोहितादयः, **एनम्** = राजानम्, **अभ्येत्य** = समीपं गत्वा, **आहुः** = कथयन्ति, **अद्य दुःस्वप्नः** = दुष्टः स्वप्नः, **दृष्टः** = अवलोकितः। **दुःस्था** = निकृष्टस्थानस्थिताः अनिष्टकारका इति भावाः, **ग्रहाः** = नवग्रहाः, **शकुनानि च** = निमित्तानि च, **अशुभानि** = दुष्टानि, **शान्तयः** = शमः क्रियन्ताम् विधियत्ताम्, **होमसाधनम्** = हवनसामग्री, **सर्वम्** = अखिलम्, सम्पूर्णं, **सौवर्णमेव** = हिरण्यनिर्मित्तमेव, **अस्तु** = भवतु। **एवं सति** = इत्थं सति, **कर्म** = कार्यस्य फलम्, **गुणवद्** = लाभकारि, **भवति** = जायते, **इमे** = एते, **ब्राह्मणाः** = द्विजाः, **ब्रह्मकल्पारं** = विरचितुल्याः वर्तन्ते, **ऐभिः** = एतैः ब्राह्मणैः, **कृतम्** = सम्पादितम्, **स्वस्त्ययनं** = मंगलपाठः, **कल्याणतरं** = कल्याणप्रदं भवति। **ते चामी** = ते च अमी, **कष्टदारिद्रयाः** = क्लेशनिर्धनतया, **बह्वपत्या** = बहुसन्तानवन्तः, **यज्वानो** = याज्ञिकाः, **वीर्यवन्तः** = तेजस्विनः, पराक्रमवन्तः, **अद्यापि** = अद्यावधिरपि, **अप्राप्ताः** = न प्राप्तः नाधिगतः, **प्रतिग्रहः** = दानं यैः ते, अर्थात् इमे दानमपि न ग्रहणन्ति, **एभ्यः** = एतेभ्यः, **दत्तम्** = प्रदत्तम्, **स्वर्गमायुष्यमरिष्टनाशनम्** = स्वर्गम् = स्वर्गदायकम्, आयुष्यम् = आयुर्वर्धकम्, अरिष्टनाशनम् = अरिष्टस्य = दुर्भाग्यस्य, नाशनम् = विनाशकम् च भवति, **इति** = एवं, **बहु-बहु** = अत्यधिकं (धनं), **दापयित्वा** = प्रदानं कारयित्वा, **तन्मुखेन** = तेषां ब्राह्मणानां मुखेन, **उपांशु** = एकान्ते, **स्वयं** = स्वतः, **भक्षयन्ति** = भक्षणं कुर्वन्ति।

तदेवम् = तत् इत्यम्, **अहर्निशम्** = रात्रिकिवम्, **अविदितसुखलेशम्** = अज्ञात सुखाल्पम्, **आयासबहुलम्** = विपुलक्लेशपूर्वकम्, **अविरल** = सतत, **कदर्थनम्** = दुःखपूर्वकम्, **नयतः** = जीवनं यापयतः, **नयज्ञस्य** = राजनीति ज्ञातव्य, **चक्रवर्तितो** =

चक्रवर्ती नृपेण, **आस्ताम्** = दूरे तिष्ठतु, **स्वमण्डलमात्रमपि** = स्वराज्यमपि, **दुरारक्ष्यम्** = दुःखेन आरक्षितं योग्यम्, **भवेत्** = स्यात्, **शास्त्रज्ञसमज्ञातो** = राजनीतिशास्त्रज्ञः, **हि** = निश्चयेन, **यत् ददाति** = यत् प्रदानं करोति, **यन्मानयति** = यत् सम्मानं करोति, **यत् प्रियम्** = यत् मधुरं, **ब्रवीति** = वदति, **तत्सर्वम्** = तत्सर्वस्वम्, **अभिसंधातुम्** = वञ्चयितुम्, **इति अविश्वासः** = अप्रतीतिः (प्रजायाः भवति), **अविश्वास्यता** = अविश्वास्यम्, **हि** = निश्चयेन, **जन्मभूमिः** = जन्मस्थानम्, **अलक्ष्म्याः** = दारिद्रयस्थ भवति। **यावता च** = यावन्मात्रया, **नयेन** = नीत्या, **च विना** = कहते, **न लोकयात्रा** = न संसार यात्रा, **स लोकत एव** = सः = नयः लोकतः = संसारतः एव, **सिद्धः** = सिद्धो भवति, **अत्र** = अस्मिन् विषये, **शास्त्रेण अर्थः न** = शास्त्रेण न किमपि प्रयोजनम्, **स्तनंधयोऽपि** = दुग्धपानं कुर्वम् शिशुरपि, **तैः तैः उपायैः** = अनेकैः उपायैः स्तनपानं, **जनन्या** = मात्रया, **लिप्सते** = लब्धुम् इच्छति, **तत्** = अतः, **अतियंत्रणाम्** = महत्कष्टम्, **अपास्य** = विहाय, **त्यक्त्वा यथेष्टम्** = इच्छानुरूपम्, **इन्द्रियसुखानि** = इन्द्रियाणां सुखानि, **अनुभूयन्ताम्** = अनुभवं करोतु।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—दुःस्वप्नः—दुष्टः स्वप्नः इति दुःस्वप्नः (कर्मधारय)। **अभेत्य**—अभि+आ+इण्+ल्यप्। **सौवर्णम्**—सुवर्णस्य विकारः सौवर्णम्, सुवर्ण+अण्। **होमसाधनम्**—होमस्य साधनम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **गुणवत्**—गुणाः विद्यन्ते अस्मिन् इति। **बह्वपत्याः**—बहूनि अपत्यानि, येषां ते बह्वपत्याः (बहुव्रीहि)। **वीर्यवन्तः**—वीर्यं विद्यन्ते एषामिति वीर्यवन्तः वीर्य+मतुप्। **स्वर्ग्यम्**—स्वर्ग+यत्। **अरिष्टनाशनम्**—अरिष्टस्य नाशनम् इति अरिष्टनाशनम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **आयासबहुलम्**—आयासः बहुलः यस्मिन् कर्मणि तद् यया स्याया आयासबहुलम्। **नयतः**—नी+शतृ प्रत्यय, षष्ठी एकवचन। **नयज्ञस्य**—जानानीति ज्ञः, ज्ञा+क, नयस्य ज्ञः इति नयज्ञः, तस्य नयज्ञस्य। **दुरारक्ष्यम्**—दुःखेन आरक्षितुं रक्ष्यम्। दुर्+आ+रक्ष्+यत्। **अतिसंधातुम्**—अति+सम्+धा+तुमुन्। **अविश्वास्यता**—न विश्वास्यः इति अविश्वास्यः (नञ् तत्पुरुष) तस्य भावः। **लिप्सते**—लब्धुम् इच्छति इति लिप्सते। **अनुभूयन्ताम्**—अनु+भू कर्मवाच्य लोट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन। **यथेष्टम्**—इष्टम नतिक्रम्य इति यथेष्टम् (अव्ययीभाव समासः)।

(14) येऽप्युपदिशन्ति—"एवमिन्द्रियाणि जेतव्यानि, एवमरिषड्वर्गस्त्याज्यः, सामादिरूपायवर्गः स्वेषु परेषु चाजस्रं प्रयोज्यः संधिविग्रहचिन्तयैव नेयः कालः, स्वल्पोऽपि सुखस्यावकाशो नदेयः" इति तैरप्येभिर्मन्त्रिवकर्युष्मत्तश्चौर्यार्जितं धनं दासीगृहेष्वेव भुज्यते। केचैते वराकाः? येऽपि मन्त्रकर्कशास्तन्त्रकर्त्तारः शुक्राङ्गिरसविशालाक्षबाहुदन्तिपुत्रपराशर-प्रभृतयस्तैः किमरिषड्वर्गो जितः, कृतं वा तैः शास्त्रानुष्ठानम्? तैरपि हि प्रारब्धेषु कार्येषु दृष्टे सिद्ध्यसिद्धी। पठन्तश्चापठद्भिरतिसन्धीयमाना बहवः। नन्विदमुपपन्नं देवस्य, यदुतसर्वलोकस्य वन्द्या जातिः, अयातयामं वयः, दर्शनीयं वपुः, अपरिमाणा विभूतिः। तत्सर्वं सर्वाविश्वासहेतुना सुखोपभोगप्रतिबन्धिना बहुमार्गविकल्पनात्सर्वकार्येष्वमुक्तसंशयेन तन्त्रावापेनैव मा कृथा वृथा। सन्ति हि ते दन्तिनां दश सहस्राणि, ह्यानां लक्षत्रयम्, अनन्तं च पादातम्। अपि च पूर्णान्येव हेमरत्नैः कोशगृहाणि! सर्वश्चैव जीवलोकः समग्रमपि युगसहस्र

भुञ्जानो न ते कोष्ठागाराणि रेचयिष्यति। किमिदमपर्याप्तं यदन्यार्जितायास: क्रियते। जीवितं हि नाम जन्मवतां चतु: पञ्चाप्यहानि। तत्रापि भोगयोग्यमल्पाल्पं वय: खण्डम्। अपण्डिता: पुनर्जयन्त एव ध्वंसन्ते। नार्जितस्य वस्तुनो लवमप्यास्वादयितुमीहन्ते।

कठिन-शब्दार्थ—जेतव्यानि = विजय प्राप्त की जानी चाहिए, **अरिषड्वर्ग:** = छ: शत्रुओं का समूह, **सामदिकपायवर्ग:** = सामादि उपायो का समूह, **प्रयोज्य:** = प्रयोग किया जाना चाहिए, **सन्धिविग्रहचिन्तया** = सन्धि तथा युद्ध की चिन्ता से, **मन्त्रिवकै:** = बगुलों के सदृश मन्त्रियों के द्वारा, **भुज्यते** = भोगा जाया करता है, **शास्त्रानुष्ठानम्** = शास्त्रों का अनुसरण, **प्रारब्धेषु** = प्रारम्भ किये गये कार्यों में, **सर्वलोकस्यवन्द्या** = सभी लोगों के द्वारा वन्दनीय, **वपु:** = शरीर, **मा वृथा** = मत कीजिए, **दन्तिनाम्** = हाथियों का, **हयानाम्** = घोडों का, **न रेचयिष्यति** = नहीं खाली करेगा, **अन्यार्जितायाः** = अधिक धन के उपार्जन के लिए, **जन्मिनाम्** = प्राणियों का, **भोगयोग्यम्** = भोग करने में समर्थ, **अल्पाल्पम्** = बहुत थोड़ा, **ध्वंसन्ते** = मर जाते हैं, **वस्तुन:** = धन का, **लवमपि** = अणु मात्र भी, **ईहन्ते** = चाहते हैं, **आस्वादयितुम्** = भोगने के लिए।

हिन्दी-अनुवाद—जो (व्यक्ति राजा को) ऐसा उपदेश देता है ''इस भाँति इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की जानी चाहिए''। इस भाँति छहों शत्रुओं (कामक्रोधादि) को त्यागना चाहिए, साम आदि (साम, दाम, दण्ड, भेद) उपायों का प्रयोग अपने शत्रु पक्ष के लोगों पर निरन्तर किया जाना चाहिए, सन्धि और विग्रह की चिन्ता में ही समय बिताना चाहिए, तनिक सा (क्षण मात्र) भी सुख को अवकाश नहीं दिया जाना चाहिए, ऐसे उन बगुला सदृश मन्त्रियों द्वारा आपके चोरी द्वारा पैदा किया गया हुआ धन, वेश्याओं के घरों में ही भोगा जाया करता है (अर्थात् ये बगुला-भगत उपदेशक मन्त्री आदि राज्य से चोरी करके प्राप्त किये हुए धन से वेश्याओं के घरों को भर दिया करते हैं और आनन्द लूटा करते हैं।) अब ये बेचारे (तो) क्या है? और जो ये नीतिशास्त्रकार तथा तन्त्रशास्त्रकार शुक्राचार्य, अङ्गिरस, विशालाक्ष, बाहुदन्तिपुत्र, पराशर इत्यादि थे, क्या इन लोगों के द्वारा छ: शत्रुओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर) पर विजय प्राप्त कर ली गयी थी? क्या उनके द्वारा शास्त्र का अनुष्ठान किया गया था? (अर्थात् क्या वे लोग शास्त्रानुसार चलते थे?) क्या प्रारम्भ किये हुए कार्यों में उनके द्वारा भी सिद्धियाँ (सफलताएँ) अथवा असिद्धियाँ (असफलताएँ) पहले से ज्ञात कर ली गयी थीं। पहले से पढे-लिखे लोग (भी) न पढे-लिखे लोगों द्वारा ठग लिए जाया करते हैं। देव को (महाराज को) ये (वस्तुएँ तो) प्राप्त ही हैं—सम्पूर्ण लोक द्वारा वन्दनीया जाति (कुल वंश), नवीन आयु, दर्शनीय शरीर तथा असीम ऐश्वर्य; अत: इन सबको स्वराष्ट्र-चिन्ता (तन्त्र) तथा पदचिन्ता के द्वारा व्यर्थ न कीजिए जो सभी लोगों के अविश्वास के कारण हैं, जो सुखों के उपभोगों के विरोधी हैं, जो अनेक मार्गों के बतलाने के कारण सभी कार्यों में संशय उत्पन्न करने वाले हैं। आपके पास दस हजार हाथी हैं, तीन लाख घोड़े हैं और असंख्य पैदल सिपाही (सेना) है और भी अपना कोष (खजाना) सुवर्ण तथा रत्नों से भरा पड़ा है। समस्त प्राणिवर्ग हजारों युगों तक खाता हुआ भी आपके भण्डारगृहों को खाली नहीं करेगा। (अर्थात् नहीं कर सकता है)।

क्या यह पर्याप्त नहीं कि और (भी) अधिक उपार्जन करने के निमित्त प्रयत्न किया जाता है (अर्थात् किया जाये)? (क्या आपके पास पर्याप्त धन नहीं है, जो आप और अधिक धन पैदा करने के लिए प्रयत्न करेंगे?) (संसार में) जन्म लेने वाले प्राणियों का जीवन तो चार-पाँच दिन का ही होता है (अर्थात् मानव जीवन अस्थायी हुआ करता है)। उसमें भी भोग विलास करने योग्य जो आयु का भाग हुआ करता है, वह तो (और भी) स्वल्पातिस्वल्प ही हुआ करता है। फिर मूर्ख लोग तो (धन) पैदा करते ही करते मर जाया करते हैं।

संस्कृत-व्याख्या—येऽपि उपदिशन्ति = येऽपि जनाः उपदिशन्ति, **एवम्** = इत्थम्, **इन्द्रियाणि जेतव्यानि** = ज्ञानेन्द्रियाणि कर्मेन्द्रियाणि च जेतव्यानि = विजेतव्यानी, **एवम्** = अनेन प्रकारेण, **अरिषड्वर्गः** = कामक्रोधादयः शत्रु समूहः, **त्याज्यः** = त्यक्तुं योग्यः, **सामादिरूपायवर्गः** = सामदानदण्डभेदादयः चतुर्पायासां, **वर्गः** = समूहः, **स्वेषु** = आत्मीयेषु जनेषु, **परेषु** = शत्रुषु च, **अजस्रं** = सततम्, **प्रयोज्यः** = प्रयोगः कर्तव्यः, **सन्धिविग्रहचिन्तया** = सन्धिविग्रहयोः चिन्ताः = विचारः एव, **कालः** = समयः, **नेयः** = यापयितव्यः, **स्वल्पोऽपि** = अल्पल्पोऽपि सुखस्य, **अवकाशः** = अवसरः, **न देयः** = न दातव्यः, **इति** = एवम्, तैः अपि, **मन्त्रिकैः** = अमात्यबकैः, **युष्मन्तः** = भवतः, **चौर्यार्जितम्** = अपहरणेन प्राप्तम्, **धनम्** = वसुम्, **दासीगृहेषु** = वेश्याभवनेषु, **भुज्यते** = भोगः क्रियते। **एते उपदेशकाः के** = उपदेष्टुम नाधिकारिणः इत्याशयः, येऽपि, **मन्त्रकर्कशाः** = नीतिकठोराः, **तन्त्रकर्त्तारः** = नीतिशास्त्रप्रणेतारः, **शुक्रः** = शुक्राचार्यः, **अङ्गिरसो** = वृहस्पतिः, **विशालाक्षः** = तन्नामधेयो, **बाहुदन्तिपुत्रपराशरः** = पराशर नीतिकारः, **प्रभृतयः** = इत्यादयः, **तैः** = नीतिकारैः, **किम् अरिषड्वर्गः** = षडान्तरिकशत्रुसमूहः, **जितः** = विजयं प्राप्तः, **वा** = अथवा, **तैः** = नीतिकारैः, **शास्त्रानुष्ठानम्** = शास्त्राणाम् अनुष्ठानम् = अनुसरणम्, **कृतम्** = विहितम्, **तैरपि हि** = निश्चयेन, **प्रारब्धेषु** = प्रारम्भेषु, **कार्येषु** = कर्मसु, **दृष्टे** = अवलोकिते, **सिद्ध्यसिद्धी** = सफलताऽसफलते। **पठन्तरश्च** = पठनोन्मुखाः वहवः जनाः, **अपठद्भिः** = पठनविमुखैः जनैः, **अतिसंधीयमाना** = वञ्च्यमानाः, भावोऽयं यत् ये पठनविमुखास्ते पठतो जनान् प्रतारयन्तीत्यर्थः। ननु, इदं, **इदं उपपन्नम्** = किं देवस्य = महाराजस्य कृते, **इदं उपपन्न** = इदं न प्राप्तम् अर्थात् प्राप्तमेव। यद उत् उदाहरणार्थ, **सर्वलोकवन्द्या जातिः** = अखिल लोक समादृतं कुलम्, **अयातयामं वयः** = नवं वयः, **दर्शनीयम्** = सुन्दरम्, **वपुः** = शरीरम्, **अपरिमाणा विभूतिः** = अपरिमितम् ऐश्वर्यम्, **तत् सर्वं** = तानि सर्वाणि वस्तुनि, **सर्वाविश्वासहेतुना** = सर्वेषां अविश्वासः इति सर्वाविश्वासः, तस्य हेतुः इति सर्वाविश्वास हेतुः तेन सर्वाविश्वास हेतुना, एतादृशेन, **तन्त्रावापेन** = तन्त्रेण स्वराष्ट्रचिन्तया, **अवापेन** = स्वशत्रुविषये चिन्तयेन, **मा वृथा वृथा** = व्यर्थं मा कुरु।

हि = यतो हि, **ते** = तम पार्श्वे, **दन्तिनाम्** = हस्तिनाम्, दशसहस्राणि, **सन्ति** = वर्तन्ते, **हयानां** = अश्वानाम्, लक्षत्रयम्, **अनन्तम्** = असंख्यं च, **पादातम्** = पदाति सैनिकाः वर्तन्ते। अपि च, **कोशगृहाणि** = निधिस्थानानि, **हेमरत्नैः** = सुवर्णहीरकमाणिक्यादिभिः, **पूर्णानि** = परिपूर्णानि वर्तन्ते, **सर्वश्चैव** = अखिलश्चैव,

जीवलोक: = संसार:, **युगसहस्रं** = अनन्तकालपर्यन्तम्, **भुञ्जान:** = भक्षयन्, **कोष्ठागाराणि** = धान्यगृहाणि, **न रेचयिष्यति** = न रिक्तानि करिष्यति, **किमिदम्** = इदम् एतत्सर्वम्, **अपर्याप्तम्** = असम्पूर्णं किं, नैवेत्यर्थ:, **यद् अन्यार्जितम्** = परकीयधनं तदर्थम्, **आयास:** = क्लेश:, प्रयास: वा क्रियते, **जीवितम्** = जीवनम्, **हि** = निश्चयेन, **जन्मिनाम्** = प्राणिनाम्, **चतु:पञ्चानि** = चत्वारि पञ्च वा परिमाणम् संख्या वा एषाम् इति चतु: पञ्चानि, **अहानि** = दिनानि, **तत्रापि** = तेषु चतुर्पञ्चषु दिवसेषु अपि, **भोगभोग्यम्** = सुखानुभवसमयम्, **अल्पाल्पम्** = अत्यल्पम्, **वय: खण्डम्** = आयुर्भाग: (वर्तते), **अपण्डिता:** = न पण्डिता: मूर्खा: इत्यर्थ: पुन:, **जयन्त एव ध्वंसन्ते** = जित्वाऽपि नाशमायान्ति एतेजना:, **अर्जितस्य** = उपार्जितस्य, वस्तुन: सामग्रे:, **लवमपि** = अल्पमपि, **आस्वादयितुम्** = उपभोक्तुम्, **न इहन्ते** = नेच्छन्ति।

विशेष—**(i) अरिषड्वर्ग:**—छ: शत्रुओं का समूह। ये छ: शत्रु हैं—1. काम, 2. क्रोध, 3. लोभ, 4. मोह, 5. मद और 6. मत्सर। ये छ: मानव के आन्तरिक परम शत्रु हैं। गीता के सोलहवें अध्याय में भगवान् कृष्ण ने कहा है—

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशमात्मन:।
काम: क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादे तत् त्रयं त्यजेत्।।

(ii) सामाद्युपायवर्ग—उपाय चार माने गये हैं—साम, दाम, दण्ड तथा भेद। इन उपायों का राजा, महाराजा लोग अपनी नीति के अन्तर्गत प्रारम्भ से ही प्रयोग करते आये हैं।

(15) किं बहुना। राज्यभारं भारक्षमेष्वन्तरङ्गेषु भक्तिमत्सुसमर्प्य, अप्सर: प्रतिरूपाभिरन्त:पुरिकाभीरममाणो गीतसंगीतपानगोष्ठीश्च यथर्तुबन्ध्नन् यथार्हं कुरु शरीरलाभम्' इति पञ्चाङ्गीस्पृष्टभूमिरञ्जलिचुम्बितचूडश्चिरमशेत्। प्राहसीच्च प्रतिफुल्ललोचनोऽन्त: पुरप्रमदाजन:।

कठिन-शब्दार्थ—**अन्तरङ्गेषु** = विश्वासपात्रों पर, **भारक्षमेषु** = राज्य का भार उठाने में समर्थ, **समर्प्य** = समर्पित करके, **अप्सर: प्रतिरूपाभि:** = अप्सराओं के सदृश जिनमें सौन्दर्य है, ऐसी स्त्रियों के साथ, **अन्त:पुरिकाभि:** = अन्त:पुर की स्त्रियों के साथ, **रममाण:** = रमण करते हुए, **यथार्हम्** = सार्थक, **यथर्तु** = ऋतु (समय) के अनुसार, **अञ्जलिचुम्बिचूड:** = अपनी अञ्जलि से चूमा (स्पर्श किया) गया था, मस्तक जिसका ऐसा, **अशेत्** = लेटा रहा, **प्राहषीत्** = हँस पड़ा, **प्रतिफुल्ललोचनो** = जिनके नेत्र प्रसन्नता के कारण पूर्णतया विकसित थे ऐसे, **प्रमदाजन:** = स्त्रियाँ।

हिन्दी-अनुवाद—अधिक क्या कहा जाये? भारवहन करने में समर्थ, अपने प्रति श्रद्धा रखने वाले तथा विश्वसनीय मन्त्री आदि व्यक्तियों को (राज्य का भार) सौंपकर अप्सराओं के सदृश सुन्दर अन्त:पुर की स्त्रियों के साथ रमण करते हुए, ऋतु के अनुसार गाना बजाना, शराब के प्रयोग के साथ मित्र गोष्ठी करते हुए शरीर लाभ (इस मनुष्य जन्म) को सार्थक करें ('ऋतु के अनुसार से'—भाव है कि जैसी ऋतु हो उसके अनुसार अर्थात्

गाने के समय गाना, बाजा सुनने के समय वाद्य सुनना, शराब पीने के समय शराब पीना, मित्रमण्डली के साथ गप्पशप्प तथा हास्य विनोद करने के समय गप्पशप्प तथा हास्य करना इत्यादि करते हुए जीवन बिताइये)। ऐसा कहकर (शरीर के) पाँचों अंगों से पृथ्वी का स्पर्श करता हुआ, सिर पर अंजलि लगाकर (अर्थात् हाथ जोड़कर) विहारभद्र बहुत समय तक लेटा रहा। प्रसन्नता के कारण विकसित नेत्रों वाली अन्तःपुर की स्त्रियाँ (गद्गद् होकर) हंस पड़ी।

संस्कृत-व्याख्या—किं बहुना! = अधिक कथनेन को लाभः!, **राज्यभारम्** = राज्यस्य भारः तम्, **भारक्षमेषु** = राज्यपालनसमर्थेषु, **अन्तरङ्गेषु** = विश्वस्त-राजपुरुषेषु, **भक्तिमत्सु** = भक्तियुक्तेषु, **समर्प्य** = स्थापयित्वा, **अप्सरः प्रतिरूपाभिः** = देवांगना तुल्याभिः, **अन्तःपुरिकाभिः** = प्रासादान्तर्निवासिनीभिः, **रममाणः** = विहारं कुर्वन्, **यथर्तु** = ऋतुमनतिक्रम्य कालानुरूपमित्यर्थः, **गीतसंगीतपानगोष्ठीश्च** = गीत संगीत मदिरासेवन गोष्ठी = मण्डली, **बध्नन्** = कुर्वन्, **शरीरलाभम्** = शरीरस्य लाभम् शरीर लाभं जन्य, **यथार्हं** = सार्थकम् कुरु, **इति** = एवम्, **पञ्चाङ्गीस्पृष्टभूमिः** = पञ्चानाम् अङ्गानाम् समाहारः इति पञ्चाङ्गी पञ्चाङ्ग्या स्पृष्टा, **भूमिः** = पृथ्वीः येनसः पञ्चाङ्गीस्पृष्टभूमिः, **अञ्जलिचुम्बितचूडः** = अञ्जलिना चुम्बिता चूडा (मौलिः) येन सः अञ्जलिचुम्बति चूडः एतादृशः [illegible]हारभद्रः, **चिरम्** = दीर्घकालम्, **यावत् अशेत्** = भूमौ पतितोऽतिष्ठत्। **अन्तः[illegible]प्रमदाजनः** = अन्तःपुर स्थितस्त्रीजनः, **प्रीतिप्रफुल्ललोचनः** = प्रीत्या = प्रसन्नताया फुल्लानि प्रसन्नानि लोचनानि यस्य सः एतादृशः प्रमदाजनः, **प्राहसीत्** = हसितवान्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—भारक्षमेषु—भारे क्षमाः इति भारक्षमाः तेषु भारक्षमेषु। **अन्तरङ्गभूतेषु**—अन्तः अंगम् इति अन्तरंगम्, अन्तरंगभुताः इति अन्तरंगभूता तेषु इति अन्तरंगभूतेषु। **अप्सरप्रतिरूपाभिः**—अप्सरसां इव प्रतिरूपं यासां ता अप्सरः प्रतिरूपाः ताभिः। **गीतसंगीतपानगोष्ठी**—गीतं च संगीतं च पानं च इति गीतसंगीत पानानि (द्वन्द्व), तेषां गोष्ठ्यः इति गीत संगीतपानगोष्ठ्यः ताः गीतसंगीतपानगोष्ठीः। **यथार्हम्**—यथा अर्हः यस्य सः यथार्हः तम् (बहुव्रीहि)। **पञ्चाङ्गीस्पृष्टभूमिः**— पञ्चाङ्गया स्पृष्टाः भूमिः येन सः (बहुव्रीहि)। **अञ्जलिचुम्बितचूडः**—अञ्जलिना चुम्बिता चूडा येन सः (बहुव्रीहि)। **प्रीतिप्रफुल्ललोचनः**—प्रीत्या फुल्लानि लोचनानि यस्य सः (बहुव्रीहि)। **प्रमदानजनः**— प्रमदानां जनः इति (षष्ठी तत्पुरुष)।

(16) जननाथश्च सस्मितम् 'उत्तिष्ठ, ननु हितोपदेशाद् गुरवो भवन्तः। 'किमिति गुरुत्वविपरीतमनुष्ठितम्' इति तमुत्थाप्य क्रीडारसनिर्भरमतिष्ठत्। अथैषु दिनेषु भूयोभूयः प्रस्तुतेऽर्थे प्रेर्यमाणो मन्त्रिवृद्धेन, वचसाऽभ्युपेत्य मनसैवाचित्तज्ञ इत्यवज्ञातवान्।

कठिन-शब्दार्थ—सस्मितम् = मुस्कराहट के साथ, **हितोपदेशात्** = हितकारी बातों का उपदेश देने के कारण, **अनुष्ठितम्** = किया है, **उत्थाप्य** = उठाकर, **भूयोभूयः** = पुनः पुनः, **प्रेर्यमाणो** = प्रेरित किया जाता हुआ, **अचित्तज्ञः** = चित्त की वृत्ति को न जानने वाला, **अवज्ञातवान्** = तिरस्कार किया।

हिन्दी-अनुवाद—ईषद्हास्य (मुस्कराहट के साथ) राजा ने भी "उठिये, हितकर बात का उपदेश देने क कारण आप (मेरे) गुरु है। आपने बड़प्पन (गुरुत्व) के विपरीत आचरण क्यों किया?" ऐसा कहकर उसे उठाकर (स्वयं भी) भोग-विलास के रस में स्थित हो गया अर्थात् निमग्न हो गया। इन दिनों प्रस्तुत (हाथ में विद्यमान) कार्य के निमित्त बार-बार वृद्ध मन्त्री (वसुरक्षित) द्वारा प्रेरित किया जाता हुआ वह राजा (अनन्तवर्मा), वाणी मात्र से स्वीकार कर, किन्तु मन में यह समझकर कि यह (वृद्ध मन्त्री) मेरे हृदय (की बातों) को न जानने वाला है, उस (मन्त्री) का निरादर करने लगा।

संस्कृत-व्याख्या—**जननायश्च** = राजा अनन्तवर्मा च, **सस्मितम्** = ईषत् हास्ययुक्तम् उतिष्ठ, **ननु** = निश्चयेन, **हितोपदेशात्** = हितकरवस्तु शिक्षादानात्, **भवन्तः** = भवन्तः श्रीमन्तः, **गुरवः** = आदरास्पदाः वर्तन्ते। **किमिति** = कस्मात् कारणात्, **गुरुत्वविपरीतम्** = गुरुत्व विरुद्धम्, **अनुष्ठितम्** = विहितम् कृतम् वा? इति कथयित्वा, **तम्** = विहारभद्रम्, **उत्थाय** = उत्तोल्य, **क्रीडारसनिर्भरम्** = भोगानन्दनिमग्न चेताः संजातः, **अर्थ** = तदनन्तरम्, **एषुदिनेषु** = एतेषु दिवसेषु, **भूयो भूयः** = पुनः पुनः प्रस्तुते अर्थे, **प्रेर्यमाणाः** = उपदिष्टे विषये चोद्यमानः, **मन्त्रिवृद्धेन** = पुराणामात्येन, **वचसा** = वाण्या, **अभ्युपेत्य** = स्वीकृत्य, **मनसा** = चेतसा, **अचित्तज्ञः** = मम प्रवृत्त्यनभिज्ञः, **इति** = एवम्, **अवज्ञातवान्** = तिरस्कृतवान्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**सस्मितम्**—विद्यमानं स्मित सरुमिन् कर्मणि तत्। **हितोपदेशात्**—हितस्य उपदेश (षष्ठी तत्पुरुष) हितोपदेशः तस्मात्। **क्रीडारसनिर्भरमतिः**—क्रीडायाः रसः (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मिन् निर्भरा मतिः यस्य सः (बहुव्रीहि)। **अचित्तज्ञः**—जानातीतिज्ञः चित्तस्यज्ञः इति चित्तज्ञः (षष्ठी तत्पुरुष) न चित्तज्ञः अचित्तज्ञः (नञ् तत्पुरुष)। **उत्थाप्य**—उत्+स्था+णिच्+ल्यप्। **प्रेर्यमाणः**—प्र+इट्+शानच्। **अभ्युपेत्य**—अभि+उप्+इण्+ल्यप्। **अवज्ञातवान्**—अव+ज्ञा+क्तवतु।

(17) अथैवं मन्त्रिणो मनवस्यभूत्—अहो मे मोहाद्बालिशयम्। अरुचितेऽर्थ चोदयन्नर्थीवाक्षिगतोऽहमस्य हास्यो जातः। स्पृष्टमस्य चेष्टानामयथापूर्व्यम् तथा हि—न मां स्निग्धं पश्यति, न स्मितपूर्वं भाषते, न रहस्यानि विवृणोति, न हस्ते स्पृशति, न व्यसनेष्वनुकम्पते, नोत्सवेष्वनुगृह्णाति, न विलोभवनवस्तूनि प्रेषयति, न मत्सुकृतानि प्रगणयति, न ये गृहवार्ता पृच्छति, न मत्पक्ष्यान्प्रत्यवेक्षते, न मामनहषु मामासन्नकार्येष्वभ्यन्तरीकरोति, न मामन्तःपुरं प्रवेशयति। अपि च मामनहषु कर्मसुनियुङ्क्ते, मदासनमन्यैरवष्टभ्यमानमनुजानाति, मद्वैरिषु विश्रम्भं दर्शयति, मदुक्तस्योत्तरं न ददाति, मत्समानदोषान्विगर्हयति, मर्मणि मामुपहसति, स्वमतमपि मया वर्ण्यमानं प्रतिक्षिपति, महार्हाणि वस्तूनि मत्प्रहितानि नाभिनन्दति, नयज्ञानां स्खलितानि मत्समक्षं मूर्खैरुद्घोषयति। सत्यमाह चाणक्यः—"चित्तज्ञानानुवर्तिनोऽनर्थ्या अपि प्रियाः। दक्षिणा अपि तद्भवबहिष्कृता द्वेष्या भवेयुः" इति तथापि का गतिः। अविनीतोऽपि न परित्याज्यः पितृपैतामहैरस्मादृशैरयमधिपतिः। अपरित्यजन्तोऽपि कमुपकामश्रूयमाणवाचः कुर्मः। सर्वथा नयज्ञस्य वसन्ताभानोरश्मकेन्द्रस्य हस्ते राज्यमिदं पतितम्। अपि नामापदो

भाविन्यः प्रकृतिस्थमेनमापादयेयुः। अनर्थेषु सुलभव्यलीकेषु क्वचिदुत्पन्नोऽपिद्वेषः सद्वृत्तमस्मै न रोचयेत्। भवतु। भविता तावदनर्थः। स्तम्भितपिशुनजिह्वो यथाकथञ्चिद्भ्रष्टपदस्तिष्ठेयम् इति।

कठिन-शब्दार्थ—**मोहात्** = अज्ञानता के कारण, **बालिश्यम्** = मूर्खता, **अरुचिते अर्थे** = ऐसा कार्य जो अच्छा नहीं लगता, **चोदयन्** = प्रेरित करता हुआ, **अलिगतः** = द्वेष का पात्र, **न विवृणोति** = नहीं बतलाता, **व्यसनेषु** = विपत्तियों में, **न अनुकम्पते** = दया नहीं दिखलाता, **विलोभन वस्तूनि** = लुभाने वाली वस्तुएँ, **सुकृतानि** = उत्तम कार्यों को, **न प्रगणयति** = नहीं गिनता, **न अवेक्षते** = नहीं देखता है, **आसन्नकार्येषु** = निकटतम कार्यों में गोपनीय कार्यों में, **न अभ्यन्तरी करोति** = विश्वास नहीं करता, **अनुजानाति** = स्वीकृति दे देता है, **अवष्टम्य मानम्** = दखल दिया जाता हुआ, **विश्रम्भम्** = विश्वास, **विगर्हयति** = निन्दा करता है, **वर्ण्यमानम्** = वर्णन किया जाता हुआ, **प्रतिक्षिपति** = आक्षेप करता है, **महार्हाणि** = बहुमूल्य, **यत्प्रहितानि** = मेरे द्वारा भेजी हुई, **न अभिनन्दति** = स्वागत नहीं करता है, **स्खलितानि** = दोषों को, **चित्तज्ञानानुवर्तिनः** = राजा के चित्त का ज्ञान करके अनुवर्तन करने वाले, **द्वेष्याः** = शत्रु, **भाविन्यः** = भविष्य में होने वाली, **सुलभव्यलीकेषु** = जिनमें दुःख मिलना बहुत सरल तथा स्वाभाविक है, ऐसे अनर्थों में, **पिशुन** = चुगलखोर, **यथाकथञ्चित्** = जिसे किसी भी प्रकार, **अभ्रष्टपदः** = जिसका मन्त्रिपद भ्रष्ट न होने पावे ऐसा मैं।

हिन्दी-अनुवाद—इसके अनन्तर मन्त्रियों के मन में (ऐसा विचार) उद्भूत हुआ—अहा, अज्ञान के कारण मेरी (यह) मूर्खता! (इस राजा का) अरुचिकर कार्य के प्रति प्रेरणा प्रदान करता हुआ मैं भिखारी के सदृश इसका शत्रु बन कर हास्य का पात्र हो चुका हूँ। यह तो स्पष्ट ही है कि इस (राजा) के व्यवहार पहले जैसे नहीं रहे। जैसे कि—(यह) मुझे प्रेम भरी दृष्टि से नहीं देखता है, मुस्कराते हुए मुझसे नहीं बोलता है, रहस्यपूर्ण (छिपाने योग्य) बातों को नहीं खोलता (प्रकट करता) है। मुझे (अपने) हाथ से नहीं छूता है, मेरे ऊपर (आयी हुई) आपत्तियों में (भी) दया नहीं करता है, उत्सवों में भी (मेरे ऊपर) अनुग्रह नहीं करता है, लुभाने वाली वस्तुओं को (मेरे लिए) नहीं भेजता है, मेरे द्वारा किये गये अच्छे कार्यों को भी नहीं गिनता है, मेरे घर की बात (हाल-चाल) नहीं पूछता है, मेरे पक्ष के लोगों की ओर नहीं देखता है, अपने समीपस्थ कार्यों में (मुझे) सम्मिलित नहीं करता है (अर्थात् मेरा विश्वास नहीं करता है)। मुझे (महल में स्थित) अन्तःपुर में प्रवेश नहीं करने देता है और भी, अयोग्य कार्यों में मुझे नियुक्त करता है। मेरे आसन पर अन्य व्यक्तियों द्वारा अधिकार किये जाने की आज्ञा देता है, मेरे दुश्मनों के प्रति विश्वास दिखलाता है, मेरे द्वारा कही हुई बातों का उत्तर नहीं देता, मुझ जैसे निर्दोष लोगों की निन्दा करता है, मर्मस्थल (हृदय) में चुभने वाली बातों को कह-कह कर मेरा हास्य करता है, मेरे द्वारा कथन किये गये हुए अपने मत (विचार) का भी तिरस्कार करता है, मेरे द्वारा प्रेषित बहुमूल्य वस्तुओं का (भी) अभिनन्दन नहीं करता है, मेरे समक्ष मूर्ख व्यक्तियों द्वारा राजनीतिज्ञ लोगों के दोषों की घोषणा करवाता है। चाणक्य ने ठीक ही कहा है कि (राजा के) मन को

पहचान कर (राजा के मनोनुकूल) चलने वाले व्यक्ति अनर्थकारी होते हुए भी (राजा को) प्रिय लगा करते हैं, किन्तु (राजा की चित्तवृत्ति) के विपरीत कार्य करने वाले व्यक्ति, चतुर होते हुए भी (उसके) शत्रु हो जाया करते हैं। तो भी (अन्ततोगत्वा) चारा ही क्या है? अविनीत (शिष्टाचारविहीन) होने पर भी यह राजा पिता, पितामह से (मन्त्री के पद पर कार्य करते हुए चले आते हुए) मेरे द्वारा छोड़ देने योग्य नहीं हैं, किन्तु जब हमारी बातों को सुना ही नहीं जा रहा है तो (इस राजा को) न छोड़ते हुए भी हम (इसकी) क्या भलाई कर सकते हैं। पूर्णरूप से यह राज्य अश्मकदेशीय नीतिज्ञाता राजा वसन्तभानु के हाथों में चला गया (अर्थात् चला जायेगा)। सम्भव है भावी (भविष्य में आने वाली) आपत्तियाँ (ही) इसे (इस राजा को) प्रकृतिस्थ (अपनी बुद्धि में स्थित ठीक-ठीक रूप में) कर दें। (किन्तु यह भी हो सकता है कि) जिनमें दुःख मिलना ही स्वाभाविक है ऐसे अनर्थों की ओर से उत्पन्न हुआ द्वेष भी इसे (इस राजा को) सदाचार या शिष्टाचार को प्रिय (अच्छा) न लगने दे (अर्थात् यह हो सकता है कि अनर्थों और आपत्तियों के अचानक उपस्थित हो जाने पर उनके प्रति उसे द्वेष हो जावे, साथ ही अच्छे आचरण की ओर वह उन्मुख न हो)। अस्तु, अनर्थ तो होगा ही (होना ही है); अतः हमारे लिए यही उचित है कि हम अपनी जीभ में ताला लगाकर (कुछ कहे बिना ही) किसी प्रकार अपने पदों को खोये बिना ही अपने-अपने पदों पर आरूढ़ रहें।

संस्कृत-व्याख्या—अथ = अनन्तरम्, **एवं** = इत्थम्, **मन्त्रिणो** = अमात्यस्य, **मनसि** = चेतसि, **अभूत्** = अभवत्, अहो, **मे** = मम, **मोहात्** = अज्ञानात्, **बालिश्यम्** = मूर्खत्वम्, **अरुचितेऽर्थे** = अनभीष्टे कार्ये, **चोदयन्** = प्रेरयन्, **अर्थी इव** = याचक यथा, **अक्षिगतो** = द्वेष्यः अहम्, **अस्य** = नृपस्य, **हास्यो** = परिहासविषयः, **जातः** = संजातः, **अस्य** = नृपस्य, **चेष्टानाम्** = प्रवहाराणाम्, **स्पष्टम्** = युक्तमिदम्, **अवयथापूर्व्यम्** = पूर्वापरवैपरीत्यम्, **तथाहि** = उदाहरणार्थम्, **न मां** = अमात्यम्, **स्निग्धं** = प्रेमपूर्वकम्, **पश्यति** = विलोकयति, न, **स्मितपूर्वम्** = इषद् हास्ययुक्तं, **भाषते** = वदति, **रहस्यानि** = गोप्यानि, **न विवृणोति** = न उद्घाटयति, **हस्ते** = करे, **न स्पृशति** = स्पर्शं करोति, **व्यसमेषु** = मम दुःखेषु, **न अनुकम्पते** = न दयते, **उत्सवेषु** = उत्सवादिषु, **न अनुगृह्णाति** = मयि अनुग्रहं प्रकाशयति, **विलोमनवस्तु** = हृदयाकर्षक सामग्री न प्रेषयति, **मत्सुकृतानि** = मम उत्तमकार्याणि, **न प्रगणयति** = न मन्यते, **मे** = मम, **गृहवार्ताम्** = गृहसम्बन्धिकार्यकलापम्, **न पृच्छति** = तस्मिन् विषये प्रश्नादिकं न करोति, **मत्यस्मान्** = मत्समर्थकान्, **न प्रत्यवेक्षते** = नावलोक्यते, **मामासन्नकार्येषु** = मामोपस्थित कर्मसु, **न अभ्यन्तरीकरोति** = न नियोजयति अथवा न विश्वसिति, **मामन्तःपुरम् न प्रवेषयति** = न प्रेषयति, अपि च, **मामनर्हेषु** = अनुचितेषु, **कर्मसु** = **कार्येषु**, **नियुङ्क्ते** = नियोजयति, **मदासनम्** = ममासनम्, **अन्यैः** = अपरैः, **अवष्टभ्यमानम्** = आक्रम्यमाणम् बलात् ग्रह्यमाणम्, **अनुजानाति** = अनुमोदते, **मद्वैरिषु** = मम शत्रुषु, **विश्रम्भं** = विश्वासम्, **दर्शयति** = प्रदर्शयति, **मदुक्तस्य** = ममोक्तस्य, **उत्तरम्** = प्रत्युत्तरम्, **न ददाति** = न यच्छति, **यत्समान दोषान्** = यादृशानां जनानां

छिद्राणि, **विगर्हति** = निन्दसि, **मर्माणि माम् उपहसति** = मम छिद्राणि दृष्ट्वा मम हास्यं करोति, **स्वमतमपि** = स्वस्य मतम् इति, **स्वमतम्** = स्वसिद्धान्तम्, **मया वर्ण्यमानम्** = कथ्यमानम्, **प्रतिक्षिपति** = तिरस्करोति, **मत्प्रहितानि** = मया प्रेषितानि, **महार्हाणि** = बहुमूल्यानि वस्तूनि, **नाभिनन्दति** = दृष्ट्वा प्रसन्नतां न दर्शयति, **नयज्ञानाम्** = नीतिविदां, **स्खलितानि** = दोषान् प्रमादान्, **मत्समक्षम्** = मम पुरतः, **मूर्खैः** = शठैः, **उद्घोषयति** = उद्घोषणा कारयति, **चाणक्याः** = कौटिल्यः, **सत्यमाह** = अवितथं जगाद, **चित्तज्ञानानुवर्तिनः** = नृपमनोऽनुकूलव्यवहारकर्त्तारः, **अनर्थाः** = महापापिनः अपि, **प्रियाः स्युः** = प्रियाः भवन्ति, **दक्षिणा अपि** = योग्याः, निपुणाः विनम्राः वा पुरुषाः अपि, **तद्भाव-बहिष्कृता** = नृपमनः प्रतिकूलाः, **द्वेष्याः** = द्वेष योग्याः, शत्रवः भवेयुः तथापि, **का गतिः** = कः उपाय, **उपायान्तरं** = नास्तित्यर्थः, **अवि नीतोऽपिः** = उद्दण्डोऽपि, **न परित्याज्यः** = न परिहर्तव्य, **पितृपैतामहैः** = पितृपितामह क्रमागतैः, **अस्मादृशैः** = आयत् सदृशैः, **अयम् अधिपतिः** = एषः नृपः, **अपरित्यजन्तो डीप** = न परित्यगन्तोऽपि, **कम् उपकारम्** = कां उपकृतिम्, **अश्रयमाणवाचः** = न श्रूयमाणा वाक् येषां ते अश्रूयमाणावाचः वयमिति शेषः कुर्यः, **सर्वथा** = सर्व प्रकारेण, **नयज्ञस्य** = नीतिज्ञस्य वसन्तमानोः इति नामधेयस्य अश्मकदेशाधिपतिः, **हस्ते** = करे, **राज्यमिदम्** = इदं राज्यम् पतितम्, **अपि** = किं, **भाविन्यः** = भविष्यन्त्यः, **नामापदः** = विपत्तयः, **एवं प्रकृतिस्यं आपादयेयुः** = एवं राजानं स्वबुद्धिस्थं कुर्युः अस्य राज्ञः बुद्धिं स्वस्थान् उत्तमां समीचीनां वा कुर्युः, **अनर्थेषु** = कुत्सेतेषु कृत्येषु, **सुलभव्यतीकेषु** = सुप्राप्यदुःखेषु, **क्वचित्** = कदाचित्, **उत्पन्नोऽपि** = जातोऽपि, **द्वेषः** = विरक्तिः, **सद्वृत्तयस्यै** = सद्वृत्तम् सत् च तद् वृत्तम् आचरणम्, **अस्यै न रोचयेत्** = अस्यै रुचिकरं न प्रतीतयेत, **भवतु** = अस्तु, **तावदमर्थः भविता** = कापि विपत्तिः आगमिष्यति, **स्तम्भितपिशुन जिह्वः** = अवरुद्ध दुष्ट वचनः, **यथा कथञ्चित्** = येन केन प्रकारेण, **अभ्रष्टपदः** = अनष्टाधिकारः, **तिष्ठेयम्** = आरूढ़ो भवेयम्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—बालिश्यम्—बालिशस्य भावः कर्म वा बालिश्यम्। बालिश+ष्यञ्। **हास्यः**—हस्+ण्यत्। **आयथापूर्व्यम्**—पूर्वम् अन्तिक्रम्य इति यथापूर्वम् (अव्ययीभाव) न यथापूर्वम्, इति अयथापूर्वम् (नञ् तत्पुरुष), अयथा पूर्वस्य भावः इति आयथापूर्व्यम् (अथवा पूर्व+ष्यञ्)। **विलोमन वस्तूनि**—विलोमनानि च तानि वस्तूनि इति विलोमन वस्तूनि (कर्मधारय)। **पक्ष्यान्**—पक्षे भवाः पक्ष्याः। **पक्ष्य**—पक्ष+यत्। **आसन्न कार्येषु**—आसन्नानि च तानि कार्याणि इति आसन्न कार्याणि तेषु आसन्नाकार्येषु (कर्मधारय)। **अवष्टभ्भमानम्**—अव+स्तम्भ्+कर्मणि शानच्। **वर्ण्यमानम्**—वर्ण+शानच्। **महार्हाणि**—महान् अर्हः येषां तानि महार्हाणि (बहुवचन)। **चित्तज्ञानानुवर्तिनः**—चित्तस्य ज्ञानम् इति चित्त ज्ञानम् (षष्ठी तत्पुरुष)। चित्तज्ञानम अनुवर्तितु शीलम् एषाम् इति चित्तज्ञानानुवर्तिनः (उपपद तत्पुरुष)। **तद्भाव बहिष्कृताः**—तस्य भावाः इति तद्भावाः (षष्ठी तत्पुरुष) ताद्भावेभ्यः बहिष्कृताः इति तद्भाव बहिष्कृताः (पञ्चमी तत्पुरुष)। **अविनीतः**—न विनीतः इति अविनीतः (नञ् तत्पुरुष)। **पितृपैतामहैः**—पितामहात्

आगताः इति पैतामहाः पितामह+अण्। पितुः पैतामहाः इति पितृपैतामहाः तैः पितृपैतामहैः (षष्ठी तत्पुरुष)। **अश्मकेन्द्रस्य**—अश्मकानां इन्द्रः अश्मकेन्द्रः तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)। **सुलभव्यलीकेषु**—सुखेन लब्धुं शक्यानि इति सुलभानि, सुलभानि व्यलीकानि येषुते सुलभव्यलीकाः तेषु (बहुव्रीहि)। **सद्वृत्तम्**—सद् च तद् वृत्तम् इति सद्वृत्तम् (कर्मधारय)। **स्तम्भित पिशुन जिह्वा**—पिशुना चासौ जिह्वा इति पिशुनजिह्वा (कर्मधारय), स्तम्भिता पिशुन जिह्वा येन सः (बहुव्रीहि)। **अभ्रष्टपदः**—न भ्रष्टपदं यस्य सः (बहुव्रीहि)। **भविता**—भू+लुट्। **भाविन्यः**—भू+णिनि+ङीप्। **सुलभ**—सु+लभ्+खल। **अस्मै न रोचयेत्**—यहाँ पर 'अस्मै' में 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति हुई है।

(18) एव गते मन्त्रिणि राजनि च कामवृत्ते चन्द्रपालितो नामाश्मकेन्द्रामात्यस्येन्द्र-पालितस्य सूनुः, असद्वृत्तः पितृनिर्वासितो नाम भूत्वा, बहुभिश्चारणगुणैर्बह्वीभिरनल्प-कोशलाभिः शिल्पकारिणीभिरनेकच्छन्नकिंकरैश्च गूढपुरुषैः परिवृतोऽभ्येत्य विविधाभिः क्रीडाभिः विहारभद्रमात्मसाद्करोत्। अमुना चैव संक्रमेण स राजन्यास्पदमलभत्। लब्धरन्ध्रश्च स यद्यद्व्यसनमारभते तत्तत्थेत्यवर्णयत्—देव यथा मृगया ह्यौपकारिकी न तथान्यत्। अत्र हि व्यायामोत्कर्षादापत्सूपकर्त्ता दीर्घाध्विलङ्घनक्ष-मोजङ्घाजवः, कफापचयादारोग्यैकमूलमाशयाग्निदीप्तिः, मदोऽपकर्षादङ्गानां स्थैर्यकार्कश्या-तिलाघवादीनि, शीतोष्णवातावर्षक्षुत्पिपासासहत्वम्, सत्त्वानामवस्थान्तरेषु चित्तचेष्टितज्ञान हरिणगवलग-वयादिवधेन सस्यलोपप्रतिक्रिया, वृकव्याघ्रादिघातेन स्थलपथशल्यशोधनम् शैलाट-वीप्रदेशानां विविधकर्मक्षमाणामालोचनम्, आटविकवर्गविश्रम्भणम् उत्साहशक्ति संधुक्षणेन प्रयत्नीकवित्रासमिति बहुतमा गुणाः।

कठिन-शब्दार्थ—**एवं गते** = ऐसा हो जाने पर, **कामवृत्ते** = अपनी इच्छानुसार काम करने वाला हो जाने पर, **असद्वृत्तः** = बुरा आचरण वाला, **अनल्पकौशलाभिः** = अत्यधिक चतुर, **शिल्पकारिणीभिः** = चित्र बनाने वाली स्त्रियों के साथ, **किंकर** = नौकर, **छान्न** = छिपे हुए, **आत्मसात्** = अपने वश में, **संक्रमेण** = उपाय से, **लब्धरन्ध्रकः** = अवसर पाकर, **मृगया** = शिकार, **व्यायामोत्कर्षात्** = बहुत अधिक व्यायाम होने के कारण, **आपत्सु** = विपत्तियों में, **उपकर्त्ता** = लाभ पहुँचाने वाला, **अध्वन्** = मार्ग, **क्षमः** = समर्थ, **जंघाजयः** = जंघाओं में वेग, **अपचय** = नाश, **अरोग्यैकमूलम्** = स्वस्थता का प्रधानभूत कारण, **आशय** = पेट, उदर, **मेदोपकर्षात्** = चर्बी का नाश हो जाने से, **क्षुत्** = भूख, **सहत्वम्** = सहन करने की क्षमता, **गवल** = जंगली भैंसा, **वृक** = भेड़िया, **अटवी** = वन, **विश्रम्भणम्** = विश्वास, **प्रत्यनीकवित्रासनम्** = शत्रु सेना के हृदय में भय की उत्पत्ति करना, **सन्धुक्षणेन** = संवर्द्धन से उमड़ने अथवा बढ़ने से।

हिन्दी-अनुवाद—(इस भाँति) मन्त्री के तटस्थ हो जाने पर तथा राजा के भी स्वेच्छाचारी हो जाने पर अश्मक देश के राजा वसन्तभानु के मन्त्री इन्द्रपालित के दुराचारी पुत्र चन्द्रपालित ने स्वयम् को (अपने को) पिता द्वारा निष्कासित घोषित कर, अनेक चारणों (भाटों) अतिचातुरी सम्पन्न चित्र निर्माण में कुशल, स्त्रियों तथा अनेक नौकरों से युक्त गुप्तचरों द्वारा घिरे हुए, (उस राजा) के पास आकर, नाना प्रकार की क्रीड़ाओं द्वारा

विहारभद्र को अपने वशीभूत कर लिया। (इस भाँति राजदरबार में प्रविष्ट होने का) सुअवसर पाकर उस (चन्द्रपालित) ने उस विहारभद्र के साथ मिलकर राजा के हृदय में अथवा राजदरबार में स्थान प्राप्त कर लिया। अवसर पाकर वह (चन्द्रपालित) राजा (अनन्तवर्मा) जिस-जिस व्यसन को प्रारम्भ करता था, उसी के बारे में ''ऐसा ही ठीक है अथवा ऐसा होना उचित ही है'' कह कहकर (उसका) अनुमोदन कर देता था। हे देव! आखेट (शिकार) करना जितना अधिक लाभकारी है उतना (लाभकारी) अन्य कुछ भी नहीं (है)। इसमें (शिकार खेलने में) व्यायाम के उत्कर्ष के कारण, आपत्तियों में उपकार करने वाला तथा लम्बे लम्बे मार्गों को पार (तै) करने में समर्थ जङ्घाओं की गति में वेग आता है (उत्पन्न हो जाया करता है), कफ का नाश हो जाने से (कफ का विनाश हो कर) आरोग्यता की एकमात्र जड़ जठराग्नि (पेट की अग्नि—भोजन का पाचन करने वाली शक्ति) उद्दीप्त होती है। मेद (चर्बी) की कमी होकर (चर्बी के छँट जाने से) अंगों में दृढता (स्थिरता), अधिक परिश्रम को सहन करने की सामर्थ्य तथा अत्यधिक फुर्ती इत्यादि आ जाया करती है। शीत, गर्मी, वायु, वर्षा, भूख और प्यास (इन सब) को सहन करने की शक्ति आती है। भिन्न-भिन्न दशाओं में (वन में निवास करने वाले) प्राणियों की मनोवृत्ति तथा नाना प्रकार की चेष्टाओं का ज्ञान भी (प्राप्त) होता है। हरिण, जंगली भैंसे तथा नीलगाय आदि (जन्तुओं के) वध हो जाने से फसल का नष्ट होने से बचाने का उपाय, भेड़िये आदि के वध होने के कारण स्थल मार्ग के कंटकों (विघ्न-बाधाओं) की सफाई, नाना प्रकार के कार्यों के निमित्त उपयोगी पर्वतीय स्थानों तथा प्रदेशों का पता लगाना, वन में रहने वाली प्रजाओं के हृदय में विश्वास उत्पन्न करना और उत्साह शक्ति के बढ.जाने से शत्रुओं की सेनाओं के हृदय में भय का उत्पादन करना इत्यादि अनेक गुण हैं।

संस्कृत-व्याख्या—एवं गते मन्त्रिणि = इत्थं प्राप्ते अमात्ये, **राजनि च** = नृपे च, **कामवृत्ते** = यथेच्छाचारे राज्य कार्ये कृते सति, **अश्मकेन्द्रामात्यस्य** = अस्मकदेशस्य नृपतेः अमात्यस्य इन्द्रपालितस्य पुत्र चनुपालितः, **सूनु** = असद्वृत्तः = दुराचारः, **पितृनिर्वासितो नाम भूत्वा** = स्वजनकेन राज्यात् निष्कासितः इति मिथ्या घोषयित्वा, **बहुभि:** = अनेकैः, **चारणगणै:** = भाटसमूहैः, **बह्वीभि:** = अनेकाभिः, **अनल्प कौशलाभि:** = अत्यन्तं निपुणाभिः, **शिल्पकारिणीभि:** = चित्रकारिणीभिः, **अनेकच्छन्न किंकरै:** = अनेक गुप्तसेवकैः, **गूढपुरुषै:** = गुप्तचरैः, **परिवृत्तौ** = सहितः, **अभ्येत्य** = समीपमागत्य, **विवधाभि:** = अनेकधाभिः क्रीडाभिः, **विहारभद्रं** = नामधेयं नृपं, **आत्मसात् अकरोत्** = आत्माधीनम् कृतवान्, **अधुना** = अनेन, चैव, **संक्रमेण** = विधिना, मार्गेण वा, **राजानि** = राज्ञि, नृपे वा, **आस्यदम्** = स्थानम्, **अलभत्** = प्राप्तवान्, **लब्धरन्ध्र:** = प्राप्तावसरः, **स:** = नृपः, **यत् यत् प्रसनम्** = यं यं दुराचारम्, **आरभते** = प्रक्रमते, **तत् तथा इति अवर्णयत्** = तत् व्यसनम् तथा = उचितमस्ति इति अवर्णयत् = एवं अकथयत्, सः कथयति स्म—देव!, **यथा** = यावत्, **मृगया** = आखेट **हि** = निश्चयेन, **औपकारिकी** = लाभकारिणी, **न तथा अन्यत्** = न तथा अपरम्, **अत्र** = **मृगयायांहि** = **निश्चयेन, व्यायामोत्कर्षात्** = शारीरिक परिश्रमाधिक्यात्, **आपत्सु** =

विपत्तिषु, **उपकर्त्ता** = हितकरः, **दीर्घाध्वलङ्घनक्षमो** = दीर्घमार्गतरण समर्थः, **जंघाजवः** = जंघायेगः, **कफाचमाद** = कफस्य श्लेष्मण, **अपचयाद्** = क्षयात्, **आरोग्यैकमूलम्** = **स्वास्थ्यस्य** एकमात्र कारणम्, **आशयाग्निदीप्ति** = जठराग्नि संधुक्षणम्, **मेदोपकर्षाद्** = मेदोनाशात्, **अङ्गानां** = शरीरस्थ विविधाङ्गानां, **स्थैर्यम्** = दार्द्यम्, **कार्कश्यम्** = काठिन्यम्, **अतिलाघवम्** = प्रचरं शैध्यम्, **इत्यादीनि शीतोष्ण वात वर्ष क्षुत्पिपासा सहवृम** = शीतं च उष्णं च वातश्च वर्षश्च, क्षुत् च पिपासा च इति शीतोष्णवातवर्षक्षुत् पिपासाः, ताः सहते इति शीतोष्ण-वात-वर्ष-क्षुत्-पिपासा-सहः तस्य भावः शीतोष्णवात-वर्षक्षुत् पिपासा सहवृम्, **सत्वानाम्** = जीवानाम्, **अवस्थान्तरेषु** = भिन्नासु दशासु, **चित्तचेष्टितज्ञानम्** = चित्तं च चेष्टितानि (क्रियाश्च) इति चित्त चेष्टितानि तासां ज्ञानम् इति चित्तचेष्टितज्ञानम्, **हरिण** = मृग, **यवल** = अरण्यमहिष, **मवय** = नीलगौ इत्यादिनां सत्वायां, **वधेन** = मारणेन, **सस्यलोपप्रतिक्रिया** = कृषिनाशनिवारणोपायः, **वृकव्याघ्रादिघातेन** = वृकाश्चः व्याघ्राश्च वृकव्याघाः ते आदयो येषां ते वृक व्याघ्रादयऽतेषां घातः इति वृकव्याघ्रादिघातः तेन वृकव्याघ्रादि घातेन, **स्थलपथ शल्य शोधनम्** = स्थलपथस्य शल्यानां कण्टकभूतानां शोधनम् अपनयनम्, **शैलाटवी-प्रदेशानाम्** = पार्वत्यवनभूमिषु बहवः प्रदेशाः निरर्थकास्तिष्ठन्ति तेषां सार्थकीकरणम्, **विविधकर्मक्षयाणामालोचनम्** = नाना प्रकार कार्य योग्यानाम्, **आलोचनम्** = ज्ञानम्, **समीक्षणम्** वा, **आटविकवर्णविश्रम्भणम्** = अरण्यनिवासिनां हृदये विश्वासोत्पादनम्, **उत्साहशक्ति संघुषणेन** = उत्साहशक्त्याः संवर्धनेन, **प्रत्यनीकवित्रासनम्** = शत्रुसैन्यस्य हृदये भयोत्पादनम् इति, **बहुतमाः गुणाः** = अनेके गुणाः वर्तन्ते।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—मन्त्रिणि—में 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' सूत्र से सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है। **निर्वासितः**—निर्+वस्+णिच्+क्त। **अमेत्य**—अमि+आ+इण्+ल्यप्। **कामवृत्ते**—कामेन वृत्तः यस्य सः कामवृत्तः तस्मिन् (बहुव्रीहि)। **असद्वृत्तः**—सन् (शोभने) वृर्त्त यस्य सः सद्वृत्तः (बहुव्रीहि)। न सद्वृत्तः असद्वृत्तः (नञ् तत्पुरुष)। **पितृनिर्वासितः**—पित्रा निर्वासितः इति पितृनिर्वासितः (तृतीया तत्पुरुष)। **अनेक छन्नकिंकरै**—न एके इति अनेके (नञ् तत्पुरुष) अनेके छन्नाः किंकराः येषां ते अनेक छिन्न किङ्कराः तैः (बहुव्रीहि)। **गूढपुरुषैः**—गूढाश्च ते पुरुषाः इति गूढ पुरुषाः तैः (कर्मधारय)। **आरोग्यै कमूलम्**—आरोग्यस्य एक मूलं इति आरोग्यैकमूलम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **स्थैर्यम्**—स्थिरतायाः भावः स्थैर्यम्। **शैलाटवीप्रदेशानाम्**—शैलाश्च अटप्रश्च इति शैलाटव्यः (द्वन्द्व), तासां प्रदेशा इति तेषां (षष्ठी तत्पुरुष)। **विविधकर्मक्षमाणाम्**—विविधानि च तानि कर्माणि इति विविध कर्माणि (कर्मधारय) तेषु क्षमा इति तेषां (सप्तमी तत्पुरुष)। **प्रत्यनीकवित्रासनम्**—प्रतिकूलानि अनीकानि इति प्रत्यनीकानि तेषां वित्रासनम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)।

विशेष—(i) इस गद्यांश में राजा अनन्तवर्मा के व्यसनों के सन्दर्भ में चन्द्रपालित व विहारभद्र क्या क्या प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करते थे उनका वर्णन किया गया है। इसमें उसके शिकार सम्बन्धी व्यसन पर वे लोग जो कहते थे उसका वर्णन किया गया है।

(ii) शिकार से होने वाले लाभों का वर्णन शाकुन्तलम् के द्वितीय अंक में भी प्राप्त होता है—

मेदच्छेद कृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः
सत्वानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चित्तं भयक्रोधयोः।
उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले
मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगया मीदृग् विनोदः कुतः।। 2/5

(19) द्यतेऽपि द्रव्याराशेस्तृणवत्यागादनुपमानमाशयौदार्यम् जयपराजयानवस्थानाद्धर्ष विषादयोरविधेयत्वम्, पौरुषैक निमित्तस्या—मर्षस्य वृद्धिः। अक्षहस्तभूम्यादि-गोचराणामत्यन्तदुरूपलक्ष्याणां कूटकर्मणामुपलक्षणादनन्तबुद्धिनैपुण्यम्, एकविषयोपसंहारा-च्चित्तस्यातिचित्रमैकाग्रयम्, अध्यवसायसहचरेषु साहसेष्वतिरतिः, अतिकर्कशपुरुषप्रति-संसर्गादनन्यधर्षणीयता मानावधारणमपकृपणं च शरीरयापनमिति।

कठिन-शब्दार्थ—**द्रव्यराशेः** = धन समूह का, **तृणवत्** = तिनके के समान, **त्यागात्** = खर्च करने के कारण, **अनुपमानम्** = अद्वितीय, **आशयौदार्यम्** = चित्त को उदारता, **अनवस्थानम्** = अस्थिरता, **अविधेयत्वम्** = वश में न होना, **अमर्ष** = क्रोध, **गोचर** = विषय, **उपलक्षणात्** = देखने से, **कूटकर्मणाम्** = कपट युक्त कार्यों का, **एकविषयोपसंहारात्** = प्रधान रूप से एक ही विषय में मन के लगे रहने के कारण, **अटविः** = प्रेम का न होना, **अतिकर्कश** = अत्यन्त कठोर, **मानावधारणम्** = आत्माभिमान का उत्पन्न होना, **अकृपणम्** = कंजूसी से (हित), **शरीरयापनम्** = अपना जीवन निर्वाह।

हिन्दी-अनुवाद—जुए में भी द्रव्य की राशि का तिनके के सदृश त्याग (खर्च) करने के कारण चित्त में अतुलनीय उदारता आती है। जय तथा पराजय (हार) के अनिश्चित रहने के कारण हर्ष तथा शोक (दुःख) का अभाव रहा करता है। पुरुषार्थ के प्रधानभूत कारण क्रोध की वृद्धि होती है। पाँसा, हाथा तथा (पाँसा फेंकने वाली) भूमि पर होने वाले अत्यन्त कठोर (जिनका समझना वस्तुतः अति दुरुह है) कपट (छल) के व्यापारों को जानने से बुद्धि में अत्यधिक निपुणता आती है। अपने मन को एक ही विषय की ओर लगाने से अत्यधिक आश्चर्योत्पादक मानसिक एकाग्रता आती है। अध्यवसाय (परिश्रम, प्रयास) के साथी साहस (अथवा साहसिक कार्यों) में अभिरुचि (प्रेम) उत्पन्न होती है। अति कठोर स्वभाव वाले पुरुषों के संसर्ग में रहने के कारण वह गुण प्राप्त हो जाता है कि जिनसे दूसरा व्यक्ति अपने को दबा न सके। स्वाभिमान की उत्पत्ति होती है तथा कृपणता रहित जीवन व्यतीत हुआ करता है।

संस्कृत-व्याख्या—**द्यूतेऽपि** = कितवेऽपि, **द्रव्यराशेः** = धनसमूहस्य, **तृणवत्** = तृणतुल्यम्, **त्यागात्** = व्ययकरणात्, **अनुयमानम्** = अद्वतीयम्, **आशयौदार्यम्** = चित्तस्य उदारता (वर्द्धते), **जयपराजयमानय स्यानात्** = **जयश्च पराजयश्च** इति जयपराजयौ, **तयोः अनयस्थानम्** = अनिश्चितत्त्वम्, **हर्षविषादयोः** = **प्रसन्नता**

अविधेयत्वम् = अवशीभूतत्त्वम्, **पौरुषैकनिमित्तस्य** = पराक्रमैकमात्रहेतोः, **अमर्षस्य** = क्रोधस्य, **वृद्धिः** = आधिक्यम्, **अक्षहस्त भूम्यादिगोचराणाम्** = अक्षाश्च हस्ताश्च भूमिश्च इति अक्षहस्तभूमयः (द्वन्द्व) अक्षहस्तभूमयः आदयः येषां ते अक्षहस्तभूम्यादयः (बहु.) अक्षहस्तभूम्यादयः गोचराः = क्षेत्राणि विषयाः येषां ते अक्षहस्तभूम्यादिगोचराः तेषाम् अक्षहस्तभूम्यादिगोचराणाम्, **अत्यन्त दुरूपलक्ष्याणाम्** = अत्यन्त कष्टेन दुष्टप्रानां, **कूटकर्मणाम्** = कपटपूर्णकार्याणाम्, **उपलक्षणात्** = निरीक्षणात्, **अनन्तबुद्धिनैपुण्यम्** = अनन्तमति चातुर्यम्, **एकविषयोपसंहारात्** = एकश्चासौ विषयश्च इति एकविषयः, तस्मिन् उपसंहारः अभिर्निवेशः एकवृत्तित्वम् तस्मात्, **चित्तस्य** = मनसः हृदयस्य वा, **अतिचिवाम्** = अत्यन्तम् अद्‌भुतम् आश्चर्यजनकं वा, **ऐकाग्र्यम्** = एकाग्रता, **अध्यवसायसहचरेषु** = उद्योगमात्र सहचरेषु अर्थात् अध्यवसाय द्वारेण साध्येषु कार्येषु, **साहसेषु** = साहसिक कार्येषु, **अरतिः** = अप्रीतिः, **अतिकर्कश पुरुष प्रतिसंसर्गात्** = अत्यन्त क्रूर स्वभाव मनुष्याणां घनिष्ठ सम्पर्कात्, **अनन्यधर्षणीयता** = अन्यानभिभवनीयता, **मानावधारणम्** = स्वाभिमानस्य उत्पत्तिः, **अकृपणम्** = कृपणतारहितम्, दैन्यारहितम्, **च शरीरयापनम्** = जीवननिर्वाहः (भवति)।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—द्रव्यराशेः—द्रव्यानां राशिः इति द्रव्यराशिः तस्य द्रव्यराशेः (षष्ठी तत्पुरुष)। **तृणवत्**—तृण्+वति प्रत्यय। **अनुपमानम्**—न विद्यते उपमानं यस्य तत् अनुपमानम् (बहुव्रीहि)। **औदार्यम्**—उदारस्य भावः औदार्यम् उदार+ष्यञ्। **हर्षविषादयो**—हर्षश्च **जयपराजयौ**—जयश्च पराजयश्च इति जयपराजयौ (द्वन्द्व)। विषादश्च इति हर्षविषादौ तयोः हर्षविषदयोः (द्वन्द्व)। **अविधेयत्वम्**—विधेयस्य भावः विधेयत्वम्, न विधेयत्वम् इति अविधेयत्वम् (नञ् तत्पुरुष)। **विधेयः**—वि+धा+यत्। **पौरुषैकनिमित्तस्य**—एकं वा निमित्तम् इति एक निमित्तम् (कर्मधारय), पौरुषस्य एकनिमित्तम् इति पौरुषैक निमित्तम् तस्य पौरुषैकनिमित्तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)। पुरुषस्य भावः पौरुषम्, पुरुष+अण्। **अतिचित्राम्**—अतिशयितं चित्राम् इति अतिचित्राम्। **ऐकाग्र्यम्**—एकम् एव अग्रय् यस्य सः, एकाग्रः (बहुव्रीहि), एकाग्रस्य भावः ऐकाग्र्यम्, एकाग्र+ष्यञ्। **अरतिः**—न रतिः इति अरतिः (नञ् तत्पुरुष)। रम्+क्तिन् भावे रतिः। **अध्यवसाया**—अध+भव+षो धातु+घञ् प्रत्यय। **मानावधारणम्**—मानस्य अवधारणम् इति मानावधारणम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अकृपणम्**—न कृपणम् इति अकृपणम् (नञ् तत्पुरुष)।

(20) उत्तमाङ्गनोपभोगेऽप्यर्थधर्मयोः सफलीकरणम्, पुष्कलः पुरुषाभिमानः, भावज्ञानकौशलम्, अलोभक्लिष्टमाचेष्टितम्, अखिलासु कलासु वैचक्षण्यम् अलब्धोपलब्धिब्धानरक्षणरक्षितोपभोगभुक्तानुसंधानरुष्टानुनयादिष्वजस्रमभ्युपायरचनया बुद्धिवाचोः पाटवम्, उत्कृष्टशरीरसंस्कारात्सुभगवेषतया लोकसम्भावनीयता परं सुहृत्प्रियत्वम्, गरीयसी परिजनव्यपेक्षा, स्मितपूर्वाभिभाषित्वम्, उक्तद्रिसत्त्वता, दाक्षिण्यानुवर्त्तनम्। अपत्योत्पादनेनोभयलोकश्रेयस्करत्वमिति।

कठिन-शब्दार्थ—उत्तमाङ्गना = श्रेष्ठ स्त्रियों के, **अर्थधर्मयोः** = धन और धर्म का, **सफलीकरणम्** = सफल करना, **पुष्कल** = अत्यन्त, अत्यधिक, **भावज्ञान कौशलम्** =

चित्तवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करने का चातुर्य, **अलोभक्लिष्टम्** = लोभ के कारण पीड़ित न होने वाला व्यवहार, **आचेष्टितम्** = चेष्टाएँ, व्यवहार, **बुद्धिवाचोः** = बुद्धि तथा वाणी को, **लोकसम्माननीयता** = लोगों के द्वारा सम्मान प्राप्त होने के कारण, **सुहृत्प्रियत्वम्** = (अपने) मित्रों का प्रिय बन जाना, **गरीयसी** = महती, बड़ी, **परिजनव्यपेक्षा** = नौकरों का सम्मान करना, **उद्रिक्त सत्वता** = महान् पुरुषार्थ, **अपत्योत्पादनेन** = सन्तानों की उत्पत्ति के द्वारा, **उभयलोक श्रेयस्करत्वम्** = दोनों लोकों में कल्याण का होना।

हिन्दी-अनुवाद—उत्तम अङ्गनाओं (स्त्रियों) का उपभोग करने से अर्थ (धन) और धर्म (दो पुरुषार्थ) सफल हो जाते हैं। (पुरुषत्व) का अभिमान भी अत्यधिक बढ़ जाता है। किसी के भी (स्त्री अथवा पुरुष) मानसिक भावों को जानने का चातुर्य आ जाता है। लोभ से व्यथित न होने वाला (लोभरहित) व्यवहार (चेष्टाएँ) हुआ करता है। सम्पूर्ण कलाओं में विलक्षणता आती है। अप्राप्त (वस्तु) की प्राप्ति, प्राप्त (वस्तु) की रक्षा, रक्षित का उपभोग, भोगी गयी हुई (वस्तुओं) के बारे में अनुसंधान की प्रवृत्ति, क्रोधित हुओं को प्रसन्न करना इत्यादि बातों में सतत् उपाय करते रहने से बुद्धि तथा वाणी में चतुरता आती है। (अपने) शरीर को सदैव सुन्दर रूप से सजाकर रखने के कारण वेश-सुन्दरता आती है (फिर) वेश-सौन्दर्य से लोक में आदर प्राप्त हुआ करता है, मित्रों के प्रति (हृदय से) महान् स्नेह की उत्पत्ति हुआ करती है। परिजनों (सेवकों-भृत्यों) की अत्यधिक देखभाल, ईषद् हास्य (मुस्कराहट) के साथ (सभी से) बोलता, पराक्रमशीलता की वृद्धि, उदारतापूर्वक व्यवहार करना इत्यादि हुआ करता है। सन्तानों के उत्पन्न करने से इस लोक तथा परलोक, दोनों में कल्याण होता है।

संस्कृत-व्याख्या—**उत्तमाङ्गनाभोगे** = सुन्दर स्त्रीभिः रमणे अपि, **अर्थधर्मयोः** = अर्थश्च धर्मश्च इति अर्थधर्मौ तयोः अर्थधर्मयोः = धनधर्मयोः द्वयोः पुरुषार्थयोः, **सफलीकरणम्** = साफल्यम् भवति, **पुष्कलः** = अत्यधिकः, **पुरुषाभिमानः** = मानवाभिमानः (वर्धते), **भावज्ञानकौशलम्** = भावानां = आन्तरिकमनोभावानाम्, कौशलम् = चातुर्यम् ज्ञायते, **अलोभक्लिष्टम्** = न लोभ पीडितम्, **आचेष्टितम्** = व्यवहारः भावोऽयं यत् व्यवहारः लोभेन सम्पीडितो न भवतु, **अखिलासु** = सर्वासु, **कलासु** = विविधकलासु, **वैचक्षण्यम्** = नैपुण्यम् प्राप्यते, **अलब्धोपलब्धि** = लब्धानुरक्षण, **रक्षितोपभोग** = भुक्तानुसन्धान, **रुष्टानुनपादिषु** = न लब्धम् इति अलब्धम्, **अलब्धस्य** = अप्राप्तस्य प्रमदाकस्य, **लब्धिः** = प्राप्तिः, **लब्धस्य** = प्राप्तस्य, प्रमदाजनस्य, **अनुरक्षणम्** = पालनम्, रक्षितस्य प्रमदाजनस्य उपभोगः, भुक्तस्य प्रमदाजनस्य, **अनुसन्धानम्** = सम्यक् निरीक्षणम्, यया ताः प्रमदाः क्वचिदपि न पलायेरन् अथवा कैरपि खलैः न प्रलोभ्येरन्, **रुष्टस्य प्रमदाजनस्य अनुनयः** = प्रसन्नीकरणम् इति रुष्टानुनयः इत्यादिषु, **अजस्रम्** = निरन्तरम्, **अभ्युपाय रचनयाः** = उपायानां अभ्यासे सति, **बुद्धिवाचोः** = मेधाशक्तेः वाण्याश्च, **पाटवम्** = नैपुण्यम् (वर्धते), **उत्कृष्टशरीरसंस्कारात्** = उच्चस्तरीयः शरीरविभूषणात्, **सुभगवेषतया** = रमणीयत्व **स्वरूपेन**, **लोकसंभावनीयतया** = लोकात् सम्माननीयतया, **परं** = अत्यधिकं,

सुहृत्प्रियतम् = मित्राणां प्रियत्वम्, **गरीयसी** = महती, भूयसी, **परिजनव्यपेक्षा** = भृत्यसम्मान करणम्, **स्मितपूर्वाभिभाषिवम्** = स्मितं पूर्वम् यस्मिन् कर्मणि तद् यथा स्यात् तथा स्मितपूर्वम्, स्मित पूर्वम् अभिभाषते = वार्तालापं कुरुते तच्छीलाः इति स्मितपूर्वाभिभाषी तस्य भावः स्मितपूर्वाभिभाषित्वम्, **उद्रिक्तसत्वता** = समधिकसारत्वम्, **दाक्षिण्यानुवर्तनम्** = दक्षिण प्रवहरणम् वर्द्धते, **अपत्योत्पादनेन** = सन्तानोत्पादनेन, **उभयलोकश्रेयस्करत्वम्** = इह लोके परलोके च मङ्गल करत्वं जायते।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—उत्तमाङ्गनोपभोगे—उत्तमाश्च ता अंगनाः इति उत्तमाङ्गनाः (कर्मधारण्य) तासां उपभोग उत्तमाङ्गनोपभोगः तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अर्थधर्मयोः**—अर्थश्च धर्मश्च इति अर्थधर्मौ तयोः (द्वन्द्व)। **पुरुषाभिमानः**—पुरुषस्य अभिमानः इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **भावज्ञानकौशलम्**—भावानां ज्ञानम् इति भावज्ञानम् (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मिन् तत्र वा कौशलम् इति भावज्ञानकौशलम्। **वैचक्षण्यम्**—विचक्षणस्य भावः वैचक्षण्यम्। विचक्षण+ष्यञ्। **अभ्युपायरचनया**—अभ्युपायस्य रचना अभ्युपायरचना तया (षष्ठी तत्पुरुष)। **बुद्धिवाचोः**—बुद्धिश्च वाक् च इति बुद्धिवाचौ तयोः (द्वन्द्व)। **पाटवम्**—पटोः भावः कर्म वा पाटवम्। **उत्कृष्टशरीरसंस्कारात्**—शरीरस्य संस्कारः इति शरीरसंस्कारः (षष्ठी तत्पुरुष), उत्कृष्टश्चासौ शरीरसंस्काराश्च उत्कृष्टः शरीर-संस्कारः तस्मात् (कर्मधारय)। **सुभगवेषतया**—सुभगः वेषः इति सुभगवेषः तस्य भावः सुभगवेषता तया (कर्मधारय)। **सुहृत्प्रियत्वम्**—सुहृदां प्रियः इति सुहृत्प्रियः (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य भावः सुहृत्प्रियत्वम्। **दाक्षिण्यानुवर्तनम्**—दक्षिणस्य भावः दाक्षिण्यम् दाक्षिण्यस्य अनुवर्तनम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अपत्योत्पादनेन**—अपत्यानां उत्पादनम् इति अपत्योत्पादनम् (षष्ठी तत्पुरुष) तेन। **उभयलोकश्रेयस्करत्वम्**—उभयौ च तौ लोकौ इति उभयलोकौ (कर्मधारय) तयोः श्रेयः करोति इति उभयलोकश्रेयस्करत्वम्।

(21) पानेऽपि नानाविधरोगभङ्गपटीयसामासवानामासेवनात्स्पृहणीयवयोव्यवस्थापनम्, अंहकारप्रकर्षादशेषदुःखतिस्करणम्, अङ्गजरागदीपनादङ्गनोपभोगशक्तिसंधुक्षणन्, अपराध-प्रमार्जनान्मनः शल्योन्मार्जनम्, अश्राव्यशंसिभिरनर्गलप्रलापैर्विश्वासोपबृंहणम्, मत्सरा-ननुबन्धादानन्दैकतानता, शब्दादीनामिन्द्रियार्थानां सातत्येनानुभवः संविभागशीलतया-सुहृद्वर्गसंवर्गणम्, अनुपमानमङ्गलावण्यम् अनुत्तराणि विलसितानि, भयार्तिहरणाच्च साङ्ग्रामिकत्वमिति। वाक्पारुष्यं दण्डो दारुणो दूषणानि चार्थानामेव यथावकाशमौपकारिकाणि। नहि मुनिरिव नरपतिरूपशमरतिरभिभवितुमरिकुलमलम्, अवलम्बितुं च लोकतन्त्रम् इति।

कठिन-शब्दार्थ—पानेऽपि = मद्यपान में भी, **नानाविधरोगभंगपटीयसीम्** = अनेक प्रकार के रोगों के नाश करने में समर्थ, **आसेवनात्** = सेवन करने से, **स्पृहणीय-वयोव्यवस्थापनम्** = मनचाही उम्र की रचना, **अहंकारप्रकर्षात्** = अभिमान के आधिक्य के कारण, **अगजरागदीपनात्** = कामवासनाओं के उमड़ने के कारण, **सन्धुक्षण** = वृद्धि होना, **अपराधप्रमार्जनात्** = अपराधों को क्षमा करने से, **मनः-शल्योन्मूलनम्** = मानसिक व्यथा का विनाश, **अश्रव्यशंसिभिः** = न सुनाये जाने योग्य बातों को भी,

उपबृंहणम् = बुद्धि, **मत्सरानुबन्धनात्** = ईर्ष्या धारण न करने, **आनन्दैकतानता** = आनन्द में लीन हो जाना, **इन्द्रियार्थानाम्** = इन्द्रियों के विषयों का, **सातत्येन** = निरन्तरता, **संविभागशीलतया** = बराबर बराबर हिस्सा बाँट देने वाला, **अनुपमानम्** = अतुलनीय, **अङ्गलावण्यम्** = शारीरिक सौन्दर्य, **विलसितानि** = मनोविनोद, **वाक्-पारुष्यम्** = वाणी की कठोरता, **यथावकाशम्** = अवसर पड़ने पर, **औपकारिणि** = उपकारक, **उपशमरति** = शान्तिप्रिय, **अभिभवितुम्** = दबाने के लिए, **अरिकुलम्** = शत्रु कुल को।

हिन्दी-अनुवाद—मद्यपान में भी विविध प्रकार के रोगों को नाश करने की सामर्थ्य से युक्त आसवों के सेवन से मनचाही आयु की रचना होती है, अहंकार बढ.जाने के कारण सम्पूर्ण दु:खों को तिरस्कृत करने की सामर्थ्य आ जाती है, कामवासनाओं के उमड़ जाने से स्त्रियों से सम्भोग करने की क्षमता बढ.जाया करती है, (अन्य लोगों के) अपराधों के क्षमा करते रहने के कारण मानसिक कष्टों (पीड़ाओं) का विनाश हो जाता है, न सुनाने योग्य बातों का उद्घाटन करने वाले अनियन्त्रित प्रलापों के कारण लोगों का (अपने में) विश्वास बढ.जाया करता है। ईर्ष्या (डाह) के (शराब के नशे में) विद्यमान रहने के कारण आनन्द की अनन्यवृत्तिता आती है, शब्द आदि इन्द्रियों के विषयों का निरन्तरता के साथ अनुभव हुआ करता है, समान रूप से हिस्सा बाँटने की प्रकृति पड़ जाने के कारण मित्रसमूह का एकत्रित होना हुआ करता है (अर्थात् मित्र लोग इकट्ठे हुआ करते हैं)। अतुलनीय शारीरिक सौन्दर्य प्राप्त होता है, जिनसे बढ़कर (संसार में) विलास होते ही नहीं, ऐसे विलास (भोगने के निमित्त) उपलब्ध हुआ करते हैं, भय तथा शोक के दूर हो जाने से संग्राम करने का स्वभाव बन जाता है। वाणी की कठोरता (दूसरों को बुरा-भला, अपशब्द कहना) इत्यादि (दूसरों को) भयंकर दण्ड देना, दूसरों की धन-सम्पत्ति इत्यादि को हड़प कर अपने कार्य में लगा लेना, ये सभी गुण अवसर आने पर बड़े ही उपकारी होते हैं (अर्थात् काम आते हैं)। मुनि के सदृश, शान्तिप्रिय राजा न तो अपने शत्रु-कुल को ही दबाने में समर्थ हो सकता है और न लोकतन्त्र का ही सहारा लेने में।

संस्कृत-व्याख्या—**पानेऽपि** = मद्यपानेऽपि, **नानाविधरोग**=भंगपटीयसाम् = विविधव्याधिनाशसमर्थानाम्, **आसवानाम्** = मद्यानाम्, **आसेवनात्** = पानात्, उपभोगात्, **स्पृहणीयवयोव्यवस्थापनम्** = मनोहारिशरीरघटनम्, **अंहकारप्रकर्षात्** = दर्पाधिक्यात्, **अशेषदु:खतिरस्करणम्** = सकलदु:खोपेक्षा, **अङ्गरागदीपनात्** = कामवासनावृद्धिकरणात्, **अंगनोपभोगशक्तिसन्धुक्षणम्** = स्त्रीसंभोगशक्तिवर्द्धनम्, **अपराधप्रमार्जनात्** = दोषाणां क्षमाकरणात्, **मन:शल्योन्मूलनम्** = मनोव्यथानाश:, **अश्राव्यशंसिभि:** = गोप्यवार्तासूचकै:, **अनर्गलप्रलापै:** = अनियन्त्रितै: अनर्थवचनै:, **विश्वासोपबृंहणम्** = प्रतीतसंवृद्धि:, **मत्सराननुबन्धात्** = मत्तसरस्य, मात्सरस्य आधारणात्, **आनन्दैकतानता** = आनन्दस्यानन्यवृत्तिता, शब्दादीनाम्, इन्द्रियार्थानां चक्षुरादीन्द्रियविषयाणाम्, **सातत्येन** = नैरन्तर्येण, **अनुभव:** = उपभोग:, **संविभागशीलतया** = आयतेभ्य: सर्वेभ्योऽपि मद्यस्य सम्यग् वण्टनं संविभाग: तच्छीलतया,

सुहृदवर्गसंवर्गणम् = मित्रसमूहसंयोजनम्, **अनुपमानम्** = अद्वितीयम्, **अङ्गलावण्यम्** = शरीरसौन्दर्यम्, **अनुत्तराणि** = अलौकिकानि, **विलसितानि** = आमोदप्रमोदा:, **भयार्तिहरणाच्च** = त्रासस्य शोकस्य च नाशनात्, **साङ्ग्रामिकत्वम्** = युद्धपटुत्वम् इत्यर्थ:।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—नानाविधरोगभंगपटीयसाम्—नाना विधा येषां ते नानाविधा: (बहुव्रीहि), नानाविधाश्च ते रोगा: इति नानाविधरोगा: (कर्मधारय)। तेषां भंग: इति नानाविधरोगभंग: (षष्ठी तत्पुरुष)। नानाविधरोगभंगे पटीयांस: इति नानाविधरोग-भंगपटीयांस, तेषाम् नानाविधरोगभंगपटीयसाम्। **व्यवस्थापनम्**—वि, अव+स्थाप्+ल्युट्। **स्पृहणीयवय:**—स्पृहणीयश्च तद् वय: इति स्पृहणीयवय: (कर्मधारय)। **अपराध-प्रमार्जनात्**—अपराधानां प्रमार्जनम् इति अपराधप्रमार्जनम्, तस्मात् (षष्ठी तत्पुरुष)। **मन:शल्योन्मूलनम्**—मनस: शल्यम् इति मन:शल्यम् (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य उन्मूलनम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अनर्गलप्रलापै:**—अनर्गलाश्च ते प्रलापा: इति अनर्गलप्रलापा: तै: (कर्मधारय)। **मत्सुराननुबन्धात्**—न अनुबन्ध: अननुबन्ध: मत्सरस्य अननुबन्ध:, मत्सराननुबन्ध: (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मात्। **आनन्दैकतानता** = आनन्दस्य एकतानता इति (ष.त.)। **इन्द्रियार्थानाम्**—इन्द्रियाणां अर्था: इन्द्रियार्था: तेषाम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अनुपमानम्**—न विद्यते उपमानं यस्य तत् (बहुव्रीहि)। **लावण्यम्**—लवण+ष्यञ्। **सांग्रामिक**—संग्राम+ठक्। **पारुष्यम्**—परुष+ष्यञ्। **भयार्तिहरणात्**—भयं च आर्तिश्च इति भयार्ती (द्वन्द्व) वयो: हरणम् इति भयार्तिहरणम्, तस्मात् (षष्ठी तत्पुरुष)। **वाक्पारुष्यम्**—वाच: पारुष्यम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **उपशमरति:**—उपशमे रति: यस्य स: (बहुव्रीहि)। **अरीकुलम्**—अरीणाम् कुलम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

(22) असावपि गुरुदेशमिवात्यादरेण तस्य मतमन्वर्त्तत। तच्छीलानुसारिण्यश्च प्रकृतयो विशृंङ्खलमसेवन्त व्यसनानि। सर्वश्च समानदोषतया न कस्यचिच्छिद्रान्वेषणायायतिष्ट। समानभर्तृप्रकृतयस्तन्त्राध्यक्षा: स्वानि कर्मफलान्यभक्षयन्। तत: क्रमादायद्वाराणि व्यशीर्यन्त। व्ययमुखानि विटविधेयतयातयाविभोविभोरहरहर्व्यवर्धन्त। सामन्तपौरजानपद-मुख्याश्च समानशीलतयोपारूढविश्रम्भेण राज्ञा सजानय: पानगोष्ठीष्वभ्यन्तरीकृता: स्वं स्वमाचारमत्यचारिषु:।

कठिन-शब्दार्थ—असावपि = वह राजा अनन्तवर्मा भी, **मतम्** = विचार को, **अन्वर्त्तत** = पालन करता था, **तच्छीलानुसारिण्य:** = राजा के आचरण का अनुसरण करने वाली, **विशृंङ्खलम्** = नियन्त्रण से रहिता, **अयतिष्ठ** = प्रयास करता था, **आपद्वाराणि** = आमदनी के साधन, **व्यशीर्यन्त** = विनष्ट हो गये, **विधेय** = आज्ञापालक, **व्ययमुखानि** = खर्चे के मार्ग, साधन, **अहरह:** = प्रतिदिन, **पौर:** = नगरवासी, **जानपदा** = देशव्यापी, **समानशीलतया:** = समान आचरण होने के कारण, **उपारूढविश्रम्भेन** = उत्पन्न हो गया था विश्वास जिनके, **आचारम्** = मर्यादा को, **सजानय:** = सपत्नीक।

हिन्दी-अनुवाद—उस (राजा अनन्तवर्मा) ने भी उस (चन्द्रपालित) के उपदेश को गुरु के उपदेश के सदृश आदर के साथ स्वीकार कर लिया (अनुसरण किया)। तदनन्तर राजा के (यथा राजा तथा प्रजा के सिद्धान्तानुसार) आचरण का अनुसरण करने वाली प्रजा

नियन्त्रण रहित होकर (अपनी इच्छानुसार) व्यसनों का सेवन करने लगी। सभी व्यक्ति एक समान दोषों से युक्त हो जाने के कारण एक-दूसरे के छिद्रान्वेषण के निमित्त प्रयत्न नहीं करते थे। (इस भाँति) प्रजा तथा राजा एक जैसे हो गये। विभिन्न विभागों के अधिकारी (जिनका स्वभाव राजा के सदृश ही हो चुका था) भी अपने-अपने कार्यों का फल भोगने लगे (अर्थात् प्रजा से धन इत्यादि लूट-खसोट अथवा रिश्वत के रूप में लेकर अपनी कार्य सिद्धि करने लगे)। धीरे-धीरे आय के सभी दरबाजे बन्द हो गये। इधर धूर्तों के वशीभूत मदिरापान तथा वेश्यागमन में अनुरक्त रहने से राजा का व्यय बढता गया। उस धूर्त ने राजा के सामन्तों, धनिकों तथा रइसों को भी स्त्रियों का विश्वास दिलाकर अपनी ओर मिला लिया।

संस्कृत-व्याख्या—असावपि = असौ नृपः अनन्तवर्मा अपि, **गुरुपदेशम्** = गुरोः उपदेशः गुरुपदेशम् = गुर्वाज्ञाम्, **इव** = यथा, **अत्यादरेण** = अतिसम्मानेन, **तस्य मतम्** = चन्द्रपालितस्य अनुमतिम्, **अन्ववर्तत्** = अन्वसरत्, अपालयत्, **तच्छीलानुसारिण्यः** = नृपाचरणानुगामिन्यः, **प्रकृतयः** = प्रजा, **विश‍ृङ्खलम्** = नियन्त्रणरहितम्, **असेवन्तः** = सेवितवन्तः, **व्यसनानि** = दुर्वृत्तानि, **सर्वश्च** = सर्वे जनाः, **समानदोषतया** = नृपतुल्यदुराचारितया, **न कस्यचित्** = कस्यचिदपि जनस्य, **छिद्रान्वेषणम्** = दोषानुसन्धानाय, **अयतिष्ट** = प्रयत्नम् न अकरोत्, **समानभर्तृप्रकृतयः** = भर्तरि प्रकृतौ च समाने जाते सति, **तन्त्राध्यक्षाः** = भिन्न-भिन्नविभागाध्यक्षाः, **स्वानि** = स्वानि-स्वानि, **कर्मफलानि** = पूर्वसुकृतफलान्यभक्षयन्, **खादितवन्तः** = तेऽपि दुर्वत्ता अभवन्नित्यर्थः, **ततः** = तदनन्तरम्, **क्रमात्** = क्रमशः, शनैः शनैः वा, **आपद्द्वाराणि** = अर्थागमस्य साधनानि, **व्यशीर्यन्त** = क्षीणा बभूवुः, **विभोः** = राज्ञः, **विटविधेयतया** = कामुकानां वशीभूततया, **व्ययमुखानि** = व्ययस्य मुखानि, **अहरहः** = प्रतिदिनम्, **व्यवर्धन्तः** = वृद्धिं प्राप्तवन्तः, सामन्तपौर-जानपदमुख्याः, **समानशीलतया** = तुल्याचरणतया, **उपारूढविश्रम्भेण** = ज्ञातविश्वासेन, **राज्ञा** = नृपतिना, **सजानया** = सपत्नीकाः, **पानगोष्ठीषु** = मदिरापानमण्डलीषु, **अभ्यन्तरीकृता** = प्रवेशिताः, **स्वं स्वम् आचारम्** = स्व-स्वमर्यादाम्, **अत्यचारिषुः** = लंघयामासुः।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—गुरुपदेशम्—गुरोः उपदेशः, गुरुपदेशः, तम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **विश‍ृङ्खलखम्**—विगता श‍ृंखला यस्मिन् तत् विश‍ृंखलम्। **छिद्रान्वेषणाय**—छिद्राणां अन्वेषणाय इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **विटविधेयतया**—विटानां विधेयः विटविधेयः (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य भावः विटविधेयता तया। **व्ययमुखानि**—व्ययस्य मुखानि इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अहरहः**—अहनि अहनि इति (अव्ययीभाव)। **जानपदाः**—जनपदमेव जानपदाः (जनपद+अण्)। **समानशीलतया**—समानं शीलं येषां ते समानशीलाः (बहुव्रीहि) तेषां भावः समानशीलता तया। **सजानयः**—विद्यमानाः जायाः येषां ते सजानयः (बहुव्रीहि)। **अभ्यन्तरीकृता**—न अभ्यन्तरः अनभ्यन्तराः अनभ्यन्तराः कृता इति अभ्यन्तरीकृता।

(23) तदङ्गनासु चानेकापदेशपूर्वमपाचरन्नरेन्द्रः। तदन्तःपुरेषु चामी भिन्नवृत्तेषु मन्दत्रासो बहुसुखैरवर्त्तन्त। सर्वश्च कुलाङ्गनाजनः पांसुलजनभङ्गिभाषणरतो भग्नचारित्र्ययन्त्रणस्तृणायापि न

गणयित्वा भर्तृधातृगणमन्त्रणाश्रृणोत्। तन्मूलाश्च कलहाः सामर्षाणामुदभवन्। अहन्यन्त दुर्बलाबलिभिः अपहृतानि धनवतां धनानि तस्करादिभिः। अपहृतपरिभूतयः प्रहताश्च पातकपथाः। हतबान्धवा हतवित्ता वधबन्धातुराश्च मुक्तकण्ठमाक्रोशन्नश्रुकण्ठ्यः प्रजाः।

कठिन-शब्दार्थ—अनेकापदेशपूर्वम् = नाना प्रकार के बहानों से, **अपाचरत्** = बुरे आचरण किया करता था, **तदन्तःपुरेषु** = राजा की रानियों में, **भिन्नवृत्तेषु** = पतित आचरण वाली, **मन्दत्रासः** = भयरहित, **पांसुल** = विषयी व्यक्ति, **गणयित्वा** = गिनकर, **धातृगणमन्त्राणि** = जारों की सम्मति, **सामर्षाणाम्** = असहनशील व्यक्तियों का, **पातकपथाः** = पापों के मार्ग, **आक्रोशन्** = विलाप करती थी, **मुक्तकण्ठम्** = खुले हुए गले से, गला फाड़ कर।

हिन्दी-अनुवाद—अनेक बहाने बनाकर राजा ने उनकी स्त्रियों के साथ (भी) दुराचार किया तथा वे (सामन्त, नागरिक आदि) भी भयरहित होकर उसकी (राजा की) रानियों के साथ सुखपूर्वक व्यवहार करने लगे। विषयी पुरुषों की भावपूर्ण कथन शैली में निरत (आकर्षित) अन्तःपुर की सभी स्त्रियाँ चरित्रसम्बन्धी बन्धन का उल्लंघन कर अपने स्वामी को तिनके के समान भी न गिनकर जार (आचरण भ्रष्ट धूर्त्तजन) पुरुषों की ही विचारधाराओं का श्रवण करने लगीं। असहनशील लोगों में (परस्पर) ऐसे झगड़े उत्पन्न हो गये (कि जिनका मूल कारण चरित्रहीनता थी)। निर्बल, बलि पुरुषों द्वारा मार दिये गये। धनी व्यक्तियों का धन चोर-डाकुओं द्वारा हर लिया गया। जिन पापों के करने से तिरस्कारित (अपमानित) होने का भय न रह गया था ऐसे पाप कुचल दिये। जिन प्रजाजनों (स्त्री-पुरुष दोनों) के भाई-बन्धु मार डाले गये थे जिनका धन भी अपहरण कर लिया गया था, जो वध (कत्ल) तथा बन्धन (कारावास) से व्याकुल (परेशान) हो चुके थे, वे अश्रुधारा से परिपूर्ण गलों से युक्त होकर, मुक्त कण्ठ से (गला फाड़ कर) रोने लगे।

संस्कृत-व्याख्या—अनेकापदेशपूर्वम् = विविधव्याजपूर्वकम्, **तदङ्गनासु** = तस्य स्त्रीषु, **नरेन्द्र** = नृपः, **अपाचरत्** = दुराचारमकरोत्, **तदन्तःपुरेषु** = राज्ञः स्त्रीषु, **चामी** = च इमे सामन्तादयः, **भिन्नवृत्तेषु** = विनष्टचरित्रेषु, **मन्दत्रासो** = भयरहितो भूत्वा, **बहुसुखैः** = सुखपूर्वकम्, **अवर्त्तन्त** = व्यवहारं कृतवन्तः, **सर्वश्च** = अखिलश्च, **कुलाङ्गनाजनः** = अन्तःपुरस्त्रियः, **पांसुलजनभङ्गिभाषणरतः** = कामुकजनवक्रभाषित-संलग्नः, **भग्नचारित्र्य- यन्त्रणः** = विनष्टसदाचारबन्धनः, **तृणाय अपि न गणयित्वा** = लेशमात्रमपि आदरम् अकृत्वा, **धातृगणमन्त्रणानि** = जाराणां वचनानि, **अश्रृणोत्** = अपालयत्, **तन्मूलाश्च कलहाः** = तज्जनिताः सङ्घर्षाः, **सामर्षाणाम्** = असहिष्णूनाम्, **उदभवन्** = उत्पन्नाः अभवन्, **दुर्बलाः** = क्षीणकायाः कृशगात्राः वा, **बलिभिः** = शक्तिवद्भिः, **अहन्यन्त** = मृतयन्तः, पञ्चतत्त्वं गता, **धनवताम्** = धनयुक्ताम्, **धनानि** = वसूनि, **तस्करादिभिः** = चौरादिभिः, **अपहृतानि** = अपहरणं कृतानि, मुष्टानि, **अपहृतपरिभूतयः** = अपहृताः गताः, **परिहृतयः** = तिरस्काराः त्यागाः वा, येषां ते **अपहृतपरिहृतयः, तथोक्ता पातकपथाः** = पापमार्गाः, पापमार्गप्रवृत्तानपि न कश्चित्तिरस्करोतीत्यर्थः, **हतबान्धवाः** = हताः बान्धवाः येषां ते एतादृशाः, स्त्रीपुरुषाः,

हतवित्ता = हृतं वित्तं येषां ते, तादृशाः, **वधबन्धातुराश्च** = वधश्च बन्धश्च इति वधबन्धौ, वधबन्धनाभ्यां आतुराः व्याकुलाः, **मुक्तकण्ठम्** = मुक्तः कण्ठः यस्मिन् कर्मणि तद् यया स्यात् तया मुक्तकण्ठम्, उच्चैरुदित्या इत्याशयः, **आक्रोशन्** = व्यलपन्, **अश्रुकण्ठ्यः** = वाष्पगद्गदस्वराः, **प्रजा** = जनताः।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—अनेकापदेशपूर्वम्—न एके इति अनेके, अनेके च ते अपदेशाः अनेकापदेशाः (कर्मधारय), अनेकापदेशाः पूर्वं यस्मिन् तत्। **तदन्तःपुरेषु**—तस्य अन्तःपुराणि इति (षष्ठी तत्पुरुष) तदन्तःपुराणि तेषु। **भिन्नवृत्तेषु**—भिन्नं वृत्तं येषां तानि भिन्नवृत्तानि तेषु (बहुव्रीहि)। **मन्दत्रासाः**—मन्दाः त्रासाः येषां ते मन्दत्रासाः (बहुव्रीहि)। **पांसुलजनभङ्गिभाषणरतः**—पांसुलाश्च ते जना इति पासुलजनाः (कर्मधारय) तेषां भङ्गिभाषणम् इति पांसुलजनभङ्गिभाषणम् (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मिन् रतः इति। **कुलाङ्गना**—कुले जाता इति कुलजाताः कुलजाताः भङ्गनाः कुलाङ्गनाः (कर्मधारय)। **सामर्षाणाम्**—विद्यमानः अमर्षः येषां ते सामर्षा तेषां (बहुव्रीहि)। **अपहृतपरिभूतयः**—अपहृताः परिभूतः येषां ते (बहुव्रीहि)। **पातकपथाः**—पातकानां पन्थानः पातकपथाः (षष्ठी तत्पुरुष)। **वधबन्धातुराः**—वधश्च बन्धश्च, वधबन्धौ (द्वन्द्व), ताभ्याम् आतुरा (तृतीया तत्पुरुष)। **मुक्तकण्ठम्**—मुक्तः कण्ठः यस्मिन् तत्। **अश्रुकण्ठ्या**—अश्रूणि कण्ठे यासां ताः (बहुव्रीहि)।

विशेष—(i) राजा व उसके सामन्तों के आचरण पर इस गद्यांश में प्रकाश डाला गया है। साथ ही प्रजा में व्याप्त अराजकता व चारित्र्यहीनता पर भी प्रकाश डाला गया है।

(24) दण्डश्चायथाप्रणीतो भयक्रोधावजनयत्। कृशकुटुम्बेषु लोभः पदमधत्त। विमानिताश्च तेजिस्वनोऽवमानेनादह्यन्त। तेषु-तेषु चाकृत्येषु प्रासरन्परोपजायाः। तदा च मृगयुवेषमृगबाहुल्यवर्णनेनाद्रिद्रोणीरनपसारमार्गाः शुष्कतृणवंशगुल्माः प्रवेश्य द्वारतोऽग्निविसर्गैः, व्याघ्रादिवधे प्रोत्साह्य तन्मुखपातनैः, इष्टकूपतृष्णोत्पादनेनातिदूरहारितानां प्राणहारिभिः क्षुत्पिपासाभिर्वर्धनैः, तृणगुल्मगूढच्छन्नतटप्रदरपातहेतुभिर्विषममार्गप्रधावनैः विषमुखीभिः क्षरिकाभिश्चरणकण्टकोद्धरणैः विष्वग्विरसविच्छिन्नानुयातृतयैकाकीकृतानां यथेष्टघातनैः, मृगदेहापराद्धैर्निमिषुमोक्षणैः सपणबन्धमधिरुह्याद्रिशृङ्गाणि दुरधिरोहान्यन्यलक्ष्यैः प्रभ्रंशनैः, आटविकच्छद्मना विपिनेषु विरलसैनिकानां प्रतिरोधनैः, अक्षद्यूतपक्षियुद्धयात्रोत्सवादिसंकुलेषु बलवदनुप्रवेशनैः इतरेषां हिंसोत्पादनैः, गूढोत्पादितव्यलीकेभ्योऽप्रियाणि प्रकाशं लब्ध्वा साक्षिषु तद्विख्याप्याकीर्तिगुप्तिहेतुभिः पराक्रमैः परकलत्रेषु सुहृत्त्वेनाभियोज्य जारान्भर्तृनुभयमपहत्योतत्साहसोपन्यासैः योग्यनारीहारितानां संकेतेषु प्रागुपनिलीय पश्चादभिद्रुत्याकीर्तनीयैः प्रमापणैः, उपप्रलोभ्य बिलप्रवेशेषु निधानखननेषु मन्त्रसाधनेषु च विघ्नव्याजसाध्यैर्व्यापादनैः, मत्तगजाधिरोहणाय प्रेर्यप्रत्यपादायनिवर्तनैः, व्यालहस्तिनं कोपयित्वा लक्ष्यीकृतमुख्यमण्डलेष्वपक्रमणैः, दायाद्यर्थे विवदमानानुपांशु हत्वा प्रतिपक्षेष्वयशः पातनैः सामन्तपुरजनपदेष्वयथावृत्तानप्रकाशमभिप्रहृत्य तद्वैरिनामघोषणैः, योग्याङ्गनाभिरहर्निशमभिरमय्य राजयक्ष्मोत्पादनैः,

वस्त्राभरणमाल्याङ्गरागादिषु रसविधानकौशलैः, चिकित्सामुखेनामयोपबृंहणैरन्यैश्चाभ्युपायैरश्मकेन्द्रप्रयुक्तास्तीक्ष्णरसदादयः प्रक्षपितप्रवीरमनन्तवर्मकटकं जर्जरमकुर्वन्।

कठिन-शब्दार्थ—**अयथाप्रणीतः** = उचित रीति से न दिया गया (दण्ड), **कृश** = दरिद्र दुर्बल, **अदहान्त** = जलने लगे, **विमानिताः** = अपमानित, **अकृत्येषु** = न करने योग्य कार्यों में, **परोपजायाः** = शत्रुओं द्वारा किये गये षड्यन्त्र, **अद्रिद्रोणी** = पहाड़ी घाटियाँ, **अपसार** = निकलना, **गुल्माः** = ढेर, **प्रोत्साह्य** = उत्साह पैदा करके, **अग्निविसर्गैः** = आग लगा-लगाकर, **तन्मुखपातनै** = उनके मुख में फेंककर, **क्षुत्** = भूख, **इष्टकूप** = अभीष्ट कुआ, **प्राणहारिभिः** = प्राण ले लेने वाले, **प्रधावन** = तेज दौड़ना, **कण्टक** = काँटा, **विष्वक्** = चारों ओर, **विसर** = जाना, गमन करना, **एकाकीकृत** = अकेले, सहायक रहित, **इषु मोक्षणैः** = बाणों के छोड़ने से, **सपणबन्धन्** = शर्तबाती लगाकर, **दुरधिरोहाणि** = बड़े कष्ट के साथ चढ़ने योग्य, **प्रतिरोधनैः** = रुकावटों से, **संकुल** = व्याप्त, **इतरेषाम्** = अन्य लोगों का, **साक्षिषु** = देखने वाले लोगों के समक्ष, **सुहृत्त्वेन** = मित्रता के रूप में, **जारान्** = व्यभिचारियों को, **प्रमापणैः** = वध से, **उपनिलीय** = छिपकर, **अभिद्रुत्य** = आक्रमण कर, **अकीर्तनीयैः** = निन्दनीय, **विलेषु** = गुफाओं के अन्दर, **निवर्तन** = मुख मोड़ लेना, **व्यालहस्तिनम्** = दुष्ट हाथी को, **अपक्रमणैः** = टोककर (हटाकर), **दायाद्यर्थे** = पैतृक सम्पत्ति में, **अयशःपातनैः** = अपयश के स्थापन से, **सामन्त** = जागीरदार, **रस** = विष, **आमय** = रोग, **उपबृंहण** = बढ़ना, **कटकम्** = सेना, **प्रक्षपित** = नाश कर दिये गये, **जर्जरम्** = तितर-बितर।

हिन्दी-अनुवाद—अनुचित ढंग से दिये गये दण्ड ने (प्रजाओं के जनों में) भय तथा क्रोध को उत्पन्न कर दिया (अनुचित रूप से दण्ड दिये जाने लगे—जो अदण्डनीय था उसे दण्ड का न दिया जाना प्रारम्भ हो गया, इसी कारण प्रजाजन भयभीत हो गये और घबराने लगे)। धनहीन परिवारों में लोभ ने पैर जमा लिया अर्थात् लोग लोभी हो गये। अपमानित व्यक्ति अपमान के कारण जलने लगे (जिन आत्माभिमानी व्यक्तियों का अपमान हुआ था वे व्यक्ति अपमान के दुःख से दुःखी होने लगे)। शत्रुओं के षड्यन्त्र अनेक प्रकार के दुष्कृत्यों के रूप में फैल गये (अर्थात् नाना प्रकार के अनाचारों से धीरे-धीरे शत्रुओं द्वारा प्रचारित भेदनीति सफल हो गयी)। बहेलियों के वेश को धारण कर जंगली प्राणियों से व्याप्त वनों में, हरिणों के आधिक्य सम्बन्धी वर्णन से (अमुक वन में मृगों की संख्या अधिक है ऐसा लोभ दिखाकर), सूखी घास, बाँस तथा झाड़ियों से परिपूर्ण और निस्सरण (निकालने) के मार्ग से रहित पर्वत की घाटियों में प्रवेश करा के (अनन्तवर्मा की सेना को नष्ट कर दिया), (पुनः) घाटी के मुख (दरवाजे) पर आँख लगाकर, व्याघ्र इत्यादि जन्तुओं के वध के निमित्त उत्साहित कर उनके (और इस भाँति उन लोगों को व्याघ्रादि के) मुखों में डालकर अच्छे कुएँ की प्राप्ति की तृष्णा उत्पन्न कर, अत्यन्त दूर स्थान पर ले जाकर, प्राण ले लेने वाली भूख को बढ़ा कर, घास तथा (ऊँची-ऊँची) झाड़ियों से ढके हुए निम्नोन्नत स्थानों से (नीचे) गिरा देने के लिए विषम (ऊँचे-ऊँचे) मार्गों पर दौड़कर, विष से बुझे हुए अग्रभाग वाले चाकुओं से पैरों में लगे हुए काँटों को निकालकर, चारों ओर चले जाने के

कारण उनके अनुगामियों को छिन्न-भिन्न कर, ये बाण मृगों (वन्य-जन्तुओं) के शरीर पर मारे गये थे, किन्तु वे उनके लग न सके इस बहाने से उन्हीं को (उन) बाणों से मारकर, बाजी लगाकर सरलतापूर्वक न बढ़ सकने योग्य पर्वत शिखरों पर चढ़कर तथा अन्य किसी के द्वारा न दिखायी पड़ते हुए (एकान्त में अपने को छिपाये हुए—जिससे कि कोई अन्य देख न ले) उन्हें (पर्वत के उच्च शिखर से) गिराकर, वनों में वनवासियों के वेश को धारण कर, कुछ थोड़े से सैनिकों को रोक कर तथा अंधों को जुआ खेलने में, पक्षियों की लड़ाई में, यात्रा सम्बन्धी उत्सवों की भीड़-भाड़ में बलपूर्वक (जबरदस्ती) घुसाकर और उनकी हिंसा करा कर छिपे हुए रूप में (उनको) विपत्ति में डलवा कर, उनसे स्पष्ट रूप से विरुद्ध प्रतिक्रिया पाकर तथा उस विरोध को साक्ष लोगों के समक्ष घोषित कर (अर्थात् साक्षी लोगों को उनकी बुराइयाँ और दोष दिखलाकर) पुन: (अपने) अपयश को दूर करने वाले पराक्रमों के द्वारा अन्य पुरुषों की स्त्रियों के साथ मित्र के रूप में सम्बन्ध स्थापित कराके, दुराचारियों अथवा पतियों को अथवा दोनों के मारकर, उन दुराचारियों के दुष्टतापूर्ण कार्यों को (प्रजा के समक्ष) रखकर, संकेत दिये गये स्थलों में पहले से ही छुपकर तत्पश्चात् आक्रमण कर, विश्वासघाती औरतों द्वारा लाये हुए व्यक्तियों को अकथनीय उपायों द्वारा कत्ल कराकर, कोषालयों (खजानों) को खोदने तथा मन्त्र सिद्धि के निमित्त (उन्हें उखाड़कर) गुफाओं में प्रविष्ट कराके, पुन: विघ्न के बहाने से (उनका) वध कर, मदमस्त हाथियों के ऊपर चढ़ने के लिए प्रेरणा प्रदान कर (उस हाथी की ओर से होने वाले) खतरों से बचने के उपायों की ओर से मुख मोड़कर, दुष्ट हाथियों को क्रोधयुक्त कर प्रमुख तथा उद्दिष्ट लोगों की गोष्ठी से उस हाथी को हाँककर, एकान्त में अपने पूर्व पुरुषों से प्राप्त भूमि, जागीर तथा धन इत्यादि के लिए (मुकदमे) लड़ने वालों का वध कर, विरोधी पक्ष के लोगों के ऊपर (नाना प्रकार के) दोषों को लगाकर, सामन्तों के नगरों तथा जनपदों में अनुरूप व्यवहार करने वालों को गुप्तरुप से मारकर (तथा) उनके शत्रुओं का नाम लगाकर, सुन्दरियों के साथ रात-दिन रमण कराके राजयक्ष्मा रोग पैदा कराकर, वस्त्र, आभूषण, माला, उबटन आदि में विष मिला देने की चतुरता से, चिकित्सा करने के बहाने (उल्टा) रोग को और बढ़ाकर तथा अनेक दूसरे-दूसरे उपायों के द्वारा (राजा) अश्मकन्द द्वारा नियोजित तीव्र विष देने वालों ने अनन्तवर्मा के वीर सैनिकों को नष्ट-भ्रष्ट कर (उसकी) सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया।

संस्कृत-व्याख्या—अयथाप्रणीत: = अन्यायकृत: दण्डश्च, **भयक्रोधौ** = **भीत्यमर्षौ** च, **अजनयत्** = उत्पादयामास, **कृशंकुटेम्बेषु** = दरिद्रपरिवारेषु, **लोभ: पदम्** **अधत्त** = लोभ: प्रवेशं कृतवान्, **विमानिता:** = अपमानिता:, अनादृता:, **तेजस्विन:** = सत्त्ववन्त:, प्रतापवन्त:, **अमानेन** = अपमानेन, **अदह्यन्त:** = महान्तं क्रोधमकुर्वन्, **तेषु तेषु** = विभिन्नप्रकारकेषु, **अकृत्येषु** = कुकर्मसु, अन्यायेषु, **परोपजाया:** = शत्रुकृता: भेदा, **प्रासरन्** = व्याप्तवन्त:, प्रसारितवन्त:, **तदा च** = तदनन्तरं च, **मृगयुवेषेण व्यग्र-रूपधारिण मृगबाहुल्यं वर्णनेन** = यन्मृगबाहुल्यवर्णनं तेन, विश्वासोत्पादनाय स्वयं मृगयुर्भूत्वा अत्र बहवो मृगा वर्तन्त इति कथयिसेत्यर्थ:, **अद्रिद्रोणी:** = पर्वतमध्ययद्धती:

अनपसारमार्गाः = निर्गमनमार्गरहिताः, **शुष्कतृण-वंशगुल्माः** = शुष्काणि तृणानि वंशगुल्मानि च यासु ताः, **प्रवेश्य** = जननान् प्रवेश्य, **द्वारतः** = द्रोणेः द्वारतः, **अग्निविसर्गैः** = अनलप्रदानैः, **व्याघ्रादिवधे** = व्याघ्रादिवधार्थम्, **प्रोत्साह्य** = उत्साहमुत्पाद्य, **तन्मुखपातनैः** = व्याघ्रमुखपातनैः, **इष्टकूपतृष्णोत्पादनेन** = अभिलषितकूपप्राप्ति-लालसाम् उत्पाद्य, अमुकस्थाने अत्यभीष्टः कूपोऽस्ति, तस्यैव जलं पेयम् इति कथयित्वा, तृष्णामुत्पाद्य, **अतिदूरहारितानाम्** = दूरं नीतानाम्, **प्राणहारिभिः** = जीवनान्तकरैः, **क्षुत्पिपासाभिः** = क्षुत् च पिपासा च इति क्षुत्पिपासे तयोः अभिवर्धनैः, **तृणगुल्म-गूढच्छन्नतटप्रदरपातहेतुभिः** = तृणगुल्मैर्गूढच्छन्नानामाच्छादितानां तटानामुच्चैः प्रदेशानाम्, **प्रदरेषु** = निम्नमार्गेषु, **पातहेतुभिः** = पतनकारणैः, **विषममार्गप्रधावनैः** = उच्चावचैः मार्गप्रधावनैः, **विषमुखीभिः** = विषलिप्ता ग्राभिः, क्षुरिकाभिः, **चरणकण्टकोद्धरणैः** = चरणेषु पादेषु लग्नानि कण्टकानि इति चरणकण्टकानि चरणकण्टकानां, **उद्धरणानि** = निस्सारणानि तैः चरणकण्टकोद्धरणैः, **विष्वक्** = इतस्ततः, समन्ताद, **विसरेण** = प्रसरणेन, विच्छिन्ना भ्रष्टा अनुयातारोऽनुसारिणो येषां तेषां भावस्तया। **एकाकीकृतानां** = निःसहायानाम्, **यथेष्टघातनैः** = यथेच्छकारणैः, **मृगदेहापराद्धैःनाम** = हरिणशरीरे लक्ष्यभ्रष्टैः, **इक्षुमोक्षणैः** = बाणक्षेपैः, **सपणबन्धम्** = पणं कृत्वा, **अधिरुह्य** = आरोहणं कृत्वा, **अद्रिशृङ्गाणि** = पर्वतशृङ्गाणि, **दुरधिरोहणानि** = दुःखेन अधिरोढुं योग्यानि इति दुरधिरोहाणि, **अनन्यलक्ष्यैः** = केनापि अलक्षितैः, **प्रभ्रंशनैः** = पातनैः, **आटविकच्छद्मना** = आटविक अरण्यकस्तस्य, **छद्मना** = कपटेन, **विपिनेषु** = काननेषु, **विरलसैनिकानाम्** = विरलाश्च ते सैनिकाः इति विरलसैनिकाः, तेषाम् विरल सैनिकानाम्, स्वल्पसैन्यानाम्, **प्रतिरोधनैः** = प्रतिरोधं कृत्वा, **अक्षद्यूतपक्षियुद्धयात्रोत्सवादिसंकुलेषु** = अक्षद्यूत = अक्षैः द्यूतक्रीडादिषु, पक्षियुद्ध = पक्षिणां युद्धेषु, यात्रोत्सवादिषु, संकेलेषु व्याप्तेषु, **बलवत्** = शक्तिवत्, **अनुप्रवेशनैः** = प्रेषणैः, **इतरेषाम्** = अन्येषां केषाञ्चित् योधानाम्, हिंसोत्पादनैः, **गूढोत्पादितव्यलीकेभ्यः** = गूढम् (गुप्तरूपेण) उत्पादितानि, **व्यलीकानि** = दुःखानि येषां तेभ्यः तत्सकाशभित्यर्थः, **अप्रियाणि** = क्षति, **प्रकाशं** = सर्वसमक्षम्, **अकीर्तिगुप्तिहेतुभिः** = अकीर्ते = अपयसो, गुप्तेः = गोपनस्य, हेतुभिः = कारणैः, पराक्रमैः साक्षिषु द्रष्टृषु, **तद्विख्याप्य** = तद्ख्यापयित्वा, घोषयित्वा, **परकलत्रेषु** = अन्येषां स्त्रीषु, **सुहृत्त्वेन** = मित्रत्वेन, **अभियोज्य** = सम्मिलनं कारयित्वा, **जारान्** = उपपतीन्, **भर्तृभयमपहृत्य** = भर्तृभीतिम् दूरीकृत्य, **तत्साहसोपन्यासैः** = तेषां जाराणां साहसानि सर्वजन समक्षं प्रकाश्य, **योग्यनारीहारितानाम्** = योगनारीभिः = भोग्याभिः नारीभिः हारितानाम् आकर्षितानाम्, **संकेतेषु** = संकेतस्थानेषु, **प्राक्** = प्रचमम्, **उपनिलीय** = प्रच्छान्नो भूत्वा, **पश्चादभिद्रुतय** = धावित्वा, **अकीर्तनीयैः** = निन्दनीयैः, **प्रमापणैः** = मारणैः, **उपप्रलोभ्य** = प्रलोभनं दत्त्वा, **बिलप्रवेशेषु** = गुफान्तर्गमनेषु, **निधाननखननेषु** =पृथ्वी खनित्वा गुप्तस्य निधेरु अनुसन्धानेष, **विघ्नव्याजसाध्यैः** = प्रत्यवायभिषेणकरणीयैः, **व्यापादनैः** = मारणैः, **मत्तगजाधिरोहणाय** = मत्तहस्त्याधिरोहणाम्, **प्रेर्य** = प्रेरयित्वा, **प्रत्यपादायनिवर्तनैः** = हिंसोत्पादनैः, **व्यालहस्तिनं** = दुष्टगजम्, **कोपयित्वा** =

क्रोधयित्वा, **लक्ष्यीकृतमुख्यमण्डलेषु** = न लक्ष्याः इति अलक्ष्याः अलक्ष्या लक्ष्याः कृता इति लक्ष्यीकृताः। लक्ष्यीकृताश्च, **ते मुख्याः** = प्रधानपुरुषाः, **तेषा मण्डलेषु** = समूहेषु, **अपक्रमणैः** = गजानां मोचनैः, **दायाद्यर्थे** = धनादि विषये, **विवदमानान्** = कलहं कुर्वाणान्, **उपांशु** = एकान्ते, **हत्वा** = निहत्य मारयित्वा, **प्रतिपक्षेषु** = शत्रुपक्षेषु, **अयशःपातनैः** = अपकीर्तिस्थापनैः, **सामन्तपुरजनपदेषु** = सामन्तानां पुरेषु देशेषु च, **अयथावृत्तान्** = असद्वृत्तान्, **अप्रकाशम्** = गुप्तरुपेण, **अभिप्रहृत्य** = हत्वा, **तद्वैरिनामघोषणैः** = तच्छत्रूणां नामख्यापनैः, **योग्याङ्गनाभिः** = सुन्दरस्त्रीभिः, **अहर्निशम्** = दिवारात्रम्, **अभिरमय्य** = सम्भोगं कारयित्वा, **राजयक्ष्मोत्पादनैः** = क्षयरोगं जनयित्वा, **वस्त्राभरणमाल्याङ्गरागादिषु** = वस्त्राभूषणस्त्रगाङ्गरागादिषु, **रसविधानकौशलैः** = विष-प्रदानचातुर्यैः, **चिकित्सामुखेन** = औषधकरणच्छालेन, **आमयोपबृंहणैः** = रोगवर्द्धनैः, **अन्यैश्च** = अपरैश्च, **अभ्युपायैः** = उपायैः, **अश्मकेन्द्रप्रयुक्ताः** = अश्मकेन्द्रेण (वसन्तभानुना) प्रयुक्ताः, **तीक्ष्णरसदादयः** = तीक्ष्णाश्च ते रसाश्च इति तीक्ष्णरसाः, तीक्ष्णरसान् ददति इति तिक्ष्णरसदाः, तेषां आदयः ते तीक्ष्णरसदादयः, **प्रक्षपितप्रवीरम्** = प्रक्षपिता विनाशिताः प्रवीरा योधा यस्य तत्, **अनन्तवर्मकटकम्** = अनन्तवर्मणः कटकम् सैन्यम्, **जर्जरम्** = जीर्ण-शीर्णम्, **अकुर्वन्** = कृतवन्तः।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—कृशकुटुम्बेषु—कृशानि च तानि कुटुम्बानि इति कृशकुटुम्बानि तेषु (कर्मधारय)। **परोपजायाः**—परेषां (शत्रुओं के) उपजायः इति (तत्पुरुष)। **मृगबाहुल्यवर्णनेन**—मृगानां बाहुल्यम् इति मृगबाहुल्यम्, तस्य वर्णनम् तेन (षष्ठी तत्पुरुष)। **अद्रिद्रोणीः**—अद्रीणां द्रोण्यः अद्रिदोण्यः ताः (षष्ठी तत्पुरुष)। **अनपसारमार्गाः**—अपसारस्य मार्गा इति अपसारमार्गा, अविद्यमानाः अपसारमार्गा यासु ताः (बहुव्रीहि)। **शुष्कतृणवंशगुल्माः**—शुष्कानि च तानि तृणानि इति शुष्कतृणानि (कर्मधारय), वंशानां गुल्मानि वंशगुल्मानि (षष्ठी तत्पुरुष), शुष्कतृणानि वंशगुल्मानि च यासु ताः (बहुव्रीहि)। **व्याघ्रादिवधे**—व्याघ्र आदि येषां ते व्याघ्रादयः (बहुव्रीहि) तेषां वधः व्याघ्रादिवधः तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष)। **तन्मुखपातनैः**—तेषां मुखानि तन्मुखानि (षष्ठी तत्पुरुष) तेषु पातनानि इति तन्मुखपातनानि तैः (सप्तमी तत्पुरुष)। **इष्टकूपतृष्णोत्पादनेन**—इष्ट कूपः इति (कर्मधारय) इष्टकूपः, तस्य तृष्णा इति इष्टकूपतृष्णा, तस्या उत्पादनं इति इष्टकूपतृष्णोत्पादनम् (षष्ठी तत्पुरुष) तेन। **अतिदूरहारितानाम्**—अतिशयितं दूरं इति अतिदूरम्, अतिदूरं हारिताः इति अतिदूर हारिताः तेषाम्। **क्षुत्पिपासाभिवर्धनैः**—क्षुत च पिपासा च इति क्षुत्पिपासं (द्वन्द्व); तयो अभिवर्धनानि इति क्षुत्पिपासाभिवर्धनानि (षष्ठी तत्पुरुष) तैः। **गुल्मतृणगूढच्छन्न-तटप्रवरपातहेतुभिः**—गुल्माश्च तृणानि च इति गुल्मतृणानि (द्वन्द्व) तटाश्च प्रदराश्च इति तटप्रदराः (द्वन्द्व) गुल्मतृणैः गूढ यथास्यात्तथा छन्ना इति गुल्मतृणगूढच्छन्नाः, गुल्मतृणगूढच्छन्नाश्च ते तट—प्रदराश्च इति गुल्मतृणगूढच्छन्नतटप्रदराः (कर्मधारय), तेषु पाता इति गुल्मतृणगूच्छन्नतटप्रदरपाताः, ते हेतवः येषां तानि तैः (बहुव्रीहि)। **विषममार्गप्रधावनैः**—विषमाश्च ते मार्गाश्च इति विषममार्गाः (कर्मधारय) तेषु प्रधावनानि

तै। **'विदमुखीभि**—विषं मुखेषु यासाँ ता विषमुख्य: (बहुव्रीहि) ताभि:। **चपणकण्टकोद्धरणै:**—चरणेषु लग्नानि कंटकानि इति चरणकंटकानि तेषां उद्धरणानि इति तै: (षष्ठी तत्पुरुष)। **विश्वग्विसरविछन्नानुयातृतया**—तिष्वक् (सभी दिशाओं में) विसर: (भ्रमण करना) इति विश्वग्विसर:, तेन विच्छिन्ना: अनुयातार: येषां ते विश्वग्विसरविच्छिन्नानुयातार: (बहुव्रीहि), तेषां भाव: तया। **मृगदेहापराद्धै:**—मृगाणां देहा: मृगदेहा: (षष्ठी तत्पुरुष) तेषु अपराद्धानि: तै: (षष्ठी तत्पुरुष)। **सपणबन्धम्**—विद्यमान: पणबन्ध: यस्मिन् तत्। **अनन्यलक्ष्यै:**—लक्षितुं योग्यानि इति लक्ष्याणि, अन्यै: लक्ष्याणि, इति अन्यलक्ष्याणि (तृतीया तत्पुरुष), न अन्यलक्ष्याणि, अनन्यलक्ष्याणि तै:। **आटविकछद्मना**—अटव्याँ चरन्तीति आटविका: आटविकानां छद्म् इति आटविछदन (षष्ठी तत्पुरुष) तेन। **विरलसैनिकानाम्**—विरलाश्च ते सैनिका: (विरलसैनिका:) (कर्मधारय) तेषाम्। **गूढोत्पादितव्यलीकेभ्य:**—गूढ उत्पादितानि व्यलीकानि येषां ते गूढोत्पादितव्यलीका: तेभ्य: (बहुव्रीहि)। **परकलत्रेषु**—परेषां कलत्राणि इति परकलत्राणि तेषु (षष्ठी तत्पुरुष)। **व्यालहस्तिम्**—व्यालश्चासौ हस्ती च इति व्यालहस्ती तम् (कर्मधारय)। **अयशपातनै:**—अयशस: पातनानि (षष्ठी तत्पुरुष) इति अयशपातनानि तै:। **योग्याङ्गनाभि:**—योग्याश्च ता अङ्गना: इति योग्याङ्गना: ताभि: (कर्मधारय)। **अहर्निशम्**—अहनि च निशि च (अहर्निशम्)। **रसविधानकौशलै:**—रसस्य विधानं इति रसविधानम् (षष्ठी तत्पुरुष), तस्मिन् कौशलानि इति रसविधानकौशलानि तै: (सप्तमी तत्पुरुष)। **चिकित्सामुखेन**—चिकित्साया: मुखम् इति चिकित्सामुखम् तेन (षष्ठी तत्पुरुष)। **प्रक्षपितप्रवीरम्**—प्रक्षपिता: वीरा: यस्य तत् (बहुव्रीहि)। **अनन्तवर्मकटकम्**—अनन्तवर्मण: कटकम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अभिप्रहत्य**—अभि+प्र+हृ+ल्यप्। **अभिरमय्य**—अभि+रम्+णिच्+ल्यप्। **आटविका:**—अटवी+ठक्। **अनुप्रवेशनै:**—अनु+प्र+विश्+णिच्+ल्युट्। **विसर्गै:**—वि+सृप्+घञ्। **प्रोत्साहा:**—प्र+उत्+सह्+णिच्+ल्यप्।

(25) अथ वसन्तभानुर्भानुवर्माणं नाम वानवास्यं प्रोत्साह्यानन्तवर्मणा व्यग्राहयत्। तत्परामृष्टराष्ट्रपर्यन्तश्चानन्तवर्मा तमभियोक्तुं बलसमुत्थानमकरोत्। सर्वसामन्तेभ्यश्चाश्मकेन्द्र: प्रागुनेत्यास्य प्रियतरोऽभूतं। अपरेऽपि सामन्ता: समसंगत। गत्वा चाभ्यर्णे नर्मदारोधसि न्यविशन्। तस्मिंश्चावसरे महासामन्तस्य कुन्तलपतेरवन्तिदेवस्यात्मनाटकीयां क्ष्मातलोर्वशी नाम चन्द्रपालितादिभिरतिप्रशस्तनृत्यकौशलामाहूयानन्तवर्मा नृत्यमद्राक्षीत्। अतिरक्तश्च भुक्तवानिमां मधुमत्ताम्।

कठिन-शब्दार्थ—**वानवास्य:** = वनप्रदेश का राजा, **व्यग्राहयत्** = झगड़ा करा दिया, **परामृष्ट** = दबाया हुआ, **अभियोक्तुम्** = आक्रमण करने के लिए, **बलसमुत्थानम्** = सेना का एकत्रित करना, **अभ्यर्णे** = पास में, **नर्मदारोधसि** = नर्मदा नदी के किनारे, **समसंगत** = मिलकर एक हो गये, **अभ्यर्णे** = पास में, **क्ष्मातल** = पृथ्वी तल, **भुक्तवान्** = सम्भोग किया, **मधुमत्ताम्** = शराब पीने के कारण नशे में मस्त।

हिन्दी-अनुवाद—तदनन्तर वसन्तभानु ने भानुवर्मा नामक भीलों के अधिपति को उभारकर अनन्तवर्मा से लड़ा दिया। भानुवर्मा द्वारा अपने राष्ट्र का कुछ भाग दबोच लिए जाने पर अनन्तवर्मा उस पर आक्रमण करने के लिए एकत्रित करने लगा। अश्मकाधिपति वसन्तभानु सभी जागीरदारों (सामन्तों) से पहले ही आकर उस (अनन्तवर्मा) का प्रीति पात्र (मित्र) बन गया। अन्य सामन्तगण भी उसकी सहायता के लिए आ गये। उन लोगों ने पास में आकर नर्मदा नदी के किनारे अपनी छावनियाँ (पड़ाव) डाल दीं। उस अवसर पर महासामन्तकुन्तलदेशाधिपति अवन्तिदेव की अपनी नर्तकी (वेश्या) को, जिसे पृथ्वी तल की उर्वशी कहा जाता था तथा जिसके नृत्य कौशल की प्रशंसा चन्द्रपालित द्वारा अनेक बार की जा चुकी थी, बुलवाकर अनन्तवर्मा ने (उसका) नृत्य देखा। अत्यन्त आसक्त होकर (अनन्तवर्मा ने) उस शराब के नशे में मस्त वेश्या के साथ सम्भोग भी किया।

संस्कृत-व्याख्या—**अथ** = तदनन्तरम्, **वसन्तभानुः** = अश्मकेन्द्रः, **भानुवर्माणम्** = भानुवर्मा नामधेयं, **वानवास्यम्** = वनवास्याः अधिपतिः वानवास्यः तम्, वानवास्यम् = भीलानाम् अधिपतिम्, **प्रोत्साह्य** = प्रोत्साहितं कृत्वा, **अनन्तवर्मणा** = अनन्तवर्मणा सार्द्धम्, **व्यग्राहयत्** = विग्रहं कारितवान्, **तत्परामृष्टेति** = तेन वानवास्येन परामृष्टो गृहीतो, **राष्ट्रस्य** = स्थराज्यस्य, पर्यन्तः प्रान्तभागो यस्य सः अनन्तवर्मा, **तम्** = अश्मकेन्द्रम्, **अभियोक्तुम्** = आक्रमणं कर्तुम्, **बलसमुत्थोनम्** = सैन्यैकत्रीकरणम्, **अकरोत्** = कृतवान्, **सर्वसामन्तेभ्यः** = सर्वसामन्तैः सार्द्धम्, **अश्मकेन्द्रः** = वसन्तभानुः, **प्राक्** = पूर्वम्, **उपेत्य** = समीपं गत्वा, **अस्य** = अनन्तवर्मणः, **प्रियतरोऽभूत्** = अभीष्टतटरो संजातः, **अपरेऽपि** = अन्येऽपि सामन्ताः, **समसंगत** = मिलिता अभवन्, **अभ्यर्णे** = समीपे, गत्वा, **नर्मदारोधसि** = नर्मदातटे, **न्यविशन्** = सेनानिवेशमकुर्वम्, **तस्मिंश्चावसरे** = तस्मिन् समये, **महासामन्तस्य कुन्तलपतेः** = कुन्तलाधीश्वरस्य, अवन्तिदेवस्य, **आत्मनाटकीयाम्** = निजां नर्तकीम्, **क्ष्मातलोर्वशीं** = पृथ्वीतले उर्वशी यथा सुन्दरी आसीत्, सा नृत्यं कुर्वन्ती आसीत्। सा अतिप्रशस्तनृत्यकौशलाम् आसीत्। अनन्तवर्मा तस्याः नृत्यम् **अद्राक्षीत्** = दर्शने संलग्नः आसीत्, चन्द्रपालितादयः अपि तत्समीपे समुपविष्टाः आसन्, **अतिरक्तः** = तस्याः स्वरूपसौन्दर्येण अतिशयितम् आसक्तः भूत्वा, **मधुमत्ताम्** = मद्यपानप्रमत्ताम्, इमाम्, **भुक्तवान्** = विषयभोगं कृतवान्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**वानवास्यम्**—वनवास्याः अधिपतिः वानवास्यः तम् वानवास्यम्। **व्यग्राहयत्**—वि+ग्रह्+णिच् अनद्यतनभूत प्रथमपुरुष एकवचन। **अभियोक्तुम्**—अभि+युज्+तुमुन्। **बलसमुत्थानम्**—बलस्य समुत्थानम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **उपेत्य**—उप+आ+इण्+ल्यप्। **नर्मदारोधसि**—नर्मदायाः रोधः इति नर्मदारोधः तस्मिन् नर्मदारोधसि (षष्ठी तत्पुरुष)। **क्ष्मातलोर्वशीम्**—क्ष्मायाः तलम् इति क्ष्मातलम् (षष्ठी तत्पुरुष) क्ष्मातले उर्वशी इति क्ष्मातलोर्वशी ताम् (सप्तमी तत्पुरुष)। **भुक्तवान्**—भुज्+क्तवतु।

***(26)** अश्मकेन्द्रस्तु कुन्तलपतिमेकान्ते समभ्यधात— "प्रमत्त एष राजा कलत्राणि नः परामृशति। कियत्यवज्ञा सोढवा सोढव्या। मम शतमस्ति हस्तिनाम्, पञ्चशतानि च ते।*

तदावां संभूय मुरलेशं वीरसेनमृचीकेशमेकवीरं कोङ्कणपतिं कुमारगुप्तं नासिक्यनाथं च नागपालमुपजपावः। ते चावश्यमस्याविनयमसहमाना अस्मन्मतेनैवोपावर्त्तेरन्। अयं च वानवास्यः प्रियं मे मित्रम्। अमुनैन दुर्विनीतमग्रतो व्यतिषक्तं पृष्ठतः प्राहरेम। कोशवाहनं च विभज्य गृह्णीमः'' इति हृष्टेन चामुनाभ्युपेते विंशतिं वरांशुकानाम् पञ्चविंशति काञ्चनकुङ्कुमकम्बलानां प्राभृतीकृत्याप्तमुखेन तैः सामन्तैः संमन्त्र्य तानपि स्वमतावस्थापयत्। उत्तरेद्युस्तेषां सामन्तानां वानवास्यास्य च अनन्तवर्मा नयद्वषादामिषत्वमगमत्। वसन्तभानुश्च तत्कोशवाहनमवशीर्णमात्माधष्ठितमेव कृत्वा ''यथान्यासं यथाबलं च विभज्य गृह्णीत। युष्मदनुज्ञया येन केनचिदशेनाहं तुष्यामि'' इति शाठ्यात्सर्वानुवर्त्ती तेनैवामिषेण निमितीकृतेनोत्पादितकलहः सर्वसामन्तानध्वंसयत्। तदीयं च सर्वस्वं स्वयमेवाग्रसत्। वानवास्यं केनचिदशेनानुगृह्य प्रत्यावृत्य सर्वमनन्तवर्मराज्यमात्मसादकरोत्।

कठिन-शब्दार्थ—समभ्यधात = कहा, **कलत्राणि** = स्त्रियों को, **परामृशति** = स्पर्श करता है, निरादर करता है, **अवज्ञा** = अपमान, **उपजपावः** = भेद डाल कर अपनी ओर मिला लें, **उपावर्तेरम्** = कार्य करेंगे, **अग्रतः** = आगे से, **कोशवाहनम्** = खजाना तथा सेना, **अंशुक** = वस्त्र, **प्राभृत** = भेंट, **आप्तमुखेन** = विश्वासपात्र व्यक्ति के द्वारा, **आमिषत्वम्** = शिकार की दशा को, **आत्माधिष्ठितम्** = अपने हाथों में स्थित, **सर्वानुवर्ती** = सबके मन के अनुसार काम करने वाला व्यक्ति, **अभिषेण** = बहाने से, **उत्पादितकलहः** = झगड़ा उत्पन्न करवा कर, **व्यध्वंसयत्** = ध्वंस करवा दिया, **अग्रसत्** = जबरन् अधिकार कर लिया, **अनुगृह्य** = अनुगृहीत करके, **प्रत्यावृत्य** = लौट कर, **आत्मसात्** = अपने अधिकार में।

हिन्दी-अनुवाद—अश्मक देश के अधिपति वसन्तभानु ने कुन्तल देश के राजा अवन्तिदेव से एकान्त में कहा—''उन्मत्त यह राजा (अनन्तवर्मा) हम लोगों की स्त्रियों का अनादर किया करता है अथवा बलात्कार किया करता है। कितना अपमान सहा जाये (अन्ततोगत्वा हम लोग ऐसे अपमानों को कब तक सहन करते रहें)। मेरे समीप एक सौ हाथी तथा आपके समीप पाँच सौ, अतः हम लोग मिलकर मुरलदेश के राजा वीरसेन को, ऋचीक देश के राजा एकवीर को, कोङ्कण देश के राजा कुमारगुप्त को तथा सासक्य के स्वामी नागपाल को (इस अनन्तवर्मा की ओर से फोड़कर) अपनी ओर मिला लें। इसके अविनय (विनयविहीन व्यवहार) युक्त व्यवहार को सहन न करते हुए वे लोग भी हमारी ही सम्मति के अनुसार कार्य करेंगे और यह वनप्रदेश का राजा भानुवर्मा हमारा प्रिय मित्र है ही। इस विनयविहीन (अनन्तवर्मा) के ऊपर उस (भानुवर्मा) के द्वारा सामने से चढ़ाई कराके, पीछे से हम लोग आक्रमण कर दें तथा इसके कोष को और इसकी सेना (परस्पर) को बाँट कर ले लें।'' यह सुनकर उस (कुन्तलपति अवन्तिदेव) के द्वारा प्रसन्नहोकर (वसन्तभानु के प्रस्ताव का) स्वीकार कर लिए जाने पर बीस श्रेष्ठ वस्त्र तथा कुंकुम (केसर) की सुगन्ध से और स्वर्ण की जरी से काम से युक्त पच्चीस दुशालों को विश्वासपात्र व्यक्ति द्वारा भेंट के रूप में भेजकर उन (अनन्तवर्मा के पक्ष के) सामन्तों से मन्त्रणा करके उनको भी अपने मत में कर लिया। दूसरे दन (अनन्तवर्मा की) राजनीति से द्वेष रखने के कारण अनन्तवर्मा उन

सामन्तों (मुरलेश, ऋचीकेश, कोङ्कणपति तथा सासिक्याधिपति) का तथा वनदेश के स्वामी भानुवार्मा का शिकार बन गया अर्थात् मारा गया। वसन्तीनु ने उसके (अनन्तवर्मा के) तितर-बितर हो गये हुए खजाने तथा सेना को अपने अधीन करके ''अपने अपने परिश्रम तथा अपनी अपनी सेना के अनुसार बाँटकर आप लोग लेते जाइये आप लोगों की आज्ञा से थोड़े-बहुत अंश से मैं भी सन्तुष्ट हो जाऊँगा।'' ऐसा कहकर तथा सबकी सम्मति के अनुसार चलने का बहाना कर, धूर्तता से उसी (विभाजन) के आधार पर (सभी सामन्तों में परस्पर) झगड़ा उत्पन्न कर सभी सामन्तों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और उन सभी के उस (समस्त) धन को स्वयं ही हड़प लिया। वनप्रदेशवासी राजा भानुवर्मा को कुछ अंश (भाग) से सन्तुष्ट कर, (स्वदेश को) लौटकर अनन्तवर्मा के सम्पूर्ण राज्य को अपने अधिकार में कर लिया।

संस्कृत-व्याख्या—अश्मकेन्द्रस्तु = अश्मकेन्द्रः वसन्तभानुः, **कुन्तलपतिम्** = कुन्तलेश्वरम्, **एकान्ते** = रहसि, **समभ्यधात** = अकथयत्, **प्रमत्तः** = उन्मत्तः, **एषः** = अयं, **राजा** = नृपतिः, **नः** = अस्माकम्, **कलत्राणिः** = स्त्रीः, **परामृशति** = धर्षमति, **कियत्यवज्ञा** = कियती अवज्ञा = कियत् अपमानम्, **सोढव्या** = सोढुं योग्यमस्ति, **मम हस्तिनाम्** = गजानाम, **शतम्** = शतसंख्याकमस्ति अर्थात् मम समीपे शतं गजाः वर्तन्ते, **ते** = तव च पञ्चशतानि गजाः सन्ति, **तदावाम्** = तत् आवाम्, **सम्भूय** = मिलित्वा, **मुरलेशम्** = मुरलदेशस्य राजानम् वीरसेनम्, **ऋचीकेशमेकवीरम्** = ऋचीकदेशस्य राजानम् एकवीरम्, **कौंकणपतिम्** = कौंकणाधीशम् कुमारगुप्तं, **नासिक्यानाथम्** = नासिक्यदेशस्य स्वामिनं नागपाल नामानम्, **उपजपावः** = विघटयावः, **ते च** = नृपतयः, अवश्यम्, **अस्य** = अनन्तवर्मणः, **अविनयम्** = धाष्टर्यम्, **असहमानाः** = न सहमानाः, **अस्मन्मतेन एव** = मम मन्त्रणानुसारम्, **उपावर्त्तेरन्** = कार्यं कुर्युः, **अथं च वानवास्यम्** = वनप्रदेशस्य अधिपतिः भानुवर्मा, **मे** = मम, **प्रियम् मित्रम्** = प्रियम् सुहृत् वर्तते, **अमुना** = अनेन, **एवम् दुर्विनीतम्** = इमम् दुर्जनम्, **अग्रतः** = पुरतः, **व्यतिषक्तम्** = आक्रान्तम् प्रतिसद्धं वा, **पृष्ठतः प्राहरेम्** = आक्रमणं प्रहारं वा कुर्मः, **कोशवाहनम्** = धनराशिं सैन्यं च, **विभज्य** = विभागं कृत्वा, **गृह्णीमः** = ग्रहीष्यामः, **इति** = एवम्, **हृष्टेन** = प्रसन्नेन, **चामुना** = चानेन, **कुन्तलपतिना** = अवन्तिदेवेन, **अभ्युपेते** = स्वीकृते, **विंशतिम् वरांशुकानाम्** = विंशतिं सुन्दराणामुत्तमोत्तमवस्त्राणाम्, **पञ्चविंशति काञ्चन-कुंकुमकम्बलानाम्** = काञ्चनमयानि स्वर्णमयानि कुंकुमवर्णानि च कम्बलानि, **प्राभृतीकृत्य** = उपहारत्वेन समर्प्य प्रेष्य, **आप्तमुखेन** = विश्वासपात्रजनेन, तैः सामन्तैः सार्द्धं, **संमन्त्र्य** = मन्त्रणां कृत्वा, **तानपि** = मुरलेशम्, ऋचीकेशम्, कौंकणपतिम्, नासिक्यनाथमपि, **स्वमतावस्थापयत्** = स्वविचारमग्राहयत्, **उत्तरेद्यु** = अपरस्मिन् दिने तेषाम् सामन्तानाम्, **वानवास्यास्य च** = वानवाधिपतेश्च अनन्तवर्मा, **नयद्वेषात्** = राजनीतेः नैमुख्यात्, **आभिषत्वम्** = लब्धत्वम्, **अगमत्** = प्राप्तवान्, वसन्तभानुश्च, **तत्कोशवाहनम्** = अनन्तवर्मणः धनराशिर्गजाश्वादिकं सैन्यं च, **अवशीर्णम्** = विध्वस्तम्, छिन्नभिन्नम्, **आत्माधिष्ठितम्** = स्वाधिकृतम् कृत्वा, **यथाप्रयासम्** =

यावच्छक्यम् यथाशक्ति, **यथाबलम्** = सैन्यानुसारम्, **च विभज्य** = विभाजनं कृत्वा, **गृह्णीत** = ग्रहणं कुरु, **युष्मदनुज्ञया: भवतामनुमत्या येन केनचित् अंशेन** = स्वल्पेनापि भागेन, **अहं तुष्यामि** = तृप्तो भविष्यामि, **इति** = एवम्, **शाठ्यात्** = धूर्ततापूर्वकम्, **सर्वानुवर्ती** = सर्वान् अनुवर्तते इति सर्वानुवर्ती, **तेन एव आमिषेण** = तेनेव प्रलोभनेन, **निमित्तीकृते** = न निमित्तम् इति अनिमित्तम् अनिमित्तम् निमित्तं कृत्वा इति नमित्तीकृत्य, **उत्पादितकलहः** = विग्रहं कारयित्वा, **सर्वसामन्तान्** = अखिलसामन्तान्, **व्यध्वंसयत्** = व्यनाशयत्, **तदीयं च** = तेषां सामन्तानाम् च, **सर्वस्वम्** = सकलं धनम् स्वयमेव, **अग्रसत्** = बलात् अगृह्णात्, **वानवास्यं** = वनाधीशम्, **केनचित् अंशेन अनुगृह्य** = अतिस्वल्पम् अंशं तस्यै दत्त्वा, **प्रत्यावृत्य** = स्वदेशं प्रति निवृत्य, **सर्वम्** = अखिलम् अनन्तवर्मराज्यम्, **आत्मसात् अकरोत्** = स्वहस्तगतम् अकरोत्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—कोङ्कणपतिम्—कोङ्कणानां पति इति कोङ्कणपतिः तम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **कोशवाहनम्**—कोशश्च वाहनं च (द्वन्द्व) इत तयोः समाहारः कोशवाहनम्। **काञ्चनकुङ्कुमकम्बलानाम्**—काञ्चमयानि कुंकुमवर्णानि च कम्बलानि इति काञ्चनकुङ्कुमकम्बलानि तेषाम् (कर्मधारय)। **प्राभृतीकृत्य**—न प्राभृतम्, अप्राभृतं-अप्राभृतं प्राभृतं कृत्वा इति प्राभृतीकृत्य। **आप्तमुखेन**—आप्तस्य मुखम् इति आप्तमुखम् तेन (षष्ठी तत्पुरुष)। **नयद्वेषात्**—नयस्य द्वेषः इति नयद्वेषः तस्मात् (षष्ठी तत्पुरुष)। **आत्माधिष्ठितम्**—आत्मना अधिष्ठितम् (तृतीया तत्पुरुष) इति। **यथाप्रयास**—प्रयासमनतिक्रम्य इति यथाप्रयासम् (अव्ययवीभाव समास)। **यथाबलम्**—बलमनतिक्रम्य यथाबलम् (अव्ययीभाव)। **सर्वानुवर्त्ती**—सर्वान् अनुवर्तते इति सर्वानुवर्त्ती। **उत्पायितकलहः**—उत्पादितः कलहः येन सः (बहुव्रीहि)। **सर्वस्वम्**—सर्वं च तत् स्वं इति (कर्मधारय)। **प्रत्यावृत्य**—प्रत+आ+वृत्+ल्यप्। **निमित्तीकृत्य**—निमित्त+च्वि+कृ+ल्यप्। **उत्पादित**—उत्+पद्+णच्+क्त। **व्यध्वंसयत्**—वि+ध्वंस्+णिच्+लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप। **तदीयम्**—तत्+छ (ईय)।

(27) अस्मिंश्चान्तरे मन्त्रिवृद्धो वसुरक्षितः कैश्चिन्मौलैः सम्भूय बालमेनं भास्करवर्माणम् अस्यैव ज्यायसीं भागिनीं त्रयोदशवर्षां मञ्जुवादिनीम् अनयोश्च मातरं महादेवीं वसुन्धरामादायापसर्पन्नपदोऽस्या भावितया दाहज्वरेण देहमजहात। अस्माद्-शैमित्रैस्तु नीत्वा माहिष्मतीं भर्तृद्वैमातुराय भ्रात्रे मित्रवर्मणे सापत्या देवी दर्शिताभूत्। तां चार्यामनार्योऽसावन्यथाऽभ्यमन्यत। निर्भर्त्सितसश्च तया 'सुतमियमखण्डचारित्रा राज्यार्हं चिकीर्षति' इति नैर्घृण्यात्तमेनं बालमजिघांसीत्। इदं तु ज्ञात्वा देव्याहमाज्ञप्तः "तात! नालीजङ्घ, जीवतानेनार्भकेण यत्र क्वचिदवधाय जीवेः। जीवेयं चेदहमप्येनमनुसरिष्यामि। ज्ञापय मां क्षेमप्रवृत्तः स्ववार्तामिति"। अहं तु संकुले राजकुले कथंचिदेनं निर्गमय्य विन्ध्याटवीं व्यगाहिषि। पादचारिणं चैनमाश्वासयितुं घोषे क्वचिदहानि कानिचद्विश्रमय्य, तत्रापि राजपुरुषसंपातभीतो दूराध्वमपासरम्। तत्रास्य दारुणपिपासापीडितस्य वारि दातुकामः कूपेऽस्मिन्नपभ्रश्य पतितस्त्वयैवमनुगृहीतः। त्वमेवास्यातः शरणमेधि विशरणस्य राजसूनीरित्यञ्जलिबबध्नात्।

कठिन-शब्दार्थ—**अस्मिंश्चान्तरे** = इसी बीच, **मौलैः** = मूल से आये हुए अर्थात् अनन्तवर्मा की पूर्व पीढ़ियों के समय से चले आते हुए (मन्त्रियों से), **सम्भूय** = मिलकर, **अपसर्पन्** = भागता हुआ, **भावितया** = अवश्यम्भावी होने के कारण, **अजहात्** = छोड़ दिया, **द्वैमातुराय भ्रात्रे** = सौतेले भाई के साथ, **सापत्या** = सन्तान सहित, **अमन्यत** = माना, समझा, **निर्भर्त्सितः** = फटकारा गया हुआ, **राज्यार्हम्** = राज्य के योग्य, **नैर्घृण्यात्** = निर्दयता से, **अजिघांसीत्** = मार डालने की इच्छा की, **आज्ञप्तः** = आदेश दिया गया, **संकुले** = व्याप्त, **विश्रमय्य** = विश्राम कराके, **दूराध्वम्** = दूर मार्ग, **अपासरम्** = भाग गया, **पिपासापीडितस्य** = प्यास से व्याकुल, **दातुकामः** = देने की इच्छा, **अपभ्रश्य** = भ्रष्ट होकर, **निशरणस्य** = शरणविहीन की, **अञ्जलिमबध्नात्** = हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

हिन्दी-अनुवाद—इस बीच मन्त्रियों में श्रेष्ठ (वृद्ध) वसुरक्षित ने (अनन्तवर्मा के) बाप-दादों के समय से चले आते हुए कुछ मन्त्रियों से मिलकर, इस भास्करवर्मा नामक बच्चे को त्रयोदश वर्षीया इसकी बहिन को तथा इन दोनों की माँ बड़ी रानी वसुन्धरा को लेकर भागते-भागते, इस विपत्ति की होनहार के कारण, दाह ज्वर से पीड़ित होकर शरीर त्याग कर दिया। हमारे मित्रों के द्वारा महिष्मति नाम की नगरी में पहुँचायी हुई रानी अपने पति के सौतेले बन्धु मित्रवर्मा के हाथों में सन्तानसहित सौंप दी गयी, किन्तु उस दुष्ट ने इस आर्या (श्रेष्ठ रानी) को दूसरी ही भाँति माना (अर्थात् भ्रष्टाचारिणी समझा)। पुनः वह उस शुद्ध आचरण वाली रानी द्वारा फटकारा जाने पर ''अपने पुत्र को राज्य के योग्य बनाने की इच्छा रखती है'' यह सोचकर निर्दयता से इस बालक को मार देने का विचार करने लगा। यह ज्ञात होने पर देवी ने मुझे आज्ञा दी कि ''हे तात नालीजङ्घ! इस जीवित बच्चे के साथ तुम कहीं अन्यत्र रहकर जीवन धारण करो। यदि मैं जीवित अवस्था में रही तो मैं भी इसका अनुसरण करूँगी (अर्थात् मिलूँगी)। (इस बालक के) कल्याण में संलग्न तुम (समय-समय पर) अपना समाचार मुझे देते रहना।''

उस भीड़-भीड़ से व्याप्त राजकुल से इस बालक को किसी भाँति निकाल कर मैं विन्ध्याचल के सघन वन में आकर प्रविष्ट हो गया (छुप गया)। पैदल चलने के कारण थके हुए इस बालक को आश्वस्त करने के लिए किन्हीं अहीरों की बस्ती में कुछ दिन विश्राम कर, वहाँ पर भी राजा (मित्रवर्मा) के पुरुषों (अधिकारियों) के आने के भय से डरकर मैं अधिक दूर निकल गया (चला गया)। बड़ी तेजी से लगी हुई प्यास से पीड़ित इस बालक को जल देने का इच्छुक मैं फिसलकर इस कुएँ में गिर पड़ा और अब तुम्हारे द्वारा इस भाँति अनुगृहीत हुआ हूँ (अर्थात् बड़ी दया करके आपने हमें इस कुए से बाहर निकाल लिया) ''अतः शरणविहीन राजपुत्र के तुम्हीं शरण हो'' ऐसा कहकर उसने अञ्जलि बाँध ली (अर्थात् हाथ जोड़कर उसे प्रणाम किया)।

संस्कृत-व्याख्या—**अस्मिंश्चावसरे** = एतस्मिन् अवसरे, **मन्त्रिवृद्धो** = **अमात्यवृद्धो**, **वसुरक्षितः**, **कैश्चिन्मौलैः** = कैश्चित् मौलेः मूलात् आगताः मौलाः तै मौलैः अनन्तवर्मणः पितापितामहात् आगतैः मन्त्रिभिः सार्द्धं, **सम्भूय** = मिलित्वा, **बालम्** =

बालकम् एनम्, भास्करवर्माणम्, अस्यैव, **ज्यायसीम् भगिनीम्** = ज्येष्ठां स्वसारम्, **त्रयोदशवर्षाम्** = त्रयोदशवर्षदेशीयाम् मञ्जुवादिनीम्, **अनयोश्च** = अनयोः भ्रातृभगिनयोः, **मातरम्** = जननीम् महादेवीं वसुन्धराम्, **आदाय** = गृहीत्वा, **अपसर्पन्** = पलायमानः, **आपदः अस्याः भावितया** = अस्याः विपत्तेः अवश्यंभवितया, **दाहज्वरेण** = अत्यन्तभयंकरज्वरेण, **देहम्** = शरीरम्, **अजहात्** = अत्यजत्, **अस्मादृशैः** = अस्मात् सदृशैः, **मित्रैः** = सुहृद्वरैः तु, **नीत्वा** = गमयित्वा, **माहिष्मतीं** = एतन्नामधेयां नगरीम्, **भर्तृद्वैमातुराय भ्रात्रे** = पत्युः वैमात्रे भ्रात्रे, मित्रवर्मणे, **सापत्या** = अपत्यसहिता, देवी, **दर्शिताभूत्** = समर्पिता (परन्तु), **तां चार्याम्** = सुचरित्राम्, **अनार्यः असौ** = दुष्टासौ मित्रवर्मा, **अन्यथा अमन्यत** = दुश्चरित्राममन्यत, **तया** = सुचरित्रया, **निर्भर्त्सितः** = भयं प्रदर्श्य कथितः इयम्, **अखण्डचारित्रा** = अभ्रष्टाचरणा, सदाचारिणी, **सुतम्** = स्वपुत्रम्, **राज्यार्हम्** = राज्ययोग्यम्, **चिकीर्षति** = कर्तुमिच्छति, **इति** = अस्मात् कारणात्, **नैघृण्यात्** = निर्दयत्वात्, **एनं बालम्** = एनं बालकम्, **अजिघांसीत्** = हन्तुमैच्छत्, **इदं तु ज्ञात्वा** = विज्ञाय, **अहं** = सः अचितिवृत्तस्य वक्ता वृद्धो नालीजङ्घनामा, **देव्या** = महिष्या, **आज्ञप्तः** = आदिष्टः, **तात** = हे तात!, नालीजङ्घ!, **जीवता अनेन अर्भकेण सह** = अनेन बालकेन सार्द्धम्, **यत्र क्वचित्** = यत्र कुत्रचित्, **अवधाय** = आत्मानं, स्थापयित्वा **जीव** = जीवितं भव, **जीवेयम् चेत्** = यदि अहं (महिषी) जीवेयम् (तदा), **एनम्** = बालकम्, **अनुसरिष्यामि** = अस्य बालकस्य अनुसरणं करिष्यामि, **स्ववार्ताम्** = स्वसमाचाराणाम्, **क्षेमप्रवृत्तः** = क्षेमे प्रवृत्तः संलग्नः सन्, **मां** = महिषीम्, **ज्ञापय** = मम समीपे समाचारं प्रेषय, **अहं तु संकुले** = ननाकीर्णे, **राजकुले** = राजगृहे, **कथंचित्** = महता कष्टेन, **एनं** = बालकम्, **निर्गमय्य** = वटिः प्रापय्य, **विन्ध्याटवीं व्यागाहिषी** = विन्ध्याटवीं प्राविशम्, **पादचारिणम्** = पदयात्रिणम्, **च एनम्** = बालकम्, **आश्वासयितुम्** = सान्त्वयितुम्, **क्वचित् घोषे** = कस्यामपि आभीराणां वसतौ, **कानिचित् अहानि** = केतिपयानि दिनानि, **विश्रमय्य** = विश्रामं कारयित्वा, **तत्रापि** = तत्र वसतौ अपि, **राजपुरुषसम्पातभीतः** = नृपकर्मचारिणाम् आगमनस्य शङ्कया व्याकुलचिन्तः, **दूराध्वम्** = दूरमार्गम्, **अपासरम्** = पलायम्बभूव, **तत्र** = तस्मिन् स्थाने, **अस्य** = बालकस्य, **दारुणपिपासापीडितस्य** = अत्यन्तमसह्यया तृषा व्याकुलस्य, **वारि** = जलं, **दातुकामः** = प्रदातुं इच्छोऽहम् अस्मिन् कूपे, **अपभ्रश्य** = स्खलित्वा, पतितः, **त्वया** = भवता, **एवम्** = अनेन प्रकारेण, **अनुगृहीतः** = अनुगृहं कृतः, **त्वम्** = भवान् एव, **विशरणस्य** = शरणरहितस्य, **राजसूनोः** = राजपुत्रस्य, राजकुमारस्य, **शरणमेधि** = शरणदाताऽसि, **इति** = एवमुक्त्वा, **अञ्जलिम् अबध्नात्** = करबद्धभूत्वा अतिष्ठत्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—मौलैः—मूलात् आगताः मौला तैः। **दाहज्वरेण**—दाहयुक्तः ज्वरः इति दाहज्वरः तेन दाहज्वरेण (कर्मधारय)। **अस्मादृशैर्मित्रैः**—अस्माक मित्राणि इति अस्मन्मित्राणि तैः (षष्ठी तत्पुरुष)। **द्वैमातुराय**—द्वयोः मात्रोः अपत्यं पुमान् द्वैमातुर तस्मै। **सापत्य**—विद्यमानं अपत्यं यस्याः सा (बहुव्रीहि)। **अखण्डचरित्रा**—न विद्यते खण्डं यस्य तत् अखण्डम् (बहुव्रीहि)। अखण्डं चरित्र यस्या सा (बहुव्रीहि)।

राज्यार्हम्—राजस्य अर्ह: इति राज्यार्ह:, तम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **नैर्घृण्यात्**—निर्गता घृणा यस्मात् स: निघृण: (बहुव्रीहि) तस्य भाव: नैर्घृण्यम्, तस्मात्। **स्ववार्ताम्**—स्वस्य वार्ता, स्ववार्ता ताम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **राजपुरुषसम्पातभीत:**—राज्ञ: पुरुष: राजपुरुष: (षष्ठी तत्पुरुष)। तेषां सम्पात: इतिराजपुरुषसम्पात: (षष्ठी तत्पुरुष) तेन भीत: (तृतीया तत्पुरुष)। **दूराध्वम्**—दूरश्चासौ अध्वा च इति दूराध्व: तम्। **दारुणपिपासापीडितस्य**—दारुणा चासो पिपासा, दारुणपिपासा (कर्मधारय) तया पीडित: इति दारुणपिपासापीडित: तस्य: (तृतीया तत्पुरुष)। **दातुकाम:**—दातुं काम: यस्य स: (बहुव्रीहि)। **विशरणस्य**—विगतं शरणं यस्य स: विशरण: तस्य (बहुव्रीहि)। **राजसूनो:**—राज्ञ: सूनु: इति राजसूनु: तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)। **आज्ञप्त:**—आ+ज्ञा+णिच्+क्त। **अवधाय**—अव+धा+ल्यप्। **निर्भर्त्सित:**—निर्+भर्त्स्+क्त। **द्वैमातुर:**—द्वैमात्+अण्। **निर्गमय्य**—निर्+गम्+णिच्+ल्यप्। **आश्वासयितुम्**—आ+श्वस्+णिच्+तुमुन्। **विश्रमय्य**—वि+श्रम्+णिच्+ल्यप्। **सम्पात्**—सम्+पत्+घञ्। **अनुगृहीत:**—अनु+ग्रह्+क्त।

(28) 'किमीया जात्यास्य माता' इत्यानुयुक्ते मयाऽमुनोक्तम्– 'पाटलिपुत्रस्य वणिजो वैश्रवणस्य दुहितरि सागरदत्तायां कौसलेन्द्रात्कुसुमधन्वनोऽस्य माता जाता' इति। 'यद्येवमेतन्मातुमत्पितुश्चैको मातामह:' इति सस्नेहं तमहं सस्वजे। वृद्धेनोक्तम्– 'सिन्धुदत्तपुत्राणां कतमस्ते पिता?' इति। 'सुश्रुत:' इत्युक्ते सोऽत्यहृष्यत्। अहं तु तं नयावलिप्तमश्मकेन्द्रं नयेनैवोन्मूल्य बालमेनं पित्र्ये पदे प्रतिष्ठापयेयम् इति प्रतिज्ञाय कथमस्यैनां क्षुधं क्षपयेयम्, इत्यचिन्तयम्। तावदापतितौ च कस्यापि व्याधस्य त्रीनिषूनतीत्य द्वौ मृगौ स च व्याध:। तस्य हस्तादवशिष्टमिषुद्वयं कोदण्डं चाक्षिप्यावधिषम्। एकश्च सपत्राकृतोऽन्यश्च निष्पत्राकृतोऽपतत्। तं चैकं मृगं दत्वा मृगयवे, अन्यस्यापलोमत्वच: क्लोमापोह्य, निष्कुलाकृतय विकृत्योर्वङ्घ्रिग्रीवादीनी, शूलाकृत्य दावाङ्गारेषु, तप्तेनामिषेण तयोरात्मनश्चक्षुधमतार्षम्। एतस्मिन् कर्मणि मत्सौष्ठवेनातिहृष्टं किरातमस्मि पृष्टवान्– 'अपि जनासि माहिष्मतिवृत्तान्तमिति'। असावाचष्ट–'तत्र व्याघ्रत्वचो दृतीश्च विक्रीयाद्यैवागत:, किं न जानामि। प्रचण्डवर्मा नाम चण्डवर्मानुजो मित्रवर्मदुहितरं मञ्जुवादिनीं विलिप्सुरभ्येतीति तेतोत्सवोत्तरा पुरी' इति।

कठिन-शब्दार्थ—**किमीया** = किसकी, **अनुयुक्ते** = पूछे जाने पर, **सस्वजे** = आलिंगन किया, **नयावलिप्तम्** = राजनीति के कारण अभिमान युक्त, **उन्मूल्य** = नष्ट करके, **प्रतिष्ठापयेयम्** = आरूढ़ करा दूँ, **आपतितौ** = आ गये, **अतीत्य** = अतिक्रमण कर, **क्षुधम्** = भूख को, **क्षपयेयम्** = दूर करें, **कोदण्डम्** = धनुष, **आक्षिप्य** = बलपूर्वक लेकर, **अवधिषम्** = मार डाला, **मृगमये** = बहेलिये के लिए, **अपलोमत्वच:** = जिसके रोयें (बाल) और चर्म शरीर से पृथक् कर लिए गये हों, **क्लोम** = फेफड़ा, **निष्कुलाकृत्य** = शरीर के अंगों को (बाहर) निकालकर, **दावाङ्गारेषु** = वन की अग्नि के अंगारों में, **तप्तेन** = भूने हुए, **मत्सौष्टवेन** = मेरी चतुरता से, **आचष्ट** = कहा, **दृती:** = चमड़े से निर्मित मराकौ को, **विक्रीय** = बेचकर, **लिप्सु**: = प्राप्त करने का इच्छुक, **अभ्येति** = आ रहा है।

हिन्दी-अनुवाद—मुझ (विश्रुत) द्वारा यह पूछने पर कि 'इसकी माता किस जाति की है' उसके द्वारा उत्तर दिया गया 'पटना (पाटलिपुत्र) के बनिये वंश्रवण की पुत्री सागरदत्ता के साथ कौशल देश के स्वामी (राजा) कुसुमधन्वा के संसर्ग से इसकी माता उत्पन्न हुई थी।' यदि ऐसा है तब तो इसकी माता और हमारे पिता दोनों के नाना एक ही हैं ऐसा कह कर मैंने उस बालक को बड़े प्रेम से आलिङ्गन किया। वृद्ध ने कहा—'सिन्धुदत्त के पुत्रों में से कौन व्यक्ति तुम्हारे पिता थे?' 'सुश्रुत' के ऐसा कहे जाने पर वह अति प्रसन्न हुआ। राजनीति के मद में चूर अश्मकाधिपति वसन्तभानु को राजनीति द्वारा ही नष्ट कर इस बालक को (इसके) पिता के पद (सिंहासन) पर स्थापित कर दूँगा, ऐसी प्रतिज्ञा कर 'इसकी भूख को किस भाँति दूर करूँ?' यही सोचने लगा। तब तक किसी बहेलिये के तीन बाणों का अतिक्रमण कर (से बचकर) दो हिरण तथा वह बहेलिया आ गया। अवशिष्ट दोनों बाणों को तथा धनुष को उसके हाथ से छीनकर (मैंने दोनों हरिणों को) मार डाला। एक हिरण इस प्रकार (बाण द्वारा) बींधा गया कि बाण की पूँछ उसके शरीर के बाहर दिखलायी देती रही, दूसरा इस भाँति बींधा गया कि बाण की पूँछ (पिछला भाग) उसके शरीर में पूर्ण प्रविष्ट हो गयी इस भाँति (वे जमीन पर) गिर पड़े। उनमें से एक हिरण बहेलिये को देकर, दूसरे (मृग) की खाल तथा रोओं (बाल आदि) को निकालकर तथा उसके फेफड़े अथवा अंतड़ियों को निकालकर अन्दर के सम्पूर्ण शरीरावयवों को (भी) निकालकर, जंघा, पैर और गदरन को काटकर लोहे की छड़ पर रखकर, वन की आग के अंगारों पर भूने गये मांस से उन दोनों की (उस वृद्ध तथा बालक की) तथा अपनी भूख को निवृत्त किया। इस कार्य में मेरी दक्षता (चतुरता) से अत्यन्त हर्षित हुए किरात (बहेलिया) से मैंने पूछा, "क्या महिष्मति का कुछ समाचार जानते हो?" उसने कहा "वहीं पर व्याघ्र के चर्म तथा मशकों (चमड़े की पटारियों अथवा झोलों) को बेचकर आज ही आया हूँ, (अत:) मैं क्या नहीं जानता?" चण्डवर्मा का छोटा भाई प्रचण्डवर्मा मित्रवर्मा की कन्या मञ्जुवादिनी को प्राप्त करने की (लेने की) इस इच्छा से आ रहा है, इसलिए नगरी उत्सव से युक्त है (अर्थात् उस नगरी में आज बड़ा भारी उत्सव मनाया जा रहा है)।

संस्कृत-व्याख्या—**अस्य माता** = जननी, **किमीया जात्या** = कस्येयमिति किमीया कस्या जातेरुत्पन्नेत्यर्थ:, **अनुपयुक्ते** = पृष्टे, **मया** = विश्रुतेन, **अमुनोक्तम्** = अनेन, नालीजङ्घेन निगदितम्, **पाटलिपुत्रस्य वणिजो** = वेश्य वैश्रवणस्य, **दुहितरि** = पुत्र्यां सागरदत्तायाम् कौसलेन्द्रात् कुसुमधन्वन: नाम्न: नृपात् अस्य माता जननी, **जाता** = उत्पन्ना, **यदि एवम्** = इत्थम्, तदा, **तन्मातु:** = अस्य जनन्या:, **मत्पितु:** = मम जनकस्य, च एको मातामह: आसीत्, **इति** = एवं विचार्य, **सस्नेहम्** = स्नेहपूर्वकम्, तमहं तम् बालकम्, अहम्, **सस्वजे** = आलिलिङ्ग, **वृद्धेन** = वृद्धपुरुषेण नालिजङ्घेन, **उक्तम्** = कथितम्, **सिन्धुदत्तपुत्राणाम्** = सिन्धुदत्तस्य बहव: पुत्रास्तेषु तव पिता, **कतम:** = किं नामक इति, 'सुश्रुत:' इति, **उक्ते सति सो** = वृद्ध: नालिजंघ:, **अतिहृष्यत्** = अतिमुदितोऽभवत्, **अहं तु तं नयावलिप्तम्** = राजनीतौ चातुर्यात् अभिमानयुक्तम्, **अश्मक** = अश्मकाधिपति, **नयेन एव** = कूटनीत्या एव, **उन्मूल्य** = विनाश्य, **बालमेनम्**

= एनम् बालकं सुश्रुतम्, **पित्र्ये पदे** = पितुः स्थाने, **प्रतिष्ठापयेयम्** = आरूढं कारयेयम्, **इति** = एवम्, **प्रतिज्ञाय** = प्रतिज्ञां कृत्वा, **कथम्** = केन प्रकारेण, **अस्य एनाम् क्षुधम्** = इमां बुभुक्षाम्, **क्षपयेयम्** = निवारयेयम्, **इति** = एवम्, **अचिन्तयम्** = विचारयामास, **तावत्** = तस्मिन् समये, कस्यापि व्याधस्य, **त्रीन् ईषून् अतीत्य** = त्रयाणां बाणानां प्रहारेभ्यः आत्मानं रक्षित्वा द्वौ मृगौ, **आपतितौ** = आगतौ, स च व्याधोऽपि तत्र आगतवान्, **तस्य** = व्याधस्य, **हस्तात्** = करात्, **अवशिष्टतिषुद्वयम्** = शेष द्वौ बाणौ, **कोदण्डम् च** = धनुश्च, **आक्षिप्य** = बलात् गृहीत्वा, **अवधिषम्** = अहनम्, **एकश्च सपत्राकृतः** = पत्रेण सह विद्धः, **अन्यश्च** = अपरश्च, **निष्पात्राकृतः** = सपुङ्खस्य शरस्य अपरपार्श्वे निर्गमनात् निष्पन्नं करोतीत्यर्थः, **अपतत्** = पतितशान्, **तं चैकं मृगम्** = हरिणम्, **मृगयवे दत्वा** = व्याधाय प्रदाय, **अन्यस्य** = मृगस्य, **अपलोमत्वचः** = लोमानि च त्वक् च इति लोमत्वचौ अपगते लोमत्वचौ यस्य सः अपलोमत्वक् तस्य अपलोमत्वचः, **क्लोम अपपोह्य** = फुप्फुसं मस्तिष्कं वा, **ऊपोह्य** = निस्सार्य, **निष्कुलाकृतय** = अन्तर्स्थितशरीरावयवान् बहिः निस्सार्य, बहिः निस्सार्य, **विकृत्य** = विच्छिद्य उर्वङ्घ्रिग्रीवादीनि, **शूलाकृत्य** = शूलेन माचयित्वा, **दावाङ्गारेषु** = वनाग्निषु, **तप्तेन** = उष्णेन मर्जितेन वा, **अमिषेण** = मांसेन, **तयोः** = बालवृद्धयोः, **आत्मनश्च** = स्वस्य च, **क्षुधम्** = बुभुक्षाम्, **अतार्षम्** = न्ययारयम्, **एतस्मिन् कर्मणि** = अस्मिन् कार्ये, **मत्सौष्ठवेन** = मदीयेन चातुर्येण, **अतिहृष्टम्** = अत्यन्तप्रसन्नम्, **किरातम्** = व्याधम्, **अस्मि पृष्टवान्** = अहम् अपृच्छम्, **अपि** = किं, **माहिष्मती वृत्तान्तम्** = माहिष्मती समाचारम्, **जानासि** = वेत्सि?, इति **असौ** = सः व्याधः, **आचष्ट** = अकथयत्, **तत्र** = तस्मिन् वृत्तान्ते, **व्याघ्रत्वचो** = व्याघ्रचर्माणि, **दृतीश्च** = चर्मपुटकान् च विक्रीय अद्यैव, **आगतः** = आगतोस्मि, किं न जानामि इत्यस्यार्थः। सर्वमेव जानामि इत्याशयः, **प्रचण्डवर्मा नाम चण्डवर्मानुजो** = चण्डवर्मणः लघुभ्राता, **मित्रवर्मदुहितरम्** = मित्रवर्मणः पुत्रीम् मञ्जुवादिनीम्, **विलिप्सुः** = लब्धुमिच्छुः, **अभ्येति** = अभ्यागच्छति, **इति तेन** = तस्मात् कारणात्, **सोत्सवा** = उत्सवसहिता, **पुरी** = नगरी, वर्तते।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**किमीया**—कस्य इयम् इति किमीया। **एतन्मातुः**—एतस्य माता इति एतन्माता तस्याः (षष्ठी तत्पुरुष)। **मत्पितुः**—ममपिता इति मत्पिता (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य। **नयावलिप्तम्**—नयेन अवलिप्तः, नयावलिप्तः तम् (तृतीया तत्पुरुष)। **इषुद्वयम्**—इज्वोः, द्वयम् = इषुद्वयम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अपलोमत्वचः**—अपगते लोमत्वचौ यस्य सः (बहुव्रीहि) अपलोमत्वक् तस्य। **निष्कुलाकृत्य**—निर्गते कुलं यस्मात् यत् निष्कुलम्, निष्कुलं कृत्वा इति निष्कुलाकृत्य। **उर्वङ्घिग्रीवादीनी**—उरु च अङ्घ्रो च ग्रीवा च इति उर्वङ्घ्रिग्रीवा (द्वन्द्व समास) ताः आदयो येषां तानि (बहुव्रीहि)। **महिष्मतीवृत्तान्तः**—माहिष्मत्याः वृत्तान्तः, माहिष्मतीवृत्तान्तः तम्। **मित्रवर्मदुहितम्**—मित्रवर्मणः दुहिता, मित्रवर्मदुहिता, ताम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **लिप्सुः**—लब्धुं इच्छु इति लिप्सुः। **किमीयाः**—किम्+छ (ईय्)+टाप्। **अनुयुक्ते**—अनु+युज्+क्त। **कतमः**—**किम्+उतम** च। **अवलिप्तम्**—अव+लिप्+क्त। **उन्मूल्य**—उत्+मूल्+ल्यप्।

प्रतिष्ठापमेयम्—प्रति+स्था+णिच्। **प्रतिज्ञाय**—प्रति+ज्ञा+ल्यप्। **अवशिष्टम्**—अव+शिष्+क्त। **आक्षिप्य**—आ+क्षिप्+ल्यप्। **सपत्राकृतः**—सपत्र+डाच्+कृ+क्त। **अपोह्य**—अप+वह्+ल्यप्। **निष्कुलाकृत्य**—निष्कुल+डाच्+कृ+ल्यप्। **विकृत्य**—वि+कृत्+ल्यप्। **लिप्सुः**—लभ्+सन्+उ।

(29) अथ कर्णे जीर्णमब्रवम् ''धूर्तो मित्रवर्मा दुहितरि सम्यक् प्रतिपत्त्या मातरं विश्वास्य तन्मुखेन प्रत्याकृष्य बालकं जिघांसति। तत्प्रतिगत्य कुशलमस्य मद्वार्त्तां च देव्यैरहो निवेद्य पुनः कुमारः शार्दूलभक्षित इति प्रकाशमाक्रोशनं कार्यम्। स दुर्मतिरन्तः प्रीतो बहिर्दुःखं दर्शयन्देवीमनुनेष्यति। पुनस्त्वया तन्मुखेन स वाच्यः। यदपेक्षया त्वनमतमत्यक्रमिषं सोऽपि बालः पापेन मे परलोकमगात्। अद्य तु त्वदादेशकारिण्येवाहमिति। स तथोक्तः प्रीतिं प्रतिपद्याभिपत्स्यति। पुनरनेन वत्सनाभनाम्ना महाविषेण संनीय तोयं तत्र मालां मज्जयित्वा तया स वक्षसि मुखे च हन्तव्यः ''स एवायमसिप्रहारः पापीयसस्तव भवतु यद्यस्मि पतिव्रता'' इति पुनरनेनागदेन संगमितेऽम्भसि तां मालां मज्जयित्वा स्वदुहित्रे देया। मृते तु तस्मिंस्तस्यां च निर्विकारायां सत्यां, सतीत्येवैनां प्रकृतयोऽनुवर्तिष्यन्ते। पुनः प्रचण्डवर्मणे संदेश्यम्— 'अनायकमिदं राज्यम्। अनेनैव सह बालिकेयं स्वीकर्त्तव्या' इति। तावदावां कापालिकवेषच्छन्नौ देव्यैव दीयमानभिक्षौ पुरीं बहिरुपश्मशानं वत्स्यावः। पुनरार्यप्रायान्पौरवृद्धानाप्तांश्च मन्त्रिवृद्धानेकान्ते ब्रवीतु देवी–स्वप्नेऽद्य मे देव्या विन्ध्यवासिन्या कृतः प्रसादः। अद्यः चतुर्थेऽहनि प्रचण्डवर्मा मरिष्यति। पञ्चमेऽहनि रेवातटवर्तिनि मुद्भवने परीक्ष्य वैजन्यम्, जनेषु निर्गतेषु कपाटमुद्घाट्य त्वत्सुतेन सह कोऽपि द्विजकुमारो निर्यास्यति। स राज्यमिदमनुपाल्य बालं ते प्रतिष्ठापयिष्यति। स खलु बालो मया व्याघ्रीरूपया तिरस्कृत्य स्थापितः। सा चेयं वत्सा मञ्जुवादिनी तस्य द्विजातिदारकस्य दारत्वेनैव कल्पिता इति। तदेतदतिरहस्यं युष्मास्वेव गुप्तं तिष्ठतु यावदेतदुपपत्स्यते इति।

कठिन-शब्दार्थ—**प्रतिपत्त्या** = व्यवहार के द्वारा, **विश्वास्य** = विश्वास दिला कर, **प्रत्याकृष्य** = वापस बुलवा कर, **जिघांसति** = मार डालना चाहता है, **रहसि** = एकान्त में, **आक्रोशः** = रोना, चिल्लाना, **अन्तः प्रीतः** = अन्दर से हर्षित, **अनुनेष्यति** = सान्त्वना प्रदान करेगा, **त्वदुक्तम्** = तुम्हारी कही हुई बात, **अतिक्रमिषम्** = अतिक्रमण किया, **प्रतिपद्य** = प्राप्त करके, **अभिपत्स्यते** = समीप आयेगा, **संनीय** = मिलाकर, **मज्जयित्वा** = डुबोकर, **वक्षसि** = वक्षःस्थल पर, **पापीयसः** = पापी के, **स्वदुहित्रे** = अपनी पुत्री के लिए, **अगदेन** = दवा से, **सत्याम्** = होने पर, **अनुवर्तिष्यन्ते** = अनुसरण करेंगे, **दीयमानभिक्षौ** = दी जा रही हो भीख जिनको, **आप्तम्** = विश्वसनीय व्यक्तियों की, **प्रसादः** = कृपा, **नियस्थिति** = निकलेगा, **प्रतिष्ठापयिष्यति** = स्थापित करेगा, **दारक** = पुत्र, **उत्पस्यते** = सिद्ध नहीं हो जाती है।

हिन्दी-अनुवाद—इसके पश्चात् उस वृद्ध के कान में (मैंने) कहा—(वह) कपटी मित्रवर्मा कन्या (मञ्जुवादिनी) के प्रति अपने उत्तम व्यवहार द्वारा, माता को विश्वास में लाकर, उसी (माता) के द्वारा इस बच्चे को अपने पास बुलाकर मार डालना चाहता है; अतः तुम लौटकर, एकान्त में रानी से, इस बच्चे का कुशल समाचार तथा मेरी बात को

बतलाकर फिर यह कह कर कि "बच्चा व्याघ्र द्वारा खा लिया गया", रोना चिल्लाना प्रारम्भ कर देना। वह दुर्बुद्धि अन्दर ही अन्दर प्रसन्न होता हुआ महारानी को सान्त्वना प्रदान करेगा। फिर तुम उस देवी द्वारा उस (मित्रवर्मा) से कहलवाना कि जिसकी अपेक्षा से मैंने तुम्हारी कही बात का उल्लंघन किया, वह बच्चा भी मेरे पास से परलोक गया। अब आज से तुम्हारी आज्ञाओं का मैं पालन करूँगी। इस भाँति कहा गया हुआ वह, हर्षित होकर (महारानी की बात) स्वीकार कर लेगा। फिर इस वत्सनाभ नामक महाविष को पानी में घोलकर, उसमें माला को डुबोकर, उस रानी द्वारा वह (मित्रवर्मा) छाती तथा मुख के ऊपर यह कहकर मारा जाना चाहिए कि यदि मैं पतिव्रता हूँ तो यह (माला का प्रहार) तुझ पापी के लिए तलवार का प्रहार हो जावे। फिर इस (अन्य) दवा से मिले हुए पानी में, उस माला को डुबोकर अपनी पुत्री को दे दें। उस (मित्रवर्मा) के मर जाने पर तथा उस लड़की के सकुशल बने रहने पर प्रजाएँ यह जानकर कि यह रानी (वस्तुतः) सती पतिव्रता है, इस रानी का अनुसरण करेगी। फिर प्रचण्डवर्मा के समीप यह सन्देश भेज देना चाहिए (भेज देना) कि राज्य नायक (राजा) से रहित है; (अतः) इस (राज्य) के साथ ही यह कन्या (आप द्वारा) स्वीकार की जानी चाहिए। उस समय तक हम दोनों कापालिक वेश में छिपे हुए, देवी महारानी द्वारा दी गई हुई भीख (भिक्षा) को लेकर, नगर से बाहर, श्मशान के पास निवास करेंगे। तत्पश्चात् सच्चरित्र वृद्ध नागरिकों और विश्वसनीय वृद्ध मन्त्रियों को बुलाकर एकान्त में रानी कहें कि आज स्वप्न में भगवती विन्ध्यवासिनी देवी ने मुझ पर कृपा की है। आज से चौथे दिन प्रचण्डवर्मा मर जायेगा। पाँचवें दिन नर्मदा नदी के तट पर निर्मित मेरा जो मन्दिर है, उसमें जनशून्यता (सुनसानपन) की भलीभाँति परीक्षा कर लोगों के (बाहर) निकल जाने पर, किवाड़ खोलकर तुम्हारे पुत्र के साथ कोई ब्राह्मण कुमार निकलेगा। वह इस राज्य का पालन कर तुम्हारे पुत्र को राज्यसिंहासन पर आरूढ़ कर देगा। व्याघ्री का रूप धारण कर मुझ विन्ध्यवासिनी देवी द्वारा यह बालक छिपाकर रखा गया है और यह लड़की मञ्जुवादिनी उस ब्राह्मण कुमार की पत्नी कल्पित (निश्चित) की गयी है; अतः यह अति रहस्यपूर्ण घटना उस समय तक तुम्हारे तक ही गुप्त रहे कि जिस समय तक यह बात सिद्ध न हो जाये।

संस्कृत-व्याख्या—**अथ** = तत्पश्चात् (वयम्), **जीर्णम्** = वृद्धम्, नालीजङ्घ-मित्यर्थः, **कर्णे** = श्रवणे, **अब्रवम्** = अकथयम्, कथयामास, **धूर्तो** = दुष्टो, मित्रवर्मा, **दुहितरि** = मञ्जुवादिन्याम्, **सम्यक्प्रतिपत्या** = अनुकम्पया प्रवहारेण वा, **मातरं विश्वास्य** = तस्याः जननीं विश्वास्य, **तन्मुखेन** = तस्याः मुखेन, **पृत्याकृष्य** = आनीय, **बालकं जिघांसति** = बालकं हन्तुमिच्छति, **तत्प्रतिगत्य** = तस्मात्, कारणात् प्रतिनिवृत्य, **अस्य कुशलम्** = अस्य बालकस्य सकुशलस्थितिम्, **मद् वार्तां च** = मम समाचारम् च, **देव्यै** = महारानीवसुन्धरायै, **रहसि** = एकान्ते, **निवेद्य** = कथयित्वा, **पुनः** = भूयः, **कुमारः**, **शार्दूलभक्षितः** = शार्दूलेन = व्याघ्रेण, भक्षितः = खादितः, **इति** = एवम्, **प्रकाशम्** = सर्वजनसमक्षम्, **आक्रोशम्** = क्रन्दनम्, कार्यम्, **सः दुर्मतिः** = दुष्टः, **अन्तः**

प्रीतः = अन्तः अन्तःकरणे प्रीतः प्रसन्नः, **बहिर्दुःखम्** = बाह्यतः शोकम्, **दर्शयन्** = व्यक्तं कुर्वन्, **देवीम्** = महाराज्ञीं, **अनुनेष्यति** = सान्त्वयिष्यति।

पुनः त्वया तन्मुखेन, **स वाच्यः** = सः कथनीयः, **यदपेक्षया** = यस्य अपेक्षा इति यदपेक्षा तया यदपेक्षया = येन निमित्तेन, **त्वन्मतम्** = तव सम्मतिम्, **अत्यक्रमिषम्** = उल्लङ्घितवती, **सोऽपि बालः** = बालकः, पापेन, **मे** = मम, **परलोकमगात्** = पञ्चत्वं विलीनः, **अद्य तु** = अधुना तु, **त्वादादेशकारिणी** = तवाज्ञां पालयिष्यामि अहम्, **सः तथोक्तः** = तेन प्रकारेण कथितः, **प्रीतिं प्रतिपाद्य** = प्रसन्नताम् प्राप्य, **अभिपतस्यति** = समीपं गमिष्यति, **पुनः** = भूयः, अनेन, **वत्सनाभनाम्ना** = वत्सनाभः इति नाम यस्य तत् वत्सनाभ नाम तेन वत्सनाभनाम्ना, **महाविषेण** = महागरलेन, **संनीय** = सम्मिश्रय, **तोयं** = जलम्, **तत्र** = तस्मिन्, **मालां** = स्रक्, **मज्जयित्वा** = मज्जनं कारयित्वा, **तया** = देव्या वसुन्धरया, **वक्षसि** = उरसि, **मुखे च** = आनने च, **हन्तव्यः स एव अयम्** = अयम् मालाप्रहारः, **असिप्रहारः** = करवालप्रहारः, **पापीयसः** = पापात्मनः, **तव** = भवतः, भवतु यदि अहम् पतिव्रताऽस्मि, **पुनः** = भूयः, **अनेन अगदेन** = औषधेन, **अम्भसि** = जले, **संगमिते** = सम्मेलिते, **तां मालाम्** = स्रजम्, **मज्जयित्वा स्वदुहित्रे** = स्वपुत्र्यै, **देया** = प्रदेया, **मृते** = दिवंगते तु, तस्मिन् तस्याम् च, **निर्विकारायाम्** = विकारशून्यायाम्, सत्याम्, **सतीत्येवैनाम्** = सति इति एव एनाम् अर्थात् इयं महारानी वसुन्धरा सती पतिव्रतास्त्री अस्ति इति कथयित्वा, **प्रकृतयः** = प्रजाः जनाः, **एनाम्** = वसुन्धराम्, **अनुवर्तिष्यन्ते** = अनुसरिष्यति, **पुनः** = भूयः, **प्रचण्डवर्मणे** = मालवादेशनृपतये, **संदेश्यम्** = कथनीयम्, इदम् राज्यम्, **अनायकम्** = नायकरहितमस्ति, **अनेन एव सह** = अनेन राज्येन सार्द्धमेव, **इयं बालिका** = इयं मञ्जुवादिनी, **स्वीकर्त्तव्या** = भवता गृहणीया भार्या त्वेन इत्याशयः, **तावदावाम्** = तावत् = तावता कालेन, आवाम् = अहं भास्करवर्मा च, **कापालिकवेषच्छन्नौ** = कापालिकस्य वेषः इति कापालिकवेषः कापालिकवेषेण छन्नौ इति कापालिकवेष, च्छन्नौ = छादितौ, **देव्या एव** = राज्ञा वसुन्धरया एव, **दीयमानभिक्षौ** = दीयमाना भिक्षायाभ्यां तौ दीयमानभिक्षौ, **पुरो बहिः** = नगराद् बहिः, **उपश्मशानम्** = श्मशानसमीपे, **वत्स्यावः** = निवासं करिष्यावः, **पुनः** = भूयः, **आर्यप्रायान्** = सम्माननीयान् पुरुषान्, **पौरवृद्धान्** = नगरस्थितवृद्धपुरुषान्, **आप्तान्** = विश्वसनीयान्, **मन्त्रिवृद्धान्** = अमात्यवृद्धान्, **एकान्ते** = रहसि, **देवी** = महाराज्ञी, **ब्रवीतु** = कथयतु, **अद्य स्वप्ने** = स्वनावस्थायाम्, **देव्या विन्ध्यवासिना** = भगवत्या विन्ध्यवासिन्या, **मे कृतः प्रसादः** = मयि वसुन्धरायां अनुग्रहः कृतः, **अद्य चतुर्थे अहनि** = अद्य प्रभृति चतुर्थे दिवसे, **प्रचण्डवर्मा मरिष्यति** = मृत्युं प्राप्स्यति, **पञ्चमेऽहनि** = पञ्चमेदिने, **रेवातटवर्तिनि** = रेवानद्याः तटे विद्यमानम्, **मद्भवने** = मम मन्दिरे, **वैजन्यम्** = जनरहितम्, **परीक्ष्य** = विलोक्य, **जनेषु निर्गतेषु** = लोकेषु मन्दिरात् बहिः निस्सृतेषु, **कपाटम् उद्घाट्य** = द्वारम् उद्घाट्य, **त्वत्सुतेन** = वसुन्धरायाः पुत्रेण, **सह** = सार्द्धम्, **कोऽपि द्विजकुमारो** = ब्राह्मणबालको, **निर्यास्यति** = निर्गमिष्यति, स इदं राज्यम्, **अनुपाल्य** = पालनं कृत्वा, **बालं ते** = तव बालकम्, **प्रतिष्ठापयिष्यति** = सिंहासने

हिन्दी-अनुवाद—'ठीक है' (ऐसा कहकर) वह नालीजङ्घ अत्यन्त प्रसन्न होता हुआ चला गया और जो विषय (बातें) जिस रूप में सोचा गया था वैसा ही सम्पादित भी हो गया। प्रत्येक दिशा में यह चर्चा फैल गई, "अहो, पतिव्रता स्त्रियों का माहात्म्य" (अर्थात् देखो पतिव्रता धर्म की कितनी महिमा है)। माला (हार) का वह प्रहार (मित्रवर्मा के लिए साक्षात्) तलवार का प्रहार ही बन गया। "यह कार्य छल से परिपूर्ण था" यह कहना उचित नहीं था, क्योंकि उसी रानी द्वारा अपनी पुत्री को प्रदान की गई वही माला उसके लिए वक्षःस्थल का आभूषण हो गयी, मृत्यु नहीं (अर्थात् उसकी मृत्यु का कारण नहीं बनी)। (अतः) जो कोई इस पतिव्रता (रानी) की आज्ञा का पालन नहीं करेगा, वह (जलकर) भस्म ही हो जायेगा।

संस्कृत-व्याख्या—**सः** = नालीजङ्घः, **साम्प्रतम्** = उचितमस्ति (इत्युक्त्वा), **अतिप्रीतः** = अतिप्रसन्नो भूत्वा, **प्रायात्** = अगच्छात्, **अर्थः च अयम्** = इदं च आयोजनम्, **यथाचिन्तितम्** = यथाविचारितम्, **तथा अनुष्ठितः अभूत** = तत्रैव सम्पादितः अभवत्, **प्रतिदिशं च** = दिशि दिशि च, **लोकवादः** = जनानां वादः इति लोकवादः जनेषु समाचारः, **प्रासर्पत्** = प्रसृतोऽभूत्, **अहो** = आश्चर्यजनकम्, **माहात्म्यम्** = महिमा, **पतिव्रतानाम्** = साध्वीनां सतीनां स्त्रीणाम्, **असिप्रहारः** = करवालप्रहार एव, **हि** = निश्चयेन, **तस्मै** = मित्रवर्मणे, **सः मालाप्रहारः** = स्रक्प्रहारः जातः, **न च शक्यम्** = न उचितम्, **उपधियुक्तम्** = कपटयुक्तम्, **एतत् कर्म** = इदं कर्म, **इति वक्तुम्** = एवं कथयितुम्, **यतः** = यतोहि, **तया एव** = तया राज्ञा एव, **स्वदुहित्रे** = स्व पुत्र्यै, **दत्तम्** = प्रदत्तम्, **ताम** = मालां, **तस्यै** = बालिकायै, **स्तनमण्डनमेव** = स्तनमाभूषणमेव जातम्, **न मृत्युः** = मृत्योर्कारणम् न जातम्, योऽस्याः पतिव्रतायाः, **शासनम्** = आज्ञापालनम्, **अतिवर्तते** = उल्लंघयिष्यति, **सः भस्मैव** = भस्म एव, **भवेत्** = भविष्यति।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**अतिप्रीतः**—अतिशयितः प्रीतः इति। **यथाचिन्तितम्**—चिन्तितमनतिक्रम्य इति यथा चिन्तितम् (अव्ययीभाव)। **लोकवादः**—लोकानां वादः (षष्ठी तत्पुरुष)। **मालाप्रहारः**—मालायाः प्रहारः (षष्ठी तत्पुरुष)। **स्तनमण्डनम्**—स्तनयोः मण्डनम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अनुष्ठितः**—अनु+स्था+क्त। **माहात्म्यम्**—महात्मा+ष्यञ्। **उपधियुक्तम्**—उपधिना युक्तम् इति उपधियुक्तम् (तृतीया तत्पुरुष)।

(31) अथ महाव्रतिवेषेण मां च पुत्रं च भिक्षाय प्रविष्टौ दृष्ट्वा प्रस्नुतस्तनी प्रत्युत्थाय हर्षाकुलमब्रवीत्–"भगवन्, अयमञ्जलिः। अनाथोऽयं जनोऽनुगृह्यताम्। अस्ति ममैकः स्वप्नः। स सत्यो न वा?" इति। मयोक्तम्–"फलमस्याद्यैव द्रक्ष्यसि" इति। "यद्येवं बहुभागधेयमस्याः वो दास्याः। सत्वस्याः सानाथ्यशंसी स्वप्नः" इति मद्दर्शनरागबद्धसाध्वसां मञ्जुवादिनीं प्रणमय्य, भूयोऽपि सा हर्षगर्भमब्रूत–"तच्चेन्मिथ्या सोऽयं युष्मदीयो बालकपाली श्वो मया निरोद्धव्यः इति। मयाऽपि सस्मितं मञ्जुवादिनी रागलीनदृष्टिलीढ धैर्यणाभिहितम् "एवमस्तु" इति। लब्धभैक्षो नालीजङ्घमाकार्य निर्गम्य

कस्यापि चारभटस्य पीवरां सबाहुशिरमाक्रम्य, तावतैव तं विचेतीकुर्वन्, आकुलं च लोकमुच्चक्षुकुर्वन्, द्विपुरुषोच्छ्रितं प्राकारमत्यलङ्घ्यम्।

कठिन-शब्दार्थ—जरन्तम् = वृद्ध को, **आदिश्य** = आज्ञा देकर, **तात्प्राकारैक-पार्श्वे** = बगीचे की चाहरदीवारी के एक ओर, **मठिका** = छोटा मठ, **समवतार्य** = शरीर से उतार कर, **एत्य** = आकर, **अन्वरञ्जयम्** = प्रसन्न किया, **हस्तचक्रमणम्** = हाथों का इधर-उधर घुमाना आदि, **वृश्चिक** = बिच्छू, **उद्वर्तन** = पलटना, **करणानि** = क्रिया विशेष, **छुरिका:** = छुरियाँ, **वर्ष्मन्** = शरीर, **श्येनपात्** = बाज का गिरना, **प्रत्युरसम्** = वक्षःस्थल में, **प्रछूत्य** = प्रहार करके, **जीव्यात्** = जिये, **अभिगर्जन्** = गरजता हुआ, **मदगात्रम्** = मेरे शरीर की, **उत्कर्तुम्** = काटने के लिए, **पीवरांसु** = मोटे कन्धे, **विचती कुर्वन्** = बेहोश कर देते हुए, **द्विपुरुषोच्छ्रितम्** = दो पुरुषों की ऊँचाई वाली चहारदीवारी, **अत्यलङ्घ्यम्** = लांघ गया, कूद कर चला गया।

हिन्दी-अनुवाद—''यदि ऐसा है तो आप इस बगीचे में ही ठहरें'' इस प्रकार उस वृद्ध को आज्ञा देकर उस (बाग) की चहारदीवारी के एक कोने में बनी हुई किसी सुनसान झोंपड़ी में सारे वस्त्रों को उतारकर, उसकी रक्षा के निमित्त राजकुमार को नियुक्त कर, गायक का वेश तथा ढंग धारण कर प्रचण्डवर्मा के पास जाकर (मैं उसे) प्रसन्न करने लगा। सूर्य की किरणों के लाल हो जाने के समय (अर्थात् सायंकाल के समय) जन-साधारण के ज्ञान के लिए उपयोगी कार्यों (करामातों) को नाच, गान, नाना प्रकार से रोना इत्यादि, हाथ घुमाना, दोनों चरणों को ऊपर की ओर उठाकर हाथों के बल चलना अर्थात् दोनों हाथों से पृथ्वी को पकड़कर सिर घुमाते हुए ऊपर की ओर (शीर्षासन के सदृश) दोनों को उठाकर चलना, एक पैर को उठाकर दूसरे को संकुचित कर कुछ (मोड़कर) नृत्य करना, बिच्छू अथवा मकर के सदृश उछलना, मछली के समान उलटन-पलटन इत्यादि के कौशल दिखलाना आदि, फिर (तत्पश्चात्) समीप में स्थित दर्शकों की छुरियाँ लेकर उन (छुरियों) से अपनी देह को छू-छूकर (अर्थात् बाजीगर के समान अपने समीप में बैठे हुए लोगों से छुरियाँ लेकर उनकी नोकों के ऊपर अपने शरीर का भार रखकर) बाज तथा कुररी पक्षियों के समान झपट्टा मारना तथा रुदन करना इत्यादि दुष्कर कार्यों को दिखलाता हुआ, बीस धनुष (80 हाथ) की दूर पर बैठे हुए प्रचण्डवर्मा की छाती उसी की एक छुरी से (को लेकर उसी से) प्रहारकर 'वसन्तभानु हजार वर्षों तक जिये' ऐसी गर्जना करते हुए मेरे शरीर को काटने के लिए उद्यत तलवार हाथ में लिए हुए एक योद्धा-दूत की, मोटे ताजे कंधों वाली बाँह के उन्नत भाग पर आक्रमण कर और उतने से ही उसे बेहोश (मूर्च्छित) कर व्याकुल (आश्चर्य में पड़े हुए) जनों के नेत्रों को ऊपर करता हुआ (अर्थात् चिन्तित व्यक्तियों को अपनी ओर आकृष्ट कर) दो मनुष्यों की (लम्बाई-ऊँचाई) के बराबर ऊँचाई चाहरदीवारी को (मैं) लांघ गया (पार कर कूद गया)।

संस्कृत-व्याख्या—यदि एवम् = यदि इत्थं वर्तते, **तर्हि उद्याने तिष्ठ** = उपवने एव तिष्ठतु भवान्, **इति** = एवम्, **तं जरन्तम्** = वृद्धम्, **आदिश्य** = आज्ञाप्य, **तत्प्राकारैकपार्श्वे** = उद्यानस्य रक्षाभित्येकभागे, **कश्चित् शून्यमठिकायाम्** = शून्या

चासौ मठिका च इति शून्य मठिका तस्यां शून्यमठिकायाम्, **मात्राः** = परिच्छदादीन् वस्त्रादीन्, **समवतार्य** = शरीरात् क्षिप्त्वा, **तद्रक्षणनियुक्तराजपुत्रः** = तासां मात्राणां रक्षणम् इति तद्रक्षणम् तद्रक्षणे नियुक्तः राजपुत्रः राजकुमारः येन सः तद्रक्षणनियुक्तराजपुत्रः, **कृतकुशीलववेषलीलः** = कुशीलवच्छद्मनेत्यर्थः वेषश्च लीला च इति वेषलीले, कुशीलवस्य वेषलीले इति कुशीलववेषलीले कृते कुशीलववेषलीले येन सः कृतकुशीलववेषलीलः एतादृशः अहम् प्रचण्डवर्माणम्, **एत्य** = आगत्य, **अन्वरञ्जयम्** = प्रसादयम्, **अनुरञ्जितातपे समये** = एतादृशे समये यदा आतयः रक्त जातः अर्थात् सायंकाले, **जनसमाजज्ञानोपयोगीनि** = जनसमाजस्य कृते लाभकारिणि, **संहृत्य** = उपसंहृत्य, **नृत्यगीतनानारुदिनादि** = नृत्यं नर्त्तनं, गीतं गानं नानारुदिनादि नानाविधकुन्दनानुकारि शब्दादि, **हस्तचङ्क्रमणम्** = इतस्ततो हस्तभ्रामणम्, ऊर्ध्वपादोऽलातपादश्चेति नृत्यविशेषौ, **वृश्चिकमकरलङ्घनादीनि** = वृश्चिकलंघनं वृश्चिकेन क्रीडनम् मकरलंघनमपि तया, **मत्स्योद्वर्त्तनं** = मीनविलसितमिव, **च कारणानि**= क्रियाविशेषणान्, **आदायदाय** = विश्वासोत्पादनार्थं, **पुनः**= पुनर्गृहीत्वा, **आसन्नवर्तिनाम्** = समीपस्थितानाम्, **छुरिकाः** = शस्त्रिकाः, आदायेत्यस्य कर्म, ताभिश्छुरिकाभिः, **उपाहितवर्ष्मा**= संयुक्त शरीरः, **चित्रदुष्कराणि** = चित्राणि आश्चर्याणि दुष्कराणि अन्यैः कर्तुमशक्यानि, **श्येनपातोत्क्रोशपातादीनि** = श्येनः पक्षिविशेषः उत्क्रोशः कुररपक्षी तद्वत्पातः पतनं तादृशानि, **दर्शयन्** = प्रदर्शयन्, **विंशतिचापान्तरालावस्थितस्य** = अशीतिहस्तपरिमाणं तत्प्रमाणेऽन्तराले दूरेऽवस्थितस्य वर्त्तमानस्य, प्रचण्डवर्मणः एकया छुरिकया, **प्रत्युरसम्** = वक्षसि, **प्रहृत्य** = प्रहारं कृत्वा, **वसन्तभानुः वर्षसहस्रम्** = वर्षाणां सहस्रं इति वर्षसहस्रम्, **जीव्यात्** = जीवितं भवते, **इत्याभिगर्जन्** = इति गर्जनां कुर्वन्, **मदगात्रम्** = मम शरीरम्, **उत्कर्तुम्** = छोत्तुम्, **उद्यतासेः** = ऊर्ध्वीकृत खड्गस्य, **कस्यापि चारभटस्य** = चारश्चरः स चासौ भटो योद्धा चेति तस्य, **पीवरांसु बाहुशिरमाक्रम्य** = पीवरौ स्थूलौ अंसौ मयोस्तयोर्बाह्वोः करयोः शिखरम् मूर्द्धभागम्, **आक्रम्य** = आक्रमणं कृत्वा, **तावतैव** = तन्मात्रेणैव, **तं** = चारभटम्, **विचेतीकुर्वन्** = चेतनाविहीनं कुर्वन्, **आकुलम् च** = व्याकुलम्, क्षुब्धम् च, **उच्चक्षूकुर्वन्** = ऊर्ध्वनेत्रं सम्पादयन्, **द्विपुरुषोच्छ्रितम्** = पुरुषद्वयप्रमाणोन्नतम्, प्राकारम्, **अत्यलङ्घयम्** = लङ्घितवान्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**जरन्तम्**—जृ+शतृ। **आदिश्य**—आदश्+ल्यप्। **समवतार्य**—सम्+अव्+तृ+णिच्+ल्यप्। **तत्प्राकारैकपार्श्वे**—तस्य प्राकारः—तत्प्राकारः (उस बगीचे की चाहरदीवारी), तस्य एकपार्श्वे इति तत्प्राकारैकपार्श्वे (षष्ठी तत्पुरुष)। **शून्यमठिकायाम्**—शून्या चासौ मठिका च—शून्य मठिका तस्याम् (कर्मधारय)। **तद्रक्षणनियुक्तराजपुत्रः**—तासां रक्षणम्—तद्रक्षणम् तद्रक्षणे नियुक्तः राजपुत्रः येन सः (बहुव्रीहि)। **कृतकुशीलववेषलीला**—वेषश्चलीला च इति वेषलीले (द्वन्द्व), कुशीलवस्य वेषलीले इव वेषलीले यस्य सः कुशीलववेषलीलः कृते कुशीलववेषलीले येन सः (बहुव्रीहि)। **अनरञ्जितातपे**—अनुरञ्जितः (लाल-लाल) आतपः यस्मिन् सः

अनुरञ्जितातपः तस्मिन्। **जनसमाजज्ञानोपयोगीनि**—जनानां समाजः इति जनसमाजः, जनसमाजस्य ज्ञानोपयोगीनि जनसमाजज्ञानोपयोगीनि (षष्ठी तत्पुरुष)। **हस्तचक्रमणम्**—हस्तयोः चक्रमणम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **आसन्नवर्तिनाम्**—आसन्ने (समीपे) वर्तन्ते इति आसन्नवर्तिनः तेषाम् (तत्पुरुष)। **उपाहितवर्ष्मा उपाहितं वर्ष्म**—(शरीरं) यस्य सः (बहुव्रीहि)। **विंशतिचापान्तरालावस्थितः**—विंशतिचापानां (धनुषों का) अन्तराले अवस्थितः इति विंशति चापान्तरालावस्थितः तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)। **वर्षसहस्रम्**—वर्षाणां सहस्राणि इति वर्षसहस्रम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **उद्यतासेः**—उद्यतः असिः यस्य सः उद्यतासिः तस्य (बहुव्रीहि)। **चारभटस्य**—चारश्चासौ भटश्च इति चारभटः (कर्मधारय) तस्य। **पीवरांसबाहुशिखरम्**—पीवरौ अंसौ ययोः तौ पीवरांसौ (बहुव्रीहि) पीवरांसौ च तौ बाहू इति (कर्मधारय) पीवरां बाहोः शिखरम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **विचेतीकुर्वन्**—विगतं चेतः यस्य च विचेतः (बहुव्रीहि) न विचेतः अविचेतः, अविचेतसं विचेतसं कुर्वन् इति विचेतीकुर्वन्। **उच्चक्षूकुर्वन्**—उद्गतानि चक्षूंषि येषां ते उच्चक्षवः न उच्चक्षवः अनुच्चक्षवः अनुच्चक्षूम् उच्चक्षून् कुर्वन् इति। **द्विपुरुषोच्छ्रितम्**—द्विपुरुषौ प्रमाणं यस्य तद् द्विपुरुषप्रमाणम् द्विपुरुषप्रमाणम् उच्छ्रितः इति द्विपुरुषोच्छ्रितः तम्।

(33) अवप्लुत्य चोपवने 'मदनुपातिनामेषः पन्था दृश्यते' इति ब्रुवाण एव नालीजङ्घसमीकृतसैकतास्पष्टपादन्यासया तमालवीथ्या चानुप्राकारं प्राचाप्रतिधावितः, पुनरवाचोच्चितेष्टकाचितत्वादलक्ष्यपादेन प्रद्रुत्य, लङ्घितप्राकारवप्रखातवलयः, तस्यां शून्यमठिकायां तूर्णमेव प्रविश्य, प्रतिमुक्तपूर्ववेषः सह कुमारेण मत्कर्मतुमुलराजद्वारिदुःखलब्धवर्त्मा श्मशानोद्देशमभ्यगाम्। प्रागेव तस्मिन्दुर्गागृहे प्रतिमाधिष्ठान एव मया कृतं भग्नपार्श्वस्थैर्यस्थूलप्रस्तरस्थगितबाह्यद्वारं बिलम्।

कठिन-शब्दार्थ—**अवप्लुत्य** = कूदकर, **मदनुपातिनाम्** = मेरा अनुसरण करने वालों का, **ब्रुवाणः** = कहते हुए, **तमालवीथ्या** = तमाल के वृक्षों की गली अथवा सड़क से, **अनुप्राकारम्** = चाहरदीवारी के पास, **प्राच्या** = पूर्व दिशा से, **प्रतिधावितः** = दौड़ा, **अवाच्** = दक्षिण, **इष्टका** = ईंट, **अलक्ष्यपादेन** = बिना देखे गये हुए पैर से, **खात** = चारों तरफ खुदी खाई, **तूर्णम्** = शीघ्र, **अभ्यगाम्** = गया, **प्रतिमाधिष्ठाने** = मूर्ति के आधार स्थल में, **स्थगित** = बन्द।

हिन्दी-अनुवाद—बाग में कूद कर 'मेरा पीछा करने वालों को यह रास्ता दिखायी पड़ता है', ऐसा कहते हुए नालीजङ्घ के द्वारा समतल किये गये हुए बालुकामय स्थल के कारण जिसमें चरणों के चिह्न अस्पष्ट हो गये थे (स्पष्ट रूप से दिखायी नहीं पड़ रहे थे)। इस प्रकार की एक, तमाल कुंजों की सड़क से, चाहरदीवारी के पीछे से पूर्व दिशा की ओर भागा। फिर ढेर रूप में एकत्रित की गई हुई ईंटों के कारण, किसी को मेरे चरण चिह्न दिखलायी पड़े बिना ही दक्षिण दिशा की ओर भाग कर चाहरदीवारी के चारों ओर खुदी हुई खाई रूपी घेरे को पारकर, उस सुनसान मन्दिर में अतिशीघ्र प्रवेश कर, अपने पहले वाले वेश को त्याग कर कुमार के साथ, मेरे पूर्वोक्त आचरण के कारण (कोलाहल से) परिपूर्ण (भरे हुए) राजद्वार पर बड़ी कठिनता से मार्ग पाकर (मैं) श्मशान स्थल को गया। (वहाँ पर

स्थित) दुर्गा जी के मन्दिर में, पहले ही से (प्रतिमा मूर्ति) के आधार में मेरे द्वारा छिद्र बना दिया गया था जिसका बाह्यद्वार एक मोटे पत्थर से, जिसकी एक ओर की स्थिरता (दृढता) टूट गयी थी, बन्द कर दिया गया था।

संस्कृत-व्याख्या—उपवने च = उद्याने च, **अवप्लुत्य** = उड्डीय, **मदनुपातिनाम्** = मामनुधावताम्, **एष** = अयं, **पन्थाः** = मार्गः, **दृश्यते** = अवलोक्यते, **इति** = एवं, **ब्रुवाणः** = कथयन्, **एव नालीजङ्घसमीकृतसैकतं स्पष्टपादन्यासया** = नालीजङ्घेन समानी कृतेन समीकृतेन सैकतेन बालुकामयस्थानेन, अपृष्टोऽलग्नो यः पादस्तादृशस्य न्यासो निक्षेपो यस्यां तया, **तमालवीथ्या** = तमालवृक्षपद्धत्या, **अनुप्राकारम्** = प्राकारसमीपम्, **प्राचा** = पूर्वया दिशा, **प्रतिधावितः** = धावितवान्, **पुनः** = **भूयः**, **अवाचा** = दक्षिणदिशा, उच्चितानि राशीकृतानि यानि इष्टकानि तैश्चित्तत्वात् व्याप्तत्वात् **अलक्ष्यपादेन** = न लक्ष्य इति अलक्ष्यः, अलक्ष्यश्चासौ पादश्च इति अलक्ष्यपादः तेन अलक्ष्यपादेन = अदृश्यचरणेन, **प्रद्रुत्य** = धावित्वा, **लङ्घितप्राकारम्** = लङ्घितमतिक्रान्तं प्राकारवप्रस्थ प्राचीरस्य खातवलयं खातवेष्टनं येन सः तस्यां शून्यमठिकायां, **तूर्णम्** = शीघ्रम्, एव **प्रविश्य** = प्रवेशं कृत्वा, **प्रतिमुक्तपूर्ववेषः** = प्रतिमुक्तः त्यक्तः पूर्ववेषः कुशीलववेषो येनासौ, **कुमारेण सह** = सार्द्धम्, **मत्कर्मतुमुलराजद्वारि** = मम कर्म इति मत्कर्म अर्थात् प्रचण्डवर्मणः वधः, राज्ञः काः इति राजकाः मत्कर्मणा तुमुला क्षुब्धा, व्याकुला इति मत्कर्मतुमुला, राजद्वारे, दुःखेनातिकष्टेन लब्धं वर्त्म पन्था येनासौ, **श्मशानोद्देशम्** = श्मशानप्रदेशम्, **अभ्यगाम्** = अभ्यगच्छम्, **प्रागेव** = प्राक् एव पूर्वमेव, तस्मिन्, **दुर्गागृहे** = दुर्गामन्दिरे, **प्रतिमाधिष्ठान एव** = प्रतिमाया मूर्तेरधिष्ठाने, **मया कृतम्** = विहितम्, **भग्नपार्श्वस्थैर्यस्थूलप्रस्तरस्थगितबाह्यद्वारम्** = भग्नं त्रुटितम्, **पार्श्वयोः** = पार्श्वभागयोः, **स्थैर्यं** = काठिन्यं यस्य तादृशेन स्थूलेन महता प्रस्तरेण स्थगितमाच्छादितम्, **बाह्यद्वारं** = बहिर्द्वारम् यस्य तदिति किल विशेषणम्, **बिलम्** = छिद्रम्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—मदनुपातिनाम्—माम् अनुपतन्ति तच्छीलाः इति मदनुपातिनः तेषाम्। **नालीजङ्घसमीकृतसैकतास्पष्टपादन्यासया**—नाजङ्घेन समीकृतेन सैकतेन (बालुकामयस्थानेन) अस्पष्टाः पादन्यासाः यस्यां तमालवीथ्याम् सा नालीजङ्घसमीपकृतसैकतास्पष्टपादन्या सा तेया (बहुव्रीहि)। **तमालवीथ्या**—तमालानां वीथी इति तमालवीथी सा तया (षष्ठी तत्पुरुष)। **अनुप्राकारम्**—प्रकारस्य समीपे इति अनुप्राकारम् (अव्ययीभाव)। **उच्चितेष्टकचितत्वात्**—उच्चिताः इष्टिकाः—उच्चितेष्टकाः (कर्मधारय) ताभिः जितम् इति उच्चितेष्टकाचितम्, तस्य भावः उच्चितेष्टकाचित्वम् तस्मात्। **अलक्ष्यपादेन**—न लक्ष्यः इति अलक्ष्यः, अलक्ष्यश्चासौ पादः अलक्ष्यपादः तेन (कर्मधारय)। **लङ्घितप्राकारखातवलयः**—लङ्घितं प्रकारस्य खातवलयं येन सः (बहुव्रीहि)। **प्रतिमुक्तपूर्ववेषः**—प्रतिमुक्तः पूर्ववेषः (कुशीलवेशः) येन सः (बहुव्रीहि)। **मत्कर्मतुमुलराजद्वारिदुःखलब्धवर्त्मा**—मत्कर्मणा तुमुले (सङ्कुले) राजद्वारे दुःखेन लब्धं वर्त्म येन सः (बहुव्रीहि)। **श्मशनोद्देशम्**—श्मशानस्य उद्देशः श्मशानोद्देशः तम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **प्रतिमाधिष्ठाने**—प्रतिमायाः अधिष्ठानम् इति प्रतिमाधिष्ठानम् (षष्ठी तत्पुरुष)

तस्मिन्। **भग्नपार्श्वस्थैर्यस्थूलप्रस्तरस्थगितबाह्यद्वारम्**—भग्नं पार्श्वयोः स्थैर्यं यस्य तादृशेन स्थूलेन प्रस्तरेण स्थगितं बाह्यद्वारं यस्य तत्। **अवप्लुत्य**—अव+प्लु+ल्यप्। **ब्रुवाणः**—ब्रु+शानच्। **प्रतिधावितः**—प्रति+धाव्+क्त। **उच्चितः**—उत्+चि+क्त। **प्रद्रुत्य**—प्र+द्रु+ल्यप्। **स्थैर्यम्**—स्थिर+ष्यञ्।

(34) अथ गलति मध्यरात्रे वर्षवरोपनीतमहार्हरत्नभूषणपट्टनिवसनौ तद्बिलमावां प्रविश्य तूष्णीमतिष्ठाव। देवी तु पूर्वेद्युरेव यथार्हमग्निसंस्कारं मालवाय दापयित्वा प्रचण्डवर्मणे, चण्डवर्मणे च तामवस्थामश्मकेन्द्रोपधिकृतामेव सन्दिश्य, उत्तरेद्युः प्रत्युषस्येवपूर्वसंकेतितपौरामात्यसामन्तवृद्धैः सहाभ्येत्य भवगतीमर्चयित्वा सर्वजनप्रत्यक्षं परीक्षितकुक्षिवैजन्यं तद्भवनं विधाय तद्दत्तदृष्टिः सह जनेन स्थित्वा, पटियांसं पटहशब्दमकारयत्। अणुतररन्ध्रप्रविष्टेन तेन नादेनाहं दत्तसंज्ञः शिरसैवोत्क्षिप्य सप्रतिमं लोहपादपीठमंसलपुरुषप्रयत्नदुश्चलमुभयकरविधृतैकपार्श्वमेकतो निवेश्य निरगमम्। निरगमयं च कुमारम्। अथ यथापूर्वमर्पयित्वा दुर्गामुद्घाटितकपाटः प्रत्यक्षीभूय प्रत्ययहृष्टदृष्टीः स्पष्टरोमाञ्चमुद्यताञ्जलि रूढविस्मयं च प्रणिपतन्तीः प्रकृतीरभ्यधाम्। इत्थं देवी विन्ध्यवासिनी मन्मुखेन युष्मानाज्ञापयति। स एष राजसूनुरापन्ना मया सकृपया शार्दूलरूपेण तिरस्कृत्याद्य वो दत्तः। तमेनमद्यप्रभृति मत्पुत्रतयाऽमन्दमातृपक्ष इति परिगृह्णन्तु भवन्तः।

कठिन-शब्दार्थ—**गलति** = बीत जाने पर, **वर्षवर** = नपुंसक (हिंजड़ा), **महार्ह** = बहुमूल्य, **दापयित्वा** = दिलवाकर, **निवसनानि** = वस्त्र, **तूष्णीम्** = चुपचाप, **पूर्वेद्युः** = प्रथम दिन, **प्रत्युषस्येव** = उषाकाल में ही, **अभ्येत्य** = आकर, **सर्वजनप्रत्यक्षम्** = सभी लोगों के समक्ष, **अर्चयित्वा** = पूजा करके, **कुक्षि** = भीतरी भाग, **पटीयान्सम्** = अत्यन्त चतुर, **पटहशब्दम्** = दुन्दुभि की ध्वनि को, **अकारयत्** = करवाया, **दत्तसंज्ञः** = जिसको संकेत किया गया था, **लौहपादपीठम्** = लोहे का बना हुआ पैरदान, **अंसल** = सबल, **निरगमम्** = निकल आया, **अर्पयित्वा** = रखकर, **अभ्यधाम्** = कहा, **तिरस्कृत्य** = छिपाकर, **अद्य प्रभृति** = आज से, **मत्पुत्र तया** = मेरा पुत्र होने के कारण, **परिगृह्णन्तु** = स्वीकार करें।

हिन्दी-अनुवाद—अर्द्धरात्रि बीत जाने पर, (राजा के अन्तःपुर के रक्षक) एक हिंजड़े (नपुंसक) के द्वारा लाये गये बहुमूल्य रत्नजटित आभूषणों तथा कपड़ों को धारण कर हम दोनों उस छिद्र में प्रवेश करके चुपचाप बैठे रहे। महादेवी ने प्रथम दिन ही मालवराज प्रचण्डवर्मा का यथोचित दाहसंस्कार (दिलवाकर) कराके तथा चण्डवर्मा को यह समाचार भेजकर कि प्रचण्डवर्मा की यह दशा अश्मकाधिपति वसन्तभानु के छल से हुई है, दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही, पहले से ही संकेत दिये गये हुए नगर निवासियों, मन्त्रियों एवं सामन्तों के साथ जाकर, भगवती की पूजा कर, सबके समक्ष उस मन्दिर के अन्दर के भाग के जनशून्य होने की परीक्षा कर उसी मन्दिर की ओर दृष्टिपात करने वाले जनसमूह के साथ स्थित होकर, बड़ी तीव्रता से नगाड़े की ध्वनि करायी। अत्यन्त सूक्ष्म उस छिद्र से प्रविष्ट नाद (शब्द) के द्वारा संकेत पाकर, जो लौहपाद पीठ अत्यन्त हृष्ट पुष्ट शरीरधारी व्यक्ति द्वारा अत्यन्त प्रयत्न करने पर भी कठिनता से हिल-डुल सकता था, उसे मैं मूर्ति सहित सिर

से उठाकर, दोनों हाथों से पकड़कर एक सिरे को एक ओर रखकर निकल आया और कुमार को भी निकालकर ले आया। इसके पश्चात् पूर्ववत् देवी-दुर्गा की मूर्ति को (छिद्र पर) रखकर, किवाड़ खोलकर, सामने आकर मैंने विश्वास के साथ हर्षित नेत्रों वोली, स्पष्टतः रोमाञ्च को प्रकट करती हुई, अञ्जलि उठाकर (हाथ जोड़कर) आश्चर्य के साथ प्रणाम करती हुई प्रजा से कहा, ''विन्ध्यवासिनी देवी मेरे मुख के द्वारा आप सभी को आदेश देती हैं कि विपत्ति ग्रसित यह राजकुमार बाघ रूप को धारण किये हुए मेरे द्वारा कृपापूर्वक छिपाया गया था–आज मैं इसे आप लोगों के हाथों में समर्पित करती हूँ। आज से आप लोग इसे मुझे (विन्ध्यवासिनी) के पुत्र के रूप में (अर्थात् यह मेरा ही पुत्र है इस रूप में) स्वीकार करें, अतः इसका मातृकुल (अमन्द) अत्यन्त ऊँचा है।''

संस्कृत-व्याख्या—अथ गलति = गच्छति, **मध्यरात्रे** = मध्यं रात्रेः रजन्याः, **वर्षवरो** = राजान्तःपुररक्षकः षण्ढः, तेनोपनीतं प्रापितं देव्याप्रदत्तमित्यर्थः, **महार्हं बहुमूल्यं रत्नभूषणं पट्टनिवसनो** = कौशेयवस्त्रं च याभ्यां तौ, रत्नालङ्कारान् वस्त्राणि च परिधायेत्यर्थः, **आवाम्** = कुमारो विश्रुतश्च, **तद्विलम्** = तद्छिद्रम्, **प्रविश्य** = प्रवेशं कृत्वा, **तूष्णीं** = शान्तम्, उपतिष्ठाव, **देवी तु** = महादेवी तु, **पूर्वेद्युरेव** = पूर्वस्मिन् दिने एव, **यथार्हम्** = यथायोग्यम्, **अग्निसंस्कारम्** = दाहक्रियाम्, मालवाय प्रचण्डवर्मणे, **दत्त्वा** = प्रदाय, चण्डवर्मणे च, **ताम् अवस्थाम्** = प्रचण्डवर्मणः मरणस्य घटनाम्, **अश्मकेन्द्रोपाधिकृताम् एव** = अश्मकेन्द्रस्य वसन्ताभानो रुपधिना छलेन कृतां जनितामिति अवस्थाया विशेषणम्, **चण्डवर्मणे सन्दिश्य** = सन्देशं प्रेषयित्वा, **उत्तरेद्युः** = अन्यस्मिन् दिने, **प्रत्युषस्येव** = प्रातःकाले एव, **पूर्वसंकेतितपौरामात्यसामन्तवृद्धैः** = पूर्व संकेतिताः इति पूर्व संकेतिताः, पौराः अमात्याश्च, सामन्तवृद्धाश्च इति पूर्वसंकेतित पौरामात्यसामन्तवृद्धः, तैः पूर्वसंकेतितपौरामात्यसामन्तवृद्धैः, **सह** = सार्द्धम्, **अभ्येत्य** = अभ्यागत्य, **भगवतीम्** = दुर्गादेवीम्, **अर्चयित्वा** = पूजयित्वा, **सर्वजनप्रत्यक्षम्** = सर्वजनानां प्रत्यक्षम् = समक्षम्, **परीक्षितकुक्षिवैजन्यम्** = परीक्षितम् = सम्यक् दृष्टं कुक्षेः अभ्यन्तरस्य वैजन्यं विजनता जनशून्यत्वं यस्य तत्। **तद्भवनम्** = दुर्गामन्दिरम्, **विधाय** = कृत्वा, **तद्दत्तदृष्टिः** = तस्मिन् मन्दिरे दत्तः दृष्टिः यया राज्ञ्या सा तद्दत्तदृष्टिः राज्ञी, **जनेनासहास्थित्वा** = सर्वसाधारणलोकसमूहेन सह स्थित्वा, **पटीयांसम्** = महान्तम्, **पटहशब्दम्** = दुन्दुभिध्वनिम्, **अकारयत्** = कारितवान्, **अणुतररन्ध्रप्रविष्टेन** = अत्यन्तसूक्ष्मछिद्रेण प्रविष्टेन, तेन, **नादेन** = गर्जनेन, **दत्तसंज्ञः** = दत्तसंकेतः, एतादृशः अहम् शिरसै, **उत्क्षिप्य** = उत्थाप्य, **सप्रतिमम्** = प्रतिमया सह वर्तमानम् सप्रतिमम् = देवीमूर्तिसहितम्, **लोहपादपीठम्** = लोहनिर्मितं पादपीठम् इति लौहपादपीठम्, **अंसलपुरुषप्रयत्नदुश्चलम्** = अंसल = बलवान्, पुरुष = मनुष्य, प्रयत्न = प्रयास, दुश्चलम् = दुःखेन चालयितुम् शक्यम्, **उभयकरविधृतमेकपार्श्वम्** = उभयकराभ्यां हस्ताभ्यां विधृतम् गृहीतम् इति उभयकरविधृतम्, एकपार्श्वस्य विशेषणम्, एकपार्श्वश्च लोहपादपीठस्येति ज्ञेयम्, **एकतो** = विलस्यैक पार्श्वे, **निवेश्य** = स्थापयित्वा, **निरगमम्** = अहं निष्कासितवान्, **कुमारम् च निरगमयम्** = निष्कासितवान्, **अथ** = अनन्तरम्,

यथापूर्वम् = पूर्वम् अनतिक्रम्य पूर्वानुसारम्, **अर्चयित्वा** = पूजयित्वा, **दुर्गाम्** = दुर्गा-देव्याः मूर्तिम्, **उद्घाटितकपाटः** = उद्घाटितौ कपाटौ येन सः उद्घाटितकपाटः एतादृशः अहम्, **प्रत्यक्षीभूयः** = सर्वजनसमक्षं निर्गत्य, **प्रत्ययहृष्टदृष्टीः** = प्रत्ययेन विश्वासेन हृष्टा सन्तुष्टा दृष्टिर्यासां ताम्, **स्पष्टरोमाञ्चम्** = स्पष्टाः रोमाञ्चाः यस्मिन् कर्मणि तद्यथा स्यात् तथा इति स्पष्टरोमाञ्चम्, **उद्यताञ्जलि** = उद्यताः अञ्जलयः यस्मिन् कर्मणि तद् यया स्यात् तया इति उद्यताञ्जलि, **रूढविस्मयम्** = रूढः संजातो विस्मयो यस्मिन् तद् मया स्यात् तया, **प्रणियपन्तीः** = प्रणमन्तीः, **प्रकृतीः** = प्रजाः, **अभ्यधाम्** = अकथयम्, **इत्थम्** = अनेन प्रकारेण, देवी विन्ध्यवासिनी, **मन्मुखेन** = मम मुखम् इति मन्मुखम् तेन मन्मुखेन मदाननेन, **युष्मान्** = भवतः, **आज्ञापयति** = आदेशं प्रददाति। मया, **सकृपया** = सदयया, **शार्दूलरूपेण** = व्याघ्ररूपेण, **तिरस्कृत्य** = संछाद्य संगोप्य वा, **वः** = युष्मभ्यम्, **दत्तम्** = प्रदत्तम्, **एनम्** = कुमारम्, **अद्यप्रभृति** = अद्यतः, **मत्पुत्रतया** = अयं मम पुत्रः इति कारणेन, **मन्दमातृपक्ष** = मन्दो दुर्भाग्यो मातृपक्षो यस्य तया भूतः, **इति** = एवम् भवन्तः, **परिगृह्णन्तु** = स्वीकुर्वन्तु।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—दापयित्वा—दाप्+णिच्+क्त्वा। **संदिश्य**—सम्+दिश्+ल्यप्। **अभ्येत्य**—अभि+आ+इ+ल्यप्। **वैजन्यम्**—विजन+ष्यञ्। **अंसल**—अंस+लच्। **दुश्चलम्**—दुस्+चल्+णिच्+खल्। **निरगमयम्**—निर्+गम्+णिच्+लङ्+उत्तमपुरुष एकवचन। **प्रत्यक्षीभूय**—प्रत्यक्ष+च्वि+भू+ल्यप्। **आपन्तः**—आ+पद्+क्त। **मध्यरात्रे**—मध्यं रात्रेः इति मध्यरात्रः तस्मिन् (तत्पुरुष)। **वर्षवरोपनीतमहार्हरत्नभूषणपट्टनिवसनौ**—वर्षवरेण उपनीतानि, **महार्हाणि रत्नभूषणानि**—पट्टनिवसनानि ययोः तौ (बहुव्रीहि)। **यथार्हम्—अर्हं अनतिक्रम्य**—यथार्हम् (अव्ययीभाव)। **अग्निसंस्कारम्**—अग्नौ संस्कारः इति अग्निसंस्कारः तम् (सप्तमी तत्पुरुष)। **अश्मकेन्द्रोपधिकृताम्**—अश्मकेन्द्रस्य वसन्तभानोः उपधिना कृता इति अश्मकेन्द्रोपधिकृता ताम् (तत्पुरुष)। **पूर्वसङ्केतितपौरामात्यसामन्तवृद्धैः**—पूर्व सङ्केतिताः इति पूर्वसङ्केतिताः, पौराश्च अमात्याश्च सामन्तवृद्धाश्च इति पौरामात्यसामन्तवृद्धाः (द्वन्द्व) पूर्वसङ्केतिताश्च ते पौरामात्यसामन्तवृद्धाश्च इति पूर्वसङ्केतितपौरामात्यसामन्तवृद्धाः तैः (कर्मधारय)। **सर्वजनप्रत्यक्षम्**—सर्वे च ते जनाः च—सर्वजनाः (कर्मधारय), तेषां प्रत्यक्षम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **परीक्षितिकुक्षिवैजन्यम्**—विगताः जनः यस्मात् तत् विजनम् (बहुव्रीहि), तस्य भावः वैजन्यम्, परीक्षित वैजन्यं यस्य तत् (बहुव्रीहि)। **तद्दत्तदृष्टि**—तस्मिन् दत्ता दृष्टिः यया सा (बहुव्रीहि)। **पटीयांसम्**—अतिशयेन पटुः इति पटीयान् तम्। **अणुतररन्ध्रप्रविष्टेन**—अणुतरेण रन्ध्रेण प्रविष्टः इति अणुतररन्ध्रप्रविष्टः तेन (तृतीया तत्पुरुष)। **दत्तसंज्ञः**—दत्ता संज्ञा यस्य स (बहुव्रीहि)। **सप्रतिमम्**—प्रतिमया सह वर्तमानं इति सम्प्रतिमम् (बहुव्रीहि)। **अंसलपुरुषप्रयत्नदुश्चलम्**—अंसलश्चासौ पुरुषः इति अंसलपुरुषः (कर्मधारय)। तस्य प्रयत्नाः इति अंसलपुरुषप्रयत्नाः तैः दुश्चलम् (चालयितुमशक्यम्) इति (तत्पुरुष)। **उभयकरविधृतैकपार्श्वम्**—उभयकराभ्यां विधृतः एकपार्श्वः यस्य तत्। **यथापुरम्**—पुनरं अनतिक्रम्य इति यथापुरम्। **उद्घाटितकपाटः**—

उद्घाटितौ कपाटौ येन स (बहुव्रीहि)। **प्रत्यक्षीभूय**—न प्रत्यक्षः अप्रत्यक्षः, अप्रत्यक्षः प्रत्यक्षः भूत्वा इति प्रत्यक्षीभूयः। **प्रत्ययहृष्टदृष्टिः**—प्रत्ययेन हृष्टाः दृष्टयः यस्मिन् तत् बहुव्रीहि। **स्पष्टरोमाञ्चम्**—स्पष्टाः रोमाञ्चाः यस्मिन् तत्। **उद्यताञ्जलि**—उद्यताः अञ्जलयः यस्मिन् तत्। **रूढविस्मयम्**—रूढ विस्मयः यस्मिन् तत्। **सकृपया**—विद्यमाना कृपा यस्यां सा (बहुव्रीहि)। **शार्दूलरूपेण**—शार्दूलस्य रूपं इति शार्दूलरूपम् तेन। **मत्पुत्रतया**—मम पुत्रः इति मत्पुत्रः (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य भावः मत्पुत्रता, तया। **अमन्दमातृपक्षः**—अमन्दः मातृपक्षः यस्य सः (बहुव्रीहि)।

(35) अपि च दुर्घटकूटकोटिघटनापाटवप्रकटशाठ्यनिष्ठुराश्मकघटघट्टनात्मान मां मन्यध्वमस्य रक्षितारम्। रक्षानिर्वेशश्चास्य स्वसेयं सुभ्ररभ्यनुज्ञाता मह्यमार्यया इति। श्रुत्वैतत् 'अहो भाग्यवान्भोजवंशः यस्य त्वमार्यादत्तो नाथः' इत्यप्रीयन्त प्रकृतयः। सा तु वाचामगोचरां हर्षावस्थामस्पृशन्मे श्वश्रः। तवहरेव च यथावदग्राह्यन्मञ्जुवादिनी-पाणिपल्लवम्। प्रपन्नायां च यामिन्यां सम्यगेव बिलं प्रत्यपूरयम्। अलब्धरन्ध्रश्च लोको नष्टमुष्टिचिन्तादिकथनरभ्युपायान्तरप्रयुक्तैर्दिव्यांशतामेव मे समर्थयमानो मदाज्ञां नात्यवर्तत।

कठिन-शब्दार्थ—दुर्घट = कठिनता से की जा सकने वाली, **कूट** = कपट, छल, **पाटव** = चतुरता, **शाठ्य** = दुष्टता, **घट्टनः** = हिलाने वाला, **मान्यध्वम्** = मानो, **रक्षानिर्वेशः** = रक्षा की मजदूरी, **स्वसा** = बहिन, **आभ्यनुज्ञाता** = देने के लिए स्वीकार कर लिया है, **अप्रीयन्त** = प्रसन्न हुई, **श्वश्रूः** = सास, **अगोचराम्** = अवर्णनीय, **हर्षावस्थाम्** = प्रसन्नता की दशा को, **अग्राहात** = पकड़वा दिया, **पाणिपल्लवम्** = पल्लव (नूतन पत्ता) के समान सुकोमल हाथ, **यामिन्याम्** = रात्रि में, **प्रत्यपूरयम्** = पूरा कर दिया, **अलब्धरन्ध्रः** = प्राप्त नहीं किया जा सका, रहस्य जिसके द्वारा ऐसा जनसमूह, **अभ्युपायान्तरप्रयुक्तैः** = अन्य-अन्य प्रकार के उपायों को प्रयोग में लाने के द्वारा, **दिव्यांशताम्** = दैवी अंश होने को, **समर्थयमानः** = दृढता के साथ कहते हुए, **न अत्यवर्त्तत्** = उल्लंघयन नहीं किया करती थी।

हिन्दी-अनुवाद—इन सम्पूर्ण दुष्कर कपटों की योजनाओं की चतुरता के कारण जिसकी शठता (दुष्टता) (जनसाधारण को) विदित (प्रकट) है ऐसे अश्मक देशाधिपति वसन्तभानु रूपी घड़े को घट्टन (फोड़ने) करने वाले मुझ को आप इस कुमार का रक्षक मानो (समझो, जानो)। मेरे द्वारा की गयी हुई रक्षा के पारिश्रमिक के रूप में इसकी यह सुन्दर भौंओं वाली बहिन भार्या विन्ध्यवासिनी द्वारा पत्नी के रूप में मुझे प्रदान की गयी है। यह सुनकर, 'अहो, भोजवंश बड़ा भाग्यशाली है, जिसमें आर्या विन्ध्यवासिनी द्वारा किये गये तुम सदृश हमारे स्वामी हुए' यह कहकर प्रजा प्रसन्न होने लगी। वह मेरी सास (तो) वाणी द्वारा न कहे जाने योग्य हर्ष को प्राप्त हुई और उन्होंने उसी दिन हमारे साथ विधिपूर्वक मंजुवादिनी का पाणि-पल्लव मुझे ग्रहण करा दिया (अर्थात् मंजुवादिनी का विवाह मेरे साथ हो गया)। रात्रि हो जाने पर मेरे द्वारा वह बिल भली-भाँति बन्द कर दिया गया। लोग (हमारे) इस रहस्य (रन्ध्र) को नहीं जान सके। खो गयी हुई वस्तुओं, मुट्ठी में छिपी हुई वस्तुओं को तथा किस (व्यक्ति) को क्या चिन्ता है? इत्यादि बातों को बतला देने के

कारण तथा अन्य अनेक उपायों के प्रयोग से, मेरी उत्पत्ति दैवी कारण से हुई है ऐसा मानते हुए वे मेरी आज्ञा के विपरीत आचरण नहीं करते थे।

संस्कृत-व्याख्या—अपि च, **दुर्घटेति** = दुर्घटाया दुःसाध्यायाः, **कूटकोटेः** = कपटसमूहस्य, **पाटवेन** = नैपुण्येन, **प्रकटं** = व्यक्तं, **शाठ्यम्** = धूर्तत्वं यस्य तथाभूतो निष्ठुरो = निर्दयो योऽश्चको वसन्तभानुः स एव घटस्तस्य घट्टनं स्फोटनं तदेव आत्मा यस्य तम्। अश्मकेन्द्रस्य कपटचेष्टितं मयैवावगतमिति भावः। मां अस्य बालकस्य, **रक्षितारम्** = रक्षकम्, **मन्यध्वम्** = जानीहि, अवगच्छ, **रक्षानिर्वेशः** = रक्षणपारिश्रमिकम्, **च अस्य** = बालकस्य, **स्वसेयम्** = इयम्, **स्वसा** = भगिनी, **सुभ्रूः** = शोभना भ्रुवः यस्याः सा सुभ्रूः, **अभ्यनुज्ञाता** = दातुं स्वीकृता, **महाम्** = विश्रुताय, **आर्यया:** = देव्या विन्ध्यवासिन्या, **श्रुत्वा एतत्** = इदं निशम्य, **अहो** = आश्चर्यम्, **भोजवंशः भाग्यवान्** = भाग्यशाली वर्तते, **यस्य नाथः** = स्वामी, **त्वम्** = विश्रुतः, **आर्यादत्तो** = आर्यया विन्ध्यवासिन्या, **दत्तः** = प्रदत्तः, **इति** = एवम्, **अप्रीयन्त** = प्रीतिमापुः, **प्रकृतयः** = प्रजाः, **सा तु** = सा भूम श्वश्रूः तु, **वाचामगोचराम्** = वाण्या अविषयाम्, **हर्षवस्थाम्** = हर्षस्य प्रसन्नतायाः, अवस्थाम् = दशाम्, **अस्पृशत्** = प्राप्तवती, **तदहरेव** = तस्मिन्नेव दिने, **यथावत्** = यथाविधि, **मञ्जुवादिन्याः** = एतन्नाम्नीकन्यायाः, **पाणिपल्लवम्** = पल्लवसदृशकोमलं करम्, **अग्राहयत्** = गृहणं कारितवान्, **यामिन्याम्** = रात्रौ, **प्रपन्नायाम्** = प्राप्तायाम्, **सम्यक्** = पूर्णरूपेण, **बिलम्** = छिद्रम्, **प्रत्यपूरयम्** = पूरितवान, **अलब्धरन्ध्रश्च** = न लब्धं प्राप्तं रन्ध्रं छिद्रं येनः सः, एतादृशः लोकः, **नष्टमुष्टिचिन्तादिकथनैः** = नष्टकथनैः, नष्टस्य अदर्शने गतस्य, मुष्टौ करमध्ये चिन्ता नष्टानि वस्तूनि करे एव पश्यामीत्यादिकथनैः प्रकाशनैः, अभ्युपायेति अन्योपायनिर्वर्तितैः उपायान्तरेण नष्टमायिष्कृत्य स्वमुष्टावेव पश्यामीति स्वापतीति भावः, **दिव्यांशतामेव** = दिवि स्वर्गे भवो दिव्यो देव स्तस्यां शतां **समर्थयमानः**= अनुमन्यमानः, **मदाज्ञाम्** = विश्रुतस्य आज्ञाम्, **नात्यवर्तत** = न उदलङ्घयत्, उल्लंघनं न करोति स्म।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—**दुर्घट**—दुर्+घट्+खल्। **पाटव**—पटु+अण्। **शाठ्य**—शठ+ष्यञ्। **घट्टन**—घट्+ल्युट्। **रक्षितारम्**—रक्ष्+तृन्। **अभ्युनज्ञाता**—अभि+अनु+ज्ञा+क्त+टाप्। **रक्षनिर्वेशः**—रक्षायाः निर्वेशः इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **सुभ्रूः**—शोभना भ्रूवो यस्याः सा (बहुव्रीहि)। **हर्षावस्थाम्**—हर्षस्य अवस्था हर्षावस्था तां (षष्ठी तत्पुरुष)। **मञ्जुवादिनीपाणपल्लवम्**—पाणिः पल्लवमिव इति पाणिपल्लवम् (कर्मधारय), मञ्जुवादिन्याः पाणिपल्लवम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अलब्धरन्ध्रः**—न लब्धं रन्ध्रं येन सः (बहुव्रीहि)। **नष्टमुष्टिचिन्तादिकथनं**—नष्टं च मुष्टिश्च चिन्ता च इति **नष्टमुष्टिचिन्ताः** (द्वन्द्वः) ताः आदयो येषां तानि नष्टमुष्टिचिन्तादयः (बहुव्रीहि), तेषां **कथनानि**, तैः (षष्ठी तत्पुरुष)। **अभ्युपायान्तरप्रयुक्तैः**—अन्ये अभ्युपायाः इति **अभ्युपायान्तराणि**, तेषां प्रयुक्तानि (प्रयोग) इति अभ्युपायान्तरप्रयुक्तानि, तैः (षष्ठी **तत्पुरुष**)। **दिव्यांशताम्**—दिवि भवाः दिव्याः तेषां अंशः इति दिव्यांशः (षष्ठी तत्पुरुष), **तस्य भावा** दिव्यांशता ताम्।

(36) राजपुत्रस्यार्यापुत्र इति प्रभावहेतुः प्रसिद्धिरासीत्। तं च गुणवत्यहनि भद्राकृतमुपनाय्य पुरोहितेन पाठयन्नीतिं राजकार्याण्यन्वतिष्ठम्। अचिन्तयं च राज्यं नाम शक्तित्रयायत्तम्। शक्तयश्च मन्त्रप्रभावोत्साहाः परस्परानुगृहीताः कृत्येषु क्रमन्ते। मन्त्रण हि विनिश्चयोऽर्थानाम्, प्रभावेणः प्रारम्भः, उत्साहेन निर्वहणम्। अतः पञ्चाङ्गमन्त्रमूलो, द्विरूपप्रभावस्कन्धः चतुर्गुणोत्साहविटपः, द्विसप्ततिप्रकृतिपत्रः, षड्गुणकिसलयः शक्ति-सिद्धिपुष्पफलश्च, नयवनस्पतिर्नेतुरूपकरोति। स चायमनेकाधिकरणत्वादसहायेन दुरुपजीव्यः।

कठिन-शब्दार्थ—**गुणवति अहनि** = गुणों से युक्त दिन में, **भद्राकृतम्** = जिसका मुण्डन संस्कार करा दिया गया था, **उपनाय्य** = यज्ञोपवीत संस्कार करवाकर, **पाठयन्** = पढ़ाता हुआ, **शक्तित्रयायत्तम्** = तीन प्रकार की शक्तियों के अधीन, **परस्परानुगृहीताः** = एक-दूसरे से कृतज्ञ होकर, **क्रमन्ते** = समर्थ होती हैं, **विनिश्चयः** = दृढ़ संकल्प, **अर्थानाम्** = विषयों का, **निर्वहणम्** = निर्वाह करना, **पञ्चाङ्गमन्त्रमूलः** = पाँच अंगों वाला मन्त्र है मूल में जिसके, **विपत्तेश्चप्रतीकारः** = आने वाली विपत्तियों का निराकरण करना, **विटपः** = वृक्ष, **द्विसप्ततिः** = 72 प्रकार के, **प्रकृतिपत्रः** = प्रकृति रूपी पत्ते, **नयवनस्पति** = नीतिरूपी वृक्ष, **अनेकाधिकरणत्वात्** = अनेक भाँति का होने के कारण, **उपकरोति** = उपकार करता है, **दुरूपजीव्यः** = जिसका सहारा बड़ी कठिनाई से प्राप्त किया जा सकता है।

हिन्दी-अनुवाद—'यह आर्या विन्ध्यवासिनी देवी का पुत्र है' इस प्रभाव के कारण राजपुत्र की (अच्छी) प्रसिद्धि (हो गयी) थी। (हमने) शुभ दिन राजकुमार का मुण्डन संस्कार कराकर, पुरोहित द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार कराकर, राजनीति पढ़ाते हुए राजकार्यों को करना प्रारम्भ कर दिया (तत्पश्चात्) मैंने सोचा–"राज्य तीन शक्तियों के अधीन हुआ करता है और (वे) शक्तियाँ हैं–मन्त्रशक्ति, प्रभावशक्ति तथा उत्साहशक्ति, ये तीनों पारस्परिक सहयोग से कार्यों में सफल हुआ करती हैं।" मन्त्रशक्ति के द्वारा करने योग्य कार्यों (अर्थों) का निश्चय किया जाता है, प्रभावशक्ति द्वारा (उनका) प्रारम्भ तथा उत्साहशक्ति द्वारा (उनमें) सिद्धि प्राप्त हुआ करती है; अतः जिसका मूल पाँच अंगों वाला मन्त्र है, जिसका तना दो प्रकार का प्रभाव है, चार प्रकार के उत्साह ही जिसकी शाखाएँ हैं, बहत्तर प्रकार की प्रकृतियाँ ही जिसके पत्र हैं, जिसकी कोपलें (नवीन पत्ते) ही छः गण हैं (तथा) जिसके फूल तथा फल ही शक्तियाँ और सिद्धियाँ हैं। ऐसा नीतिरूपी वृक्ष नेता (राजा) का उपकार किया करता है। अनेक अधिकरणों (प्रकारों) वाला होने के कारण असहाय व्यक्ति के द्वारा इसका आश्रय बड़ी कठिनता से प्राप्त किया जा सकता है।

संस्कृत-व्याख्या—**राजपुत्रस्य** = राजकुमारस्य प्रसिद्धिः आसीत् यत् अयं, **आर्यापुत्रो** = देवीपुत्रो, भवानी पुत्रो वा अस्ति, तस्य प्रसिद्धेः अयमेव हेतुरासीत्, **तं च** = राजकुमारं च, **गुणवत्यहनि** = गुणवति शुभे, **अहनि** = दिवसे, **भद्राकृतम्** = मुण्डितम्, **उपनाय्य** = उपनयनसंस्कारं कारयित्वा, **पुरोहितेन पाठयन् नीतिम्** = राजनीतिम् अध्यापयन्, **राजकार्याणि** = राज्ञः कार्याणि इति राजकार्याणि, **अन्वतिष्ठम्** = अकरवम्,

अचिन्तयम् च = विचारं कृतवान् च—राज्यनाम, **शक्तित्रयायत्तम्** = शक्तीनां त्रयम् इति शक्तित्रयम्, तस्य आयत्तम् (अधीनम्) इति शक्तित्रयायत्तम् = शक्तित्रयाधीनम्। शक्तयश्च मन्त्रेति मन्त्रशक्तिः प्रभुशक्तिरुत्साहशक्तिश्चेति, **परस्परानुगृहीताः** = परस्परापेक्षिणः, **कृत्येषु** = विधेय वस्तुषु, **क्रमन्ते** = प्रभवन्ति, **मन्त्रेण हि** = मन्त्रशक्त्या हि, विनिश्चयो निर्णयः, **अर्थानाम्** = वस्तूनाम् अर्थात् मन्त्रशक्त्यां विधेयानां कार्याणाम् निश्चयः क्रियते, **प्रभावेण** = प्रभावशक्त्या, प्रारम्भः प्रवर्तनम् कार्येष्विति शेषः, **उत्साहेन** = उत्साहशक्त्या, **निर्वहणम्** = सिद्धिः कार्यस्य सफलतापूर्वकं सिद्धिः भवति अतः, **पञ्चाङ्गमन्त्रमूलः** = पञ्च अंगानि सहायादीनि यस्य यादृशो यो मन्त्रः स एवं मूलं यस्य सः, **द्विरूपप्रभावस्कन्धः** = द्वे रूपे यस्य व द्विरूपः द्विरूपश्चासौ प्रभावश्च इति द्विरूपप्रभावः, द्विरूपप्रभाव एव स्कन्धः यस्य स द्विरूपप्रभावस्कन्धः (एतादृशः नयवंनस्पतिः), **चतुर्गुणोत्साहविटपः** = चतुर्गुणोऽधिक उत्साहो विटपः शाखा यस्य सः, **द्विसप्ततिप्रकृतिपत्रः** = द्विसप्ततिः प्रकृतयः स्वाम्यमात्यादयः पत्राणि यस्य सः, **षड्गुणकिसलयः** = षाड्गुण्यं सन्धि विग्रहादि किसलयं पल्लवं यस्य सः, **शक्तिसिद्धिपुष्पफलश्च** = शक्तिर्बलं सिद्धिः कार्यसिद्धिश्च ते पुष्पं फलश्च यस्य सः। एतत्सर्वं नयवनस्पतिविशेषणम्, **नयवनस्पतिः** = नीतिवृक्षःनेतुः नायकस्य, **उपकरोति** = उपकारं करोति, **सः** = नीतिवृक्षः, **अनेकाधिकरणत्वात्** = नानाश्रयत्वात् अनेकविधत्वादिति यावत्, **असहायेन** = सहायरहितेन पुरुषेण, **दुरूपजीव्यः** = कष्टेन [illegible]क्षणीयः।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—प्रभावहेतुः—प्रभावः एव हेतु यस्याः सा प्रभावहेतुः (बहुव्रीहि)। **गुणवति**—गुणा विद्यन्ते अस्मिन् इति गुणवत् अस्मिन्। **राजकार्याणि**—राज्ञः कार्याणि इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **शक्तित्रयात्तम्**—शक्तिनां त्रयम् इति शक्तित्रयम् तस्य आयत्तम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **मन्त्रप्रभावोत्साहाः**—मन्त्रश्च प्रभावश्च उत्साहश्च मन्त्रप्रभावोत्साहां (द्वन्द्व)। **पञ्चाङ्गमन्त्रमूलः**—पञ्च अङ्गानि यस्य सः पञ्चाङ्ग (बहुव्रीहि)। **पञ्चाङ्गश्चासौ**—मन्त्रश्च इति पञ्चाङ्गमन्त्रः (कर्मधारय), पञ्चाङ्गमन्त्रः मूलं यस्य (बहुव्रीहि)। अथवा पञ्च अङ्गानि सहायादीनि यस्य तादृशो यो मन्त्रः, स एव मूल यस्य सः। **द्विरूपप्रभावस्कन्ध**—द्वे रूपे यस्य स द्विरूपः (बहुव्रीहि) द्विरूपश्चासौ प्रभावश्च द्विरूपप्रभावः (कर्मधारय), द्विरूपप्रभाव एव स्कन्ध यस्य सः (बहुव्रीहि)। **चतुर्गुणोत्साहविटपः**—चत्वारो गुणाः यस्य स चतुर्गुणः (बहुव्रीहि) चतुर्गुणश्चासौ उत्साहश्च इति चतुर्गुणोत्साहः (कर्मधारय), चतुर्गुणोत्साह एव विटपाः यस्यः सः (बहुव्रीहि)। **द्विसप्ततिप्रकृतिपत्रः**—द्विसप्तिः प्रकृतयः एव पत्राणि यस्यः सः (बहुव्रीहि)। **षड्गुणकिसलयः**—षडगुणाः एव किसलयानि यस्य सः (बहुव्रीहि)। **शक्तिसिद्धिपुष्पफलः**—शक्तिसिद्धय एव पुष्पाणि फलानि च यस्य (बहुव्रीहि)। **नयवनस्पतिः**—नयः एव वनस्पति इति। **अनेकाधिकरणत्वात्**—अनेकानि अधिकरणानि यस्य स अनेकाधिकरणः (बहुव्रीहि) तस्य भावः अनेकाधिकरणत्वम् तस्मात्। **असहायेन**—अविद्यमानः सहायः यस्य असहायः ते (बहुव्रीहिं)। **दुरूपजीव्य**—दुःखेन उपजीवितुंशक्यः—दुरूपजीव्य। **प्रसिद्धिः**—प्र+सिध्+क्तिन्। **गुणवति**—गुण+मतुप्।

भद्राकृतम्—भद्रा+कृ+क्त। **उपनाय्य**—उप+नी+णिच्+ल्यप्। **पाठयन्**—पठ्+णिच्+शतृ। **विनिश्चयः**—वि+निस्+चि+अच्। **निर्वहणम्**—निर्+वह्+ल्युट्। **दुरूपजीव्यः**—दुर्+उप+जीव्+यत्।

विशेष—(i) **पञ्चाङ्गमन्त्रमूलः**—ऐसा नीतिरूपीवृक्ष जिसकी जड़ें हैं, पाँच अंगों वाला मन्त्र। मन्त्र के पाँच अंग निम्नलिखित हैं—

सहायाः साधनोपायाः विभागो देशकालयोः।
विपत्तेश्च प्रतीकारः सिद्धिपञ्चाङ्गमुच्यते।।

1. **सहायाः**—सहायक, 2. **साधनोपायाः**—अभीष्ट मनोरथ की प्राप्ति के साधन। 3. **देश विभाग तथा काल विभाग**—स्थान का विभाग तथा समय का विभाग, 4. **विपत्तेः प्रतीकारः**—आने वाली विपत्ति को हटाना या दूर करना, 5. **सिद्धि**—अभीष्ट कार्य में सफलता।

(ii) द्विरूपप्रभावस्कन्ध—प्रभाव दो प्रकार का होता है **1. कोशज**—कोश से उत्पन्न अर्थात् प्रचुर मात्रा में धन का होना, **2. दण्डज**—दण्डविधान से उत्पन्न। यदि कभी कोई भी व्यक्ति बदमाशी करे तो उसे इतना दण्ड दिया जाये कि देखने वाले लोग भयभीत हो जायें तथा उनके ऊपर आतंक छा जाये।

(iii) षड्गुणकिसलयः—छः गुण ही जिसकी कोंपलें हैं। छः गुण निम्नलिखित माने गये हैं—

"सन्धिर्नाविग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः।
षड्गुणाः शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः"।।

1. सन्धि, 2. विग्रह (लड़ाई-झगड़ा), 3. यान (चढ़ाई करना), 4. आसनम्—घेरा डालकर अवसर की तलाश में बैठे रहना, 5. द्वैधम्—दुडगी चाल चलना, 6. आश्रयः—किसी बलवान् राजा का सहारा लेकर शत्रु पर चढ़ाई करना।

(37) यस्त्वयमार्यकेतुर्नाम मित्रवर्ममन्त्री सकोशलाभिजनत्वात्कुमारमातृपक्षो मन्त्रिगुणैश्च युक्तः, तन्मतिमवमत्यैव ध्वस्तो मित्रवर्मा, चेल्लब्धः पेशलम् इति अथ नालीजङ्घं रहस्यशिक्षम्—"तात, आर्यमार्यकेतुमेकान्ते ब्रूहि—'कोन्वेष मायापुरुषो य इमां राजलक्ष्मीमनुभवति। स चायमस्मद्बालो भुजङ्गेनामुना परिगृहीतः। किमुद्गीर्येत् वा इति। स यद्वदिष्यति तदस्मि बोध्यः" इति।

कठिन-शब्दार्थ—**कोशलाभिजनत्वात्** = कोशल वंश का होने से, **कुमारमातृपक्षाः** = राजकुमार की माता के पक्ष की ओर का, **तन्मतम्** = उसकी सम्मति को, **अवमत्य** = तिरस्कृत कर, **ध्वस्तः** = नष्ट कर दिया, **पेशलम्** = कोमल, उत्तम, **उद्गीर्येत्** = छोड़ दिया जाये, **ग्रस्यते वा** = अथवा खा लिया जाये, **बोध्यः** = सूचित किया जाने योग्य।

हिन्दी-अनुवाद—जो यह आर्यकेतु नाम का मित्रवर्मा का मन्त्री है वह कौशलवंश का होने के कारण राजकुमार के मातृपक्ष का है तथा मन्त्री के गुणों से युक्त है, उसकी सम्मति की अवहेलना करने के ही कारण मित्रवर्मा नाश को प्राप्त हुआ है। यदि वह हमारे अधीन हो जाये तब तो बहुत ही अच्छा हो ऐसा सोचकर एकान्त में मैंने नालीजङ्घ से सिखलाया–"हे तात! आप आर्य आर्यकेतु को एकान्त में ले जाकर कहें यह मायावी (ऐन्द्रजालिक–जादूगर) पुरुष कौन है? जो (राजकुमार को अपने वश में करके) राजलक्ष्मी का उपयोग कर रहा है, सर्प सदृश इसके द्वारा हमारा राजकुमार पकड़ लिया गया है, न जाने (यह कुमार को) छोड़ देगा अथवा खा लेगा। वह जो कुछ कहेगा उससे मुझे अवगत कराना।"

संस्कृत-व्याख्या—यः तु अयम् = आर्यकेतुर्नाम मित्रवर्मणः, **मन्त्री** = अमात्यः (वर्तते), **सः कोशलाभिजनत्वात्** = कोशलवंशोत्पन्नत्वात् कोशलदेशीयत्वाद् वा, **कुमारस्य** = राजपुत्रस्य, मातृपक्षस्तत्पक्षीयः, **मन्त्रिगुणैः** = अमात्युगुणैः, **च युक्तः** = सहितः, वर्तते, **तन्मतिम्** = तस्य मतिम्, **अवमत्य** = अनादृत्य, **एव ध्वस्तो** = विनष्टः मित्रवर्मा, सः चेत् लब्धः, **सः** = आर्यकेतुः, **चेत्** = यदि, लब्धः प्राप्तोऽस्मदधीनः स्यादिति शेषः, **तदा पेशलम्** = शोभनम्, अत्युत्तमम्। इति विचार्य अहं नालीजङ्घम्, **रहसि** = एकान्ते, **अशिक्षयम्** = शिक्षितवान्, हे तात!, **आर्यम्** = आर्यकेतुम्, **एकान्ते** = रहसि, **ब्रूहि** = कथय, को नु एष अयम् मायापुरुषो ऐन्द्रजालिकः य इमाम्, **राज्यलक्ष्मीम्** = राज्यस्य लक्ष्मीः इति राज्यलक्ष्मीः ताम्, **अनुभवति** = उपभुङ्क्ते, सः च, **अस्मद् बालो** = अस्माकं बालः, **भुजङ्गेन** = सर्पेण, **अमुना** = विश्रुतेन, **परिगृहीतः** = परिग्रहणं कृतः, **किम् उद्‌गीर्येत** = त्यजेत, **ग्रस्यते वा** = भक्ष्येत वा, सः यत्, **वदिष्यति** = कथयिष्यति, **तदस्मि बोध्यः** = तद् अहं विज्ञाप्यः अस्मि।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—कुमारमातृपक्षः—कुमारस्य माता—कुमारमाता, तस्याः पक्षः इति कुमारमातृपक्षः (षष्ठी तत्पुरुष)। **मन्त्रिगुणैः**—मन्त्रिणः गुणाः इति मन्त्रिगुणः तैः (षष्ठी तत्पुरुष)। **तन्मतम्**—तस्यमतम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **राजलक्ष्मीम्**—राज्ञः+लक्ष्मी—राजलक्ष्मी ताम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **राज्यलक्ष्मी**—राज्‌यस्य लक्ष्मी—राज्यलक्ष्मी (षष्ठी तत्पुरुष)। **अवमत्य**—अव+मन्+ल्यप्। **ध्वस्तः**—ध्वंस्+क्त। **बोध्यः**—बुध्+णिच्+यत्।

(38) सोऽन्यदैवं मामावेदयत्–'मुहुरूपास्य प्राभृतैः, प्रवर्त्य चित्राः कथा, संवाह्य पाणिपादमतिविस्रम्भदत्तक्षणं तमप्राक्षं त्वदुपदिष्टेन नयेन'। सोऽप्येवमकथयत्—"भद्र मैवं वादीः। अभिजनस्य शुद्धिदर्शनम्, असाधारणं बुद्धिनैपुण्यम्, अतिमानुषं प्राणबलम्, अपरिमाणमौदार्यम् अत्याश्चर्यमस्त्रकौशलम्, अनल्पशिल्पज्ञानम्, अनुग्रहार्द्रचेतः, तेजश्चाप्यविषह्यमभ्यमित्राणाम्, इत्यस्मिन्नेव सन्निपातिनो गुणाः, येऽन्यत्रैकैकशोऽपि दुर्लभाः। द्विषतामेष चिरविल्वद्रुमः, प्रह्वाणां तु चन्दनतरुः, तमुद्‌धृत्य नीतिज्ञम्मन्यमश्मकमिमं च राजपुत्रं पित्र्ये पदे प्रतिष्ठतमेव, विद्धि नात्र सशयः कार्यः" इति।

कठिन-शब्दार्थ—**अन्यदा** = दूसरे दिन, **आवेदयेत्** = सूचित किया, **मुहुः** = बार-बार, **उपास्य** = सेवा करके, **प्राभृतैः** = भेंटों के द्वारा, **प्रवर्त्य** = आरम्भ करके, **चित्राः** = विचित्र, **संवाह्य** = दबाकर, **अप्राक्षम्** = पूछा, **त्वदुपदिष्टेन** = तुम्हारे द्वारा बतलाये गये हुए, **शुद्धिदर्शनम्** = पवित्रता का दिखलाई पड़ना, **नैपुण्यम्** = निपुणता, **अतिमानुषम्** = अलौकिक, **औदार्यम्** = उदारता, **अनल्पम्** = अत्यधिक, **शिल्पज्ञानम्** = कलाओं का ज्ञान, **अनुग्रहार्द्रम्** = दया से गीला, **अविषह्यम्** = न सहा जा सकने योग्य, **अमित्र** = शत्रु, **एकैकशः अपि** = एक-एक करके भी, **द्विषताम्** = शत्रुओं के, **उद्धृत्य** = विनष्ट कर उखाड़ कर, **नीतिज्ञम्मन्यम्** = स्वयं अपने आपको नीतिशास्त्र का महान् ज्ञाता मानने वाला, **विद्धि** = जानो, समझो।

हिन्दी-अनुवाद—दूसरे दिन उस (नालीजङ्घ) ने (आकर) मुझे इस प्रकार कहा—बार-बार भेंटों (उपहार) के द्वारा (उसकी) सेवा कर (अर्थात् उसे प्रसन्न कर) विचित्र कथाओं को कहकर, (उसके) हाथ-पैरों को दबाकर, जब मुझे अत्यन्त विश्वास के साथ अवसर प्रदान किया गया तब मैंने उससे आप द्वारा बतलाये गये राजनीतिक प्रकार से पूछा—हे कल्याणकारिन्! (आप) ऐसा मत कहिये। वंश की पवित्रता, बुद्धि की असाधारण निपुणता, अलौकिक शारीरिक बल (अथवा साहस), अत्यधिक उदारता अत्यन्त आश्चर्योत्पादक, अस्त्रों का कौशल अधिक मात्रा में विद्यमान शिल्प (कला सम्बन्धी) ज्ञान, करुणा से आर्द्र (परिपूर्ण) चित्त, शत्रुओं पर प्रकट होने वाला असह्य प्रताप, ये सभी गुण जिनका अन्य लोगों में एक-एक करके (पृथक्-पृथक् रूप में) पाया जाना भी कठिन है, इस (विश्रुत) में एक साथ ही विद्यमान हैं। शत्रुओं के लिए यह (विश्रुत) कण्टकाकीर्ण करञ्ज के सदृश है, नम्रों (उदारचेता व्यक्तियों) के लिए वह चन्दन के वृक्ष के समान है। नीतिज्ञानाभिमानी उस अश्मकेन्द्र (वसन्तभानु) को (इसी के द्वारा) उखाड़ कर (नष्ट करके) इस राजपुत्र को (उसके) पिता के स्थान पर बिठा दिया गया (प्रतिष्ठित) हुआ ही जानो। इस बारे में सन्देह नहीं किया जाना चाहिए।

संस्कृत-व्याख्या—**सो** = नालीजङ्घः, **अन्यदा** = अन्यस्मिन् समये, अन्येद्यु वा (आगत्य) माम् एवम् इत्थम् **आवेदयत्** = व्यज्ञापयत्, **मुहुः** = पुनः-पुनः, **उपास्य** = सेवित्वा, **प्राभृतैः** = उपायनैः, **चित्राः** = अद्भुताः, **प्रवर्त्य** = आरभ्य, कथाः, **संवाह्य** = —, **पाणिपादम्** = हस्तपादम्, **अतिविस्रम्भदत्तक्षणः** = अतिविश्रम्भे दत्तः क्षणः (क्षणं वा) येन सः अतमिविश्रम्भदत्तक्षणः तम् अतिविश्रम्भदत्तक्षणम् तम् आर्यकेतुं, **अप्राक्षम्** = अहम् अपृच्छम्, **त्वदुपदिष्टेन** = भवता पिक्षितेन, **नयेन** = नीतिमार्गेण, सोऽपि, **एवम्** = इत्थम्, **अकथयत्** = कथयामास कथितवान् वा—हे भद्र!, **मैवं वादीः** = भवान् इत्थं मा कथयतु, **अभिजनस्य** = कुलस्य, **शुद्धिदर्शनम्** = वैमल्यदर्शनम्, **असाधरणम्** = अतिमहत्, **बुद्धिनैपुण्यम्** = बुद्धिचातुर्यम्, **अपरिमाणमौदार्यम्** = परिमाणरहितं औदार्यम्, **अत्याश्चर्यमस्त्रकौशलम्** = अत्यन्तम् आश्चर्यजनकम्, **अस्त्रकौशलम्** = अस्त्रनैपुण्यम्, **अनल्पं** = अतिमहत्, **शिल्पज्ञानम्** = कलाज्ञानम्, **अनुग्रहार्द्र चेतः** = दयया स्निग्धम्, **चेतः** = हृदयम्, **तेजः च** = प्रतापश्च, **अविषह्यम्** = सोढुमशक्यम्,

अभ्यमित्राणम् = शत्रून् प्रति प्रकटितमिति तेजो विशेषम् इति, **अस्मिन् एव** = विश्रुते एव, **संनिपातिनः** = एकत्रावस्थिताः गुणाः, ये गुणा अन्यत्र अपरपुरुषे एकैकश इति सम्भूयापस्थानं तु दूरे प्रत्येकमेकोऽपि दुर्लभः, **द्विषतामेव** = शत्रूणामेव, **चिरविल्वद्रुमः** = विषवृक्षः, **प्रहाणा** = नम्राणाम् तु, **चन्दनतरुः** = चन्दनवृक्षः, **तमुद्धृत्य** = तम् नीतिज्ञम्मन्यम्, अश्मकेन्द्रम्, **उद्धृत्य** = विनाश्य, इमं च, **राजपुत्रम्** = विश्रुतम्, **पित्र्ये पदे** = जनकस्थाने, **प्रतिष्ठितमेव** = उपविष्टमेव, **विद्धि** = जानीहि, **नात्र** = अस्मिन्, विषये न, **संशयः कार्यः** = सन्देहः कर्त्तव्यः।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी—उपास्य—उप+अस्+ल्यप्। **प्रवर्त्य**—प्र+वृत्+णिच्+ल्यप्। **संवाह्य**—सम्+वह्+णिच्+ल्यप्। **मानुषम्**—मनुष्य+अण्। **औदार्यम्**—उदार+ष्यञ्। **कौशलम्**—कुशल+अण्। **अविषह्यम्**—वि+सह+यत्। **अभ्यमित्राणाम्**—अभि+अमित्र+ख (ईन)। **संनिपातिनः**—सम्+नि+पत्+णिनि। **एकैकशः**—एक+एक+शस्। **द्विषताम्**—द्विष्+शतृ। **नीतिज्ञः**—नीति+ज्ञा+क। यहाँ 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' सूत्र से 'क' प्रत्यय हुआ है। **नीतिज्ञमन्यम्**—नतिज्ञ+मन्+ख। यहाँ 'आत्ममाने खश्च' सूत्र से 'अपने को समझने' अर्थ में मन् धातु से 'ख' प्रत्यय होता है। **पित्र्ये**—पितृ+यत्। **प्रतिष्ठितम्**—प्रति+स्था+क्त। **पाणिपादम्**—पाणी च पादौ च इति एतेषां समाहारः पाणिपादम् (द्वन्द्व)। **अतिविस्रम्भवत्तक्षणः**—अतिविस्रम्भे दत्तः क्षणः येन सः अतिविस्रम्भदत्तक्षणः (बहुव्रीहि) तम्। **त्वदुपदिष्टेन**—त्वया उपदिष्टः—त्वदुपदिष्टः तेन (तृतीया तत्पुरुष)। **अतिमानुषम्**—अतिक्रान्तं मानुषम् इति (तत्पुरुष)। **प्राणबलम्**—प्राणानां बलम्—प्राणबलम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अपरिमाणम्**—अविद्यमानं परिमाणं यस्य तत् (बहुव्रीहि)। **औदार्यम्**—उदारस्य भावः औदार्यम्। **अस्त्रकौशलम्**—अस्त्रेषु कौशलम् इति (सप्तमी तत्पुरुष)। **कुशलस्य**—भावः कौशलम्। **शिल्पज्ञानम्**—शिल्पानां ज्ञानम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अनुग्रहार्द्रम्**—अनुग्रहेण आर्द्रम् इति (तृतीया तत्पुरुष)। **नीतिज्ञम्मन्यम्**—आत्मानं नीतिज्ञं मन्यते इति नीतिज्ञम्मन्यः, तम्। **नीतिज्ञः**—नीति जानातीति।

(39) तच्चापि श्रुत्वा भूयो भूयश्चोपधाभिर्विशोध्य तं मे मतिसहायमकरवम्। तत्सखश्च सत्यशौचयुक्तानमात्यान्विविधव्यञ्जनांश्च गूढपुरुषानुदपादयम्। तेभ्यश्चोपलभ्य लुब्धसमृद्धमत्युत्सिक्तमविधेयप्रायं च प्रकृतिमण्डलमलुब्धतामभिख्यापयन्, धार्मिकत्वमुद्भावयन्, नास्तिकान्कदर्थयन्, कण्टकान्विशोधयन्, अमित्रोपधीरपघ्नन्, चातुर्वर्ण्यं च स्वधर्मकर्मसु स्थापयन्, अभिसमाहरेयमर्थान्। अर्थमूला हि दण्डविशिष्टकर्मारम्भाः। न चान्यदस्ति पापिष्ठं तत्र दौर्बल्यादित्याकलय्य योगानन्वतिष्ठम्।

कठिन-शब्दार्थ—उपधाभिः = परीक्षा सम्बन्धी उपायों द्वारा, **विशोध्य** = सन्तुष्ट करके, **मतिसहायम्** = विचारों में सहायता करने वाला, **तत्सखः** = उसका सहायक, **सत्यशौचयुक्तान्** = सत्य तथा पवित्र आचरण से युक्त, **उद्पादयम्** = उत्पन्न किया, **उपलभ्य** = प्राप्त कर, **उत्सिक्तम्** = अहंकार से युक्त, **लुब्धसमृद्धम्** = लोभी और धनी, **अलुब्धताम्** = लोभ रहितता, **अभिख्यापयन्** = प्रकट करता हुआ, **कदर्थयन्** = निन्दा

करते हुए, **अमित्रोपधीः** = शत्रुओं के छलों अथवा कपटों को, **अर्थमूला** = धन के अधीन, **आकलय्य** = सोच कर विचार कर, **योगान्** = नाना प्रकार के उपायों को, **अन्वतिष्ठम्** = उसी प्रकार से आचरण मैंने किया।

हिन्दी-अनुवाद—उस बात को सुनकर, बार-बार अनेक भाँति के उपायों द्वारा (उसकी) परीक्षा कर, उस (आर्यकेतु) को मैंने अपना मतिसहायक (मेरे बौद्धिक कार्यों में सहायता करने वाला) बना लिया। (तत्पश्चात्) उसके साथ सत्य आचरण युक्त तथा ईमानदार मन्त्रियों को तथा नाना प्रकार के वेशों को (समय-समय पर) धारण करने वाले गुप्तचरों को उत्पन्न किया (अर्थात् उनका एक विभाग ही पृथक् रूप से बना दिया)। उन (गुप्तचरों) के द्वारा लोभी तथा समृद्ध (धनवान्), अति अभिमानी, प्रायः वश में न आने वाले प्रजा के समूहों का पता लगाकर, अपनी लोभ शून्यता (लोभ रहितता) की घोषणा करता हुआ, धार्मिकता की वृद्धि करता हुआ, नास्तिकों की निन्दा करता हुआ, काँटों अर्थात् राज्य में विघ्न बाधाएँ उपस्थित करने वालों को नष्ट करता हुआ, शत्रुओं के छलों अथवा कपटपूर्ण कार्यों को निष्फल करता हुआ, चारों वर्णों को अपने अपने धर्मों (करणीय कर्मों) में स्थापित करता हुआ, मैं धन (राज्य से कर) एकत्रित करूँ (ऐसा मैंने निश्चय किया), क्योंकि दण्ड (विशिष्ट कर्मों के) आरम्भ करने का ही आधार धन ही है। उस (धन के विषय) में दुर्बलता से बढ़कर और कोई दूसरा पाप नहीं है। ऐसा विचार कर मैं (धनोपार्जन के लिए) नाना प्रकार के उपायों को करने लगा।

संस्कृत-व्याख्या—**तच्चापि** = तत् चापि वार्तां श्रुत्वा निशम्य, **भूयो भूयः** = पुनः पुनः, **चोपधाभिः** = परीक्षोपायैः, **विशोध्य** = परीक्ष्य, **तं** = आर्यकेतुम्, **मे** = स्वकीयस्य, **मतिसहायम्** = बुद्धिसहायम्, **अकरवम्** = कृतवान्, **तत्सखश्च** = तत्सहायकः, **सत्यशौचयुक्तान्** = सत्ययुक्तान् पुरुषान् तया शौचयुक्तान् पुरुषान्, **अमात्यान्** = मन्त्रिणेः, **विविधव्यञ्जनान् च** = नानावेषधारिणः (गूढपुरुषान्), **उदपादयम्** = अजनयम्, **तेभ्यः** = गूढपुरुषेभ्यः, **उपलभ्य** = ज्ञात्वा, **लुब्धसमृद्धम्** = लोभोपहतं धनयुक्तं च, **अत्युत्सिक्तम्** = अत्यन्तम् अभिमानयुक्तम्, **अविधेयप्रायं प्रकृतिमण्डलम्** = प्रायेणावशीभूतम् प्रजामण्डलम् प्रजासमूहं वा, **अनुलब्धताम्** = लोभराहित्यम्, **अभिख्यापयन्** = घोषयन्, प्रकटीकुर्वन्, **धार्मिकत्वम्** = धार्मिकतयाः, **उद्भावयन्** = वर्धयन्, **नास्तिकान्** = परमात्मनि अविश्वासकारिणः, **कदर्थयन्** = पीडयन्, **कण्टकान्** = राज्ये विघ्नकरान्, उपद्रवकरान् वा शत्रून् इत्यर्थः, **विशोधयन्** = उन्मूलयन्, **अमित्रोपधीः** = शत्रुकपटम्, **अपघ्नन्** = विफलयन्, **चातुर्वर्ण्यम् च** = वर्णचतुष्टयम् च, **स्वधर्मकर्मसु** = **धर्मश्च** कर्माणि च इति धर्मकर्माणि, स्वस्य धर्मकर्माणि इति स्वधर्मकर्माणि तेषु **स्वधर्मकर्मसु** = स्वधर्मविहितकार्येषु, **स्थापयन्** = स्थापितं कुर्वन्, **अभिसमाहरेयम्** = उपार्जयेयम्, **अर्थान्** = धनानि, **अर्थमूला** = धनाधीनाः, **हि** = निश्चयेन, **दण्डविशिष्टकर्मारम्भाः** = दण्डानां दण्डसाध्यानां विशिष्टानां च कर्मणामारभ्या उद्योगा, **तत्र** = अर्थविषये अर्थोपार्जने वा, **दौर्बल्यात्** = निर्बलत्वात्, अन्यद् परं पापिष्ठं पापं दोषो

वा नास्तीति, **आकलय्य** = विचार्य, आकलनं कृत्वा, **योगान्** = विविधोपायान्, **अन्वतिष्ठम्** = अकरवम्, आचरम्।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी— मतिसहायम्—मतौ सहाय: इति मतिसहाय: तम् (सप्तमी तत्पुरुष)। **मत्सख:**—तस्यसखा—तत्सख: (षष्ठी तत्पुरुष)। **सत्यशौचयुक्तान्**—सत्यं च शौचं इति सत्यशौचे (द्वन्द्व) ताभ्यां युक्ता: इति सत्यशौचयुक्ता: तान् (तृतीया तत्पुरुष)। **विविधव्यञ्जनान्**—विविधानि व्यञ्जनानि (वस्त्र) येषां ते विविधव्यंजना: तान् (बहुव्रीहि)। **लुब्धसमृद्धम्**—क्षुब्ध च तत् समृद्धं च इति (कर्मधारय)। **अविधेयप्रायम्**—न -विधेयम् इति अविधेयम्, प्रायेण अविधेयम् इति अविधेप्रायम्। **प्रकृतिमण्डलम्**—प्रकृतीनां मण्डलम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अलुब्धताम्**—लुब्धस्य भाव लुब्धता, न लुब्धता इति अलुब्धता ताम्। **अमित्रोपधी:**—अमित्राणाम् उपधय:—अमित्रोपधय: ता अमित्रोपधि: (षष्ठी तत्पुरुष)। **चातुर्वर्ण्यम्**—चत्वार: वर्णा: इति चतुर्वर्णा: एव चातुर्वर्ण्यम्। **स्वधर्मकर्मसु**—धर्मश्च कर्माणि च इति धर्मकर्माणि (द्वन्द्व), स्वस्य धर्मकर्माणि—स्वधर्मकर्माणि तेषु (षष्ठी तत्पुरुष), अथवा धर्मयुक्तानि कर्माणि धर्मकर्माणि, स्वस्य धर्मकर्माणि स्वधर्मकर्माणि तेषु। **अर्थमूला:**—अर्थ एव मूलं येषां ते (बहुव्रीहि)। **दण्डविशिष्टकर्मारम्भा**—दण्डेन विशिष्टानि इति दण्डविशिष्टानि दण्डविशिष्टानि च तानि कर्माणि इति दण्डविशिष्टकर्माणि (कर्मधारय) तेषां आरम्भ: इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **दौर्बल्यात्**—दुर्बलस्य भाव: दौर्बल्यं तस्मात्। **पापिष्ठम्**—अतिशयेन पापमिति पापिष्ठम्। **विशोध्य**—वि+शुध्+ल्यप्। **उपलभ्य**—उप+लभ्+ल्यप्। **अभिख्यापन्**—अभि+ख्या+णिच्+शतृ। **उद्भावयन्**—उत्+भू+णिच्+शतृ। **विशोधयन्**—वि+शुद्ध+णिच्+शतृ। **अपघ्नन्**—अप+हन्+शतृ। **चातुर्वर्ण्यम्**—चतुर्वर्ण+ष्यञ्। **पापिष्ठम्**—पाप+इष्टन्। **आकलय्य**—आ+कल्+ल्यप्। **अन्वतिष्ठम्**—अनु+स्था+लङ् (उत्तमपुरुष एकवचन का रूप)।

इति विश्रुतचरितम् व्याख्या समाप्ता